खजुराहो की यात्रा

श्याम मोहन अस्थाना



खजुराहो की यात्रा
श्याम मोहन अस्थाना

खजुराहो की यक्षिणी

नाटक क्रम

5 खजुराहो की यक्षिणी

39 एक और अहल्या

59 तुम्हारे सुनहरे कल के लिए

77 आधा दिन : आधी रात

97 महोबा हाउस

खजुराहो की यक्षिणी

(एकांकी संग्रह)

श्याम मोहन अस्थाना

राधारानी प्रकाशन

दिल्ली-110032

ISBN 81–88398-09-8

मूल्य : 150 रुपये

© श्याम मोहन अस्थाना

प्रथम संस्करण : 2004

प्रकाशक

राधारानी प्रकाशन

29/61, गली नं॰ 11, विश्वास नगर,

दिल्ली-110032

फोन : 22301432

मुद्रक : शेफाली लेज़र टाइपसैटिंग द्वारा

आर. के. आफसेट, दिल्ली-110032

KHAJURAHO KI YAKSHINI By Shyam Mohan Asthana

Price : Rs. 150.00

खजुराहो की यक्षिणी

पात्र

मगन देसाई—होटल, खजुराहो का मालिक	30 साल
जयंत—मूर्तिकार	28 साल
जेनी कारेल—फ्रेंच लड़की	22 साल
कौमुदी—आदिवासी लड़की	20 साल
खजुराहो गाइड	40 साल
गाँव का मुखिया	50 साल
कवि चंद्रकांत	32 साल

कथासार

खजुराहो की विश्व प्रसिद्ध मंदिर-शृंखला—विशेषकर उसकी मिथुन मूर्तियाँ—इन मूर्तियों का रहस्य क्या है?

यह एक विचार नाटक है।

गाइड : सच यह है कि भारतीय परम्परा ने काम-भावना को जीवन के सत्य के रूप में स्वीकार किया है। जेनी (**फ्रेंच पत्रकार**) अगर यह सच है तो इन मूर्तियों को मंदिर की दीवारों पर नहीं, गर्भगृह में होना चाहिए।

जयंत : मिस जेनी, खजुराहो के मूर्तिकारों ने अपनी कला का दुरुपयोग किया है।

इन विरोधी व्याख्याओं के बीच खजुराहो का सच क्या है?

फिर यह कौमुदी कौन है जो सभी विवादों से परे रहकर भी सामाजिक विकृतियों का शिकार बनती है।

मूल सवाल यह है कि खजुराहो की मिथुन मूर्तियों में कितना सत्य, कितना शिव, कितना सुन्दर तत्त्व है।

—श्याम मोहन अस्थाना

प्रथम दृश्य

[**स्थान**–खजुराहो का कंदरीय मंदिर। **समय**–सुबह 8 बजे। एक हलका-सा कलरव।]

गाइड : लेडिज़ ऐंड जंटिल मैन, यही है खजुराहो का सुप्रसिद्ध कंदरीय मंदिर! इसे भारतीय स्थापत्य की चरम परिणति कहा जा सकता है। जरा मंदिर की बाहरी भित्ति की मूर्तियों को देखिये–पूरे विश्व की कला में इनका कोई जवाब नहीं है।

एक आवाज़ : ओ व्हाट ए ब्यूटी! सिम्पली सुपर्ब!

दूसरी आवाज़ : जस्ट सब्लाइम!

गाइड : और वह देखिये, मंदिर पर मिथुन मूर्तियों का पैनल! इन्हें देखने के लिए विश्व के कोने-कोने से यात्री आते हैं।

लड़की : ओ माई गॉड! व्हाट ए सेक्स ब्लो-अप!

दूसरी लड़की : बट दे आर सो ब्यूटीफुल। जस्ट ग्रैंड!

गाइड : जरा इन नारी मूर्तियों को देखिये! एक-एक देह जैसे साँचे में ढली हुई है। मेरा खयाल है कि इन्हें वर्ल्ड ब्यूटी कंटेस्ट में एंट्री मिलनी चाहिए।

एक लड़की : माई गुडनेस! दे विल बैग आल द प्राइज़ेज!

[सब हँसते हैं]

गाइड : इन अप्सराओं के चेहरों पर एक मुस्कुराहट है। आप सभी के लिए एक-एक मुस्कुराहट!

जेनी-मिस्टर : गाइड! वन क्वेश्चन!

गाइड : मे आई नो योर नेम, मिस?

जेनी : जेनी कॉरेल ऑफ फ्रांस! पेरिस की एक नर्तकी!

गाइड : मिस जेनी, आप हिन्दी जानती हैं।

जेनी : हाँ, मैंने पेरिस विश्वविद्यालय से हिन्दी और संस्कृत का

डिप्लोमा लिया है।

गाइड : ओ कांग्रेचुलेशंस, मिस जेनी! हाँ, आपका सवाल क्या है?

जेनी : मैं इन मिथुन मूर्तियों का अर्थ जानना चाहती हूँ।

गाइड : मैं आपकी बात नहीं समझा!

जेनी : एक पवित्र मंदिर के ऊपर इन मूर्तियों का क्या औचित्य है?

गाइड : हाँ, यह एक स्वाभाविक सवाल है। यूरोप के यात्री अक्सर यह सवाल करते हैं।

जेनी : यूरोप सेक्स के मामले में बहुत कुछ मुक्त हो चुका है। पर इतना खुला सेक्स वहाँ भी लोगों को चौंका देगा।

गाइड : हाँ, मिस जेनी! खजुराहो का सौन्दर्य अक्सर लोगों को एक शॉक देता है।

जेनी : मैंने इस देश के बारे में जो कुछ सुना है, खजुराहो उन सबका खंडन है। खासकर ये मिथुन मूर्तियाँ—मेरे खयाल में इन्हें उखाड़कर यूरोप के नृत्य-केन्द्रों में लगा देना चाहिए।

गाइड : मिस जेनी, इतनी जल्दी विचार बनाने की जरूरत नहीं है। सच कहा जाय तो इस देश ने काम भावना को कभी अस्वीकार नहीं किया। खजुराहो की कला अपवित्र नहीं है।

जेनी : अगर ये मूर्तियाँ पवित्र हैं तो ये मंदिर की बाहरी दीवार पर क्यों हैं? इन्हें मंदिर के भीतर—गर्भगृह में होना चाहिए।

गाइड : लेकिन यह कैसे हो सकता है?

जेनी : अगर यह नहीं हो सकता तो एक पूरा सवाल बच जाता है कि इन मिथुन मूर्तियों का क्या अर्थ है!

जयंत : मिस जेनी, आपने एक दिलचस्प सवाल उठाया है। मैं आपके तर्कों से बिल्कुल सहमत हूँ।

जेनी : क्या मैं आपका परिचय जान सकती हूँ।

गाइड : इनका परिचय मैं देता हूँ। ये हैं, मिस्टर जयंत—एक प्रख्यात मूर्तिकार। दो वर्षों से खजुराहो की कला का अध्ययन कर रहे हैं।

जयंत : मिस जेनी खजुराहो के मूर्तिकारों ने अपनी कला का दुरुपयोग किया है। खजुराहो भारतीय कला का सही प्रतिनिधि नहीं है।

जेनी : मि. जयंत, खजुराहो के मूर्तिकार स्वतंत्र नहीं थे। पर वे लोग कौन थे जिन्होंने इन मूर्तियों के लिए आदेश दिया? फिर वे लोग कैसे थे जिन्होंने हजारों साल तक इन मूर्तियों को सहन किया?

गाइड : मिस जेनी, इन मूर्तियों की आँखों में झाँकिये। इन सुन्दर मूर्तियों के पास एक अत्यन्त कोमल हृदय है। आपकी आलोचनाओं के आघात से एक नाज़ुक हुस्न टूटकर बिखर जायेगा।

जेनी : मि. गाइड, इन नारी मूर्तियों की आँखों में सचमुच एक जादू है। मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि इन आँखों के पार क्या है?

[मगन देसाई का प्रवेश]

गाइड : हलो, मि. देसाई!

देसाई : हलो! हलो !

गाइड : मि. देसाई, कम एंड मीट मिस जेनी—पेरिस की मशहूर डांसर!

देसाई : ओ! ग्लैड टू मीट यू, मिस जेनी!

जेनी : मुझे भी आपसे मिलकर खुशी हुई है।

गाइड : मिस जेनी, मिस्टर देसाई बम्बई के एक प्रमुख व्यापारी हैं। खजुराहो में एक फाइव स्टार होटल बनवा रहे हैं।

जेनी : खजुराहो में फाइव स्टार होटल!

गाइड : हाँ, उधर देखिये, प्रताप सागर के उस पार! क्षितिज के पास इनके होटल का आकार साफ दिखाई पड़ रहा है।

जेनी : अच्छा, वह एक होटल है! दूर से एक मंदिर की आकृति जान पड़ती है।

देसाई : ओ येस! मैंने अपने होटल के निर्माण में खजुराहो की मंदिर—वास्तुकला का ही अनुकरण किया है। यह एक नया प्रयोग है।

जेनी : मि. देसाई, आप एक अच्छे व्यापारी जान पड़ते हैं।

देसाई : ओ थैंक यू वेरी मच्च! मिस जेनी, आप विश्व यात्रा कर रही हैं?

जेनी : नहीं, आप चाहें तो इसे खजुराहो की खोज यात्रा कह सकते हैं।

देसाई : खजुराहो की खोज यात्रा—क्या मतलब?

जेनी : मैं अपने बैले ट्रुप के लिए एक नये विषय की खोज में थी। अचानक मुझे पेरिस म्यूजियम में खजुराहो की मूर्तियाँ दिखाई दीं। मैं दंग रह गयी! यौवन से भरपूर-हँसती-गाती-नाचती मुद्रायें। मैंने तुरंत तय किया कि इन्हीं मुद्राओं को जोड़कर एक बैले तैयार करूँगी।

देसाई : उसके बाद?

जेनी : मुझे लगा कि ये मूर्तियाँ अकेली नहीं हैं। इनके पीछे एक बड़ा संसार है। इन्हें समझने के लिए खजुराहो की यात्रा जरूरी है।

देसाई : यहाँ आकर आपने क्या अनुभव किया?

जेनी : अभी मैं बेतरह भटक रही हूँ। खजुराहो और यहाँ की जिन्दगी के बीच एक गहरा गैप है।

देसाई : हाँ, हमारी जिन्दगी में अनेक कुंठाएँ हैं। इन कुंठाओं को तोड़ना जरूरी है।

जेनी : कुंठाएँ कहाँ टूटती हैं, मि. देसाई! एक कुंठा टूटकर दूसरी कुंठा को जन्म देती है।

देसाई : मैं एक फाइव स्टार होटल बना रहा हूँ। इस होटल के प्रांगण में एक मुक्त कुंठाहीन जीवन जिया जा सकेगा।

जेनी : मैंने बहुत से फाइव स्टार होटल देखें हैं, मि. देसाई! आज पूरा फ्रांस एक फाइव स्टार होटल बन गया है। आपने पेरिस में सीन के तट को देखा है?

देसाई : हाँ, मैं फ्रांस गया हूँ। मैंने वहाँ के सभी विलास केन्द्रों को देखा है।

जेनी : यूरोप के विलास केन्द्रों में शरीर मुक्त हो गया पर मन की कुंठा नहीं गयी। खुमार टूटते ही हम पर एक गहरी अपराध भावना हावी हो जाती है।

देसाई : यह अपराध भावना भी एक तरह की कुंठा ही है। एक पुराना अंधविश्वास हमारा पीछा कर रहा है। हम इन जंजीरों को भी

तोड़ देंगे।

जेनी : मि. देसाई, मुझे ऐसा लगता है कि यूरोप की मुक्ति यात्रा में हमारे हाथ से कुछ फिसल कर गिर गया है।

देसाई : आप कहना क्या चाहती हैं, मिस जेनी?

जेनी : सच्ची मुक्ति सिर्फ खजुराहो में दिखाई पड़ती है। इन मूर्तियों के पैनल को देखिये। शरीर और मन का कैसा समर्पण है। कहीं कोई कुंठा नहीं है।

देसाई : आप शायद ठीक कहती हैं, पर ये मूर्तियाँ निर्जीव हैं। इनमें जिन्दगी की कोई धड़कन नहीं है।

जेनी : ये मूर्तियाँ निर्जीव नहीं हैं, मि. देसाई।

देसाई : आप यहाँ खड़े होकर इन खंडहरों को आवाज़ दीजिये, मिस जेनी।

जेनी : क्या मतलब?

देसाई : कहिये—जिन्दगी।

जेनी : जिन्दगी।

[अनुगूँज जिन्दगी! जिन्दगी! जिन्दगी! जिन्दगी!]

देसाई : कहिये-सौन्दर्य!

जेनी : सौन्दर्य!

[अनुगूँज सौन्दर्य! सौन्दर्य! सौन्दर्य! सौंन्दर्य!]

देसाई : कहिये-समर्पण!

जेनी : समर्पण!

[अनुगूँज समर्पण ! समर्पण! समर्पण! समर्पण!]

देसाई : आपने सुना?

जेनी : हाँ, यह एक अच्छा खेल है। हम खंडहरों को बोलने के लिए बाध्य करते हैं।

देसाई : पर, ये खंडहर सिर्फ आपको दुहरा सकते हैं। इतिहास भी यही करता है।

जेनी : लेकिन मि. देसाई···

देसाई : इतिहास एक बंद गली है। हर पीढ़ी को नये सिरे से जीवन का अर्थ खोजना पड़ता है।

जेनी : लेकिन आप तो एक होटल बना रहे हैं।

देसाई : हाँ, मेरा होटल एक नयी जिन्दगी की तलाश है। एक मुक्त–कुंठाहीन जीवन! दूर-दूर से यात्री आयेंगे। यह एक नया तीर्थ होगा।

जेनी : इन विदेशी यात्रियों के बूटों के तले खजुराहो का ख्वाब दम तोड़ देगा।

देसाई : नहीं मिस जेनी, एक खजुराहो मर चुका है। हम एक नये खजुराहो को जन्म दे रहे हैं।

जेनी : ओ. के., मि. देसाई! विश यू द बेस्ट ऑफ लक!

देसाई : मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।

जेनी : मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकती हूँ।

देसाई : लगता है कि हम दोनों एक ही सत्य को खोज रहे हैं। खजुराहो का जीवित सत्य!

जेनी : मि. देसाई, मुझे लगता है कि तुम्हारे पास भी एक सपना है।

देसाई : एक बहुत बड़ा सपना! यह एक नयी यात्रा है–जिन्दगी, सौन्दर्य और समर्पण की खोज यात्रा।

जेनी : मि. देसाई, आई ऐम विथ यू इन दिस जर्नी।

देसाई : थैंक यू मिस जेनी! इस समय जा रहा हूँ। फिर मिलूँगा।

[देसाई का प्रस्थान]

जेनी : जिन्दगी···सौन्दर्य···समर्पण–हाँ, शायद खजुराहो की यही परिभाषा है। जिन्दगी!

[अनुगूँज जिन्दगी! जिन्दगी! जिन्दगी!]

सौन्दर्य।

[अनुगूँज) सौन्दर्य! सौन्दर्य! सौन्दर्य!]

समर्पण!

[अनुगूँज समर्पण! समर्पण! समर्पण!]

[संगीत वादन]

द्वितीय दृश्य

[**स्थान**–जयंत की मूर्तिशाला। **समय**–संध्या 5 बजे।]

(जयंत एक मूर्ति गढ़ रहा है। छेनी की आवाज़)

[कौमुदी का प्रवेश]

कौमुदी : बाबू!

(जयंत कुछ नहीं बोलता, छेनी की आवाज़)

कौमुदी : (जोर से) बाबू!

जयंत : कौन! कौमुदी! क्या है?

कौमुदी : लो, चाय लो।

जयंत : रख दो। पी लूँगा।

कौमुदी : नहीं, मैं नहीं रखूँगी। तुम भूल जाओगे।

जयंत : रख दो कौमुदी! तंग मत करो!

कौमुदी : ना बाबा, तुम मेरे सामने पीयो।

जयंत : अच्छा, ला दे।

[कौमुदी चाय-नाश्ता देती है]

जयंत : मीठा भात! बहुत अच्छा है! मगर यह सब सामान कहाँ मिला?

कौमुदी : मोदी ने दिया है। कौमुदी को सब जानता है।

जयंत : कितने दिनों से तू खर्च चला रही है। मैंने तो तुझे कई महीने से घर का किराया भी नहीं दिया।

कौमुदी : ई सब मत बोलो, बाबू! हमको बहुत लाज लगता।

जयंत : तूने मेरे लिए बहुत किया, कौमुदी! मैं इसे कैसे अदा करूँगा?

कौमुदी : तुम यहाँ परदेसी! अपने देस में परदेसी का बहुत सेवा करता।

जयंत : तुम्हारा देस बहुत अच्छा है, कौमुदी! हरेक सूखी चट्टान के नीचे जल का स्रोत है।

कौमुदी : तुम यहाँ कब तक बैठेगा, बाबू?

जयंत : कोई ठीक नहीं है। अभी बहुत कुछ सीखना है। कुछ मूर्तियाँ बिक जातीं तो जीविका का प्रबन्ध हो जाता।

कौमुदी : यहाँ तो बहुत फारेन बाबू और मेम साहब आता। बहुत मूर्ति खरीद करता।

जयंत : वे गंदी मूर्तियाँ चाहते हैं। मैं इस पवित्र कला का अपमान नहीं कर सकता।

कौमुदी : तुम यह किसकी मूर्ति बनाता, बाबू?

जयंत : यह भगवान् शिव की मूर्ति है।

कौमुदी : शिव भगवान् की मूर्ति! देखने से बहुत भय लगता।

जयंत : हाँ, भगवान् शिव बहुत क्रोध में हैं। उन्होंने अपने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म कर दिया है।

कौमुदी : कामदेव! फूल वाला देवता!

जयंत : हाँ, वह फूलों के बाण से अपना शिकार करता है।

कौमुदी : बाबू, हम यहाँ फूल वाले देवता की पूजा करता। सब कुँवारी लड़की व्रत करता। वह हमें सुन्दर वर देता।

जयंत : होगा। तुम आज पत्थर तोड़ने नहीं गयी?

कौमुदी : नहीं बाबू! आज हमारा परब है।

जयंत : ये पहाड़, कब तक टूटते रहेंगे, कौमुदी?

कौमुदी : बाबू, एक पहाड़ टूटता तब एक मंदिर बनता। देसाई बाबू बहुत सुन्दर मंदिर बनाता।

जयंत : वह मंदिर नहीं है, कौमुदी। वह एक होटल है। कल वहाँ दूर-दूर से लोग आयेंगे। हुस्न का बाज़ार लगेगा। शराब की नदियाँ बहेंगी।

कौमुदी : पहले यहाँ सब जंगल। अब बहुत आदमी आता। कितना फारेन बाबू आता।

जयंत : शराब के दौर के पहले भुनी हुई मछली बहुत अच्छी लगती है। दुनिया को खजुराहो की सख्त जरूरत है। पर खजुराहो उनके लिए मछली की प्लेट से अधिक कुछ नहीं है।

कौमुदी : तुम, बाबू बहुत गुस्सा करता।

जयंत : खजुराहो बिक रहा है, कौमुदी! दूर-दूर से व्यापारी इसे खरीदने आ रहे हैं। भगवान् शिव की साधनाभूमि पर एक महानगर के अपवित्र चरण पड़ चुके हैं।

[जेनी का प्रवेश]

जेनी : हलो जयंत!

जयंत : हलो जेनी! तुम यहाँ?

जेनी : मंदिरों का राउंड लगा रही थी। तुम्हारी मूर्तिशाला देखने चली आई।

जयंत : मैं तो एक छात्र हूँ, जेनी। अभी तो कला का ककहरा सीख रहा हूँ।

जेनी : ये भगवान् शिव की मूर्ति है न? कितने क्रोध में हैं—ए प्रोफाइल ऑफ ऐंगर।

जयंत : हाँ, यह काम-दहन की कथा है। भगवान् शिव ने अपने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म किया था।

जेनी : ओ पुअर चैप! ये लड़की कौन है?

जयंत : ओ सॉरी, मैं बतलाना भूल गया। यह कौमुदी है। एक आदिवासी लड़की है। पहाड़ पर पत्थर तोड़ती है।

कौमुदी : नमस्ते!

जेनी : नमस्ते!

जयंत : सुनो कौमुदी, जाओ, दो कप गर्मागरम चाय ले आओ।

कौमुदी : अभी लाया।

[कौमुदी का प्रस्थान]

जेनी : इस लड़की से सगाई किया—इज़ शी एनगेज्ड टू यू?

जयंत : ओ··· नो··· नो! बेचारी एक गरीब लड़की है। मैं इसके मकान में किरायेदार हूँ।

जेनी : कुछ और··· एनी थिंग मोर!

जयंत : बड़ी अच्छी लड़की है। मुझको खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी इसी ने उठा ली है।

जेनी : एनी थिंग फरदर!

जयंत : मज़ाक मत करो, जेनी। नो जोक एबाउट हर!

जेनी : कितनी खूबसूरत लड़की है। शी इज़ रीयली ए ब्यूटी!

जयंत : हाँ, धरती की इन बेटियों ने अपना स्वास्थ्य नहीं खोया है। इनमें एक निश्छल सौन्दर्य है।

जेनी : यह एक पूर्ण सौन्दर्य है, जयंत! लगता है कि खजुराहों के मंदिरों से कोई यक्षिणी जमीन पर उतर आई हो।

जयंत : उपमा तो काफी सुन्दर है।

जेनी : खजुराहो के मूर्तिकारों ने इसी सौन्दर्य को कला का माध्यम बनाया था। उनके-सामने ऐसी ही कोई लड़की होगी।

जयंत : जेनी, तुम्हारे पास एक सौन्दर्य दृष्टि है।

जेनी : बुरा मत मानना, तुम्हें इसी दृष्टि की जरूरत है। देवताओं के इस म्यूज़ियम में आदमी की घोर उपेक्षा हुई है।

जयंत : देवता हमारी श्रेष्ठ भावनाओं के प्रतीक हैं। इसी में कला की सार्थकता है।

जेनी : लेकिन खजुराहो के कलाकार ने मनुष्य को देवता के बराबर प्रतिष्ठित किया है। मनुष्य का सुख-दुःख उसके प्यार का संसार!

जयंत : जेनी, खजुराहो के कलाकार ने गलती की है।

जेनी : जयंत, तुम खजुराहो को कभी नहीं समझोगे।

जयंत : लेकिन क्यों?

जेनी : क्योंकि, तुम जिन्दगी को नहीं समझते।

जयंत : जेनी, तुम खजुराहो को समझती हो?

जेनी : मैं जिन्दगी को समझती हूँ। मैं धीरे-धीरे खजुराहो को भी समझ जाऊँगी।

[कौमुदी का प्रवेश]

कौमुदी : चाय लो, बाबू!

जयंत : लाओ, रख दो! अरे, तुम तो खूब सज-धज के हो! कहीं जा रही हो?

कौमुदी : हम परब में जाता। देवता का पूजा करता। रात में गान-नृत्य!

जयंत : ओ. के; जाओ! कब तक आओगी?

कौमुदी : भोर तक आयेगा। तुम खाना खा लेना, बाबू! भूल मत जाना।

जयंत : तू तो मेरी गार्जियन बन गयी है, कौमुदी!

कौमुदी : जाती हूँ, बाबू! ठीक टाइम पर खाना खायेगा।

जयंत : ठीक है, जाओ।

कौमुदी : नमस्ते मेम साहब।

जेनी : नमस्ते।

[कौमुदी का प्रस्थान]

जेनी : ये तो बिल्कुल हीरोइन लगती है—तुम्हारे कवि कालिदास की हीरोइन।

जयंत : हाँ, मेले ड्रेस में ये लड़कियाँ बहुत स्मार्ट लगतीं हैं।

जेनी : जयंत, इसकी मूर्ति बनाओ। तुमने इसको अपना मॉडल क्यों नहीं बनाया।

जयंत : कला के बारे में मेरा अपना विचार है।

जेनी : उन किताबी बातों को भूल जाओ। इस सौन्दर्य को छूकर तुम्हारी कला धन्य हो जायगी।

जयंत : कला के बारे में एक भावनात्मक लगाव जरूरी है।

जेनी : तुम्हारी भावनाओं ने अभी पंखुरी नहीं खोली है। पर मैंने कौमुदी की आँख को देखा है। वह तुम्हें बेहद प्यार करती है।

जयंत : यह झूठ है!

जेनी : यह झूठ नहीं है। एक लड़की दूसरी लड़की की भावनाओं को बहुत जल्दी समझ लेती है।

जयंत : तुम कौमुदी से पहली बार मिली हो! बातचीत भी नहीं हुई है।

जेनी : जयंत, एक मन की भाषा होती है। कौमुदी की हरेक निगाह कह रही है कि जयंत, मैं तुमसे प्यार करती हूँ।

जयंत : जेनी, तुमने प्यार की भाषा सुनी है।

जेनी : पेरिस में सीन के किनारे इस शब्द को अनेक बार सुन चुकी हूँ। अब लगता है कि वह सिर्फ शरीर की भाषा थी। खजुराहो के कला-संसार को देखकर मेरे सभी अनुभव गड्ड-मड्ड हो गये हैं।

जयंत : तुम कहना क्या चाहती हो?

जेनी : खजुराहो की मिथुन मूर्तियों में एक आध्यात्मिक आवेग है जो सीन के किनारे नहीं दिखाई पड़ता। कौमुदी की आँखों में भी उसी समर्पण का स्पर्श है।

जयंत : जेनी, अभी तुम भटक रही हो।

जेनी : तुम ठीक कहते हो! एक दुर्भाग्य मेरा बराबर पीछा कर रहा है। तुम्हारे एक कवि ने लिखा है कि मैं जिसे चाहता हूँ वह

दूसरे को चाहता है। दूसरा जिसे चाहता है वह तीसरे को चाहता है। शायद हम सब की यही नियति है। **(दूर से एक लोकगीत की आवाज़)**

जेनी : दूर से गाने की आवाज़ आ रही है।

जयंत : आज आदिवासियों का पर्व है। सुनो, कौमुदी का स्वर साफ सुनाई पड़ रहा है। **(दूर से गीत के स्वर)**

आँचल में बाँध लिए,
फूल चार प्यार के,
फूल हरशृंगार के।
फूल हरशृंगार के।
ऊपर आकाश में
सूरज की धूप है,
आँगन में सावन-सा,
साजन का रूप है।
निमिया पर कोयल है
गीत हैं पुकार के,
फूल हरशृंगार के।
फूल हरशृंगार के।

(संगीत वादन)

तृतीय दृश्य

[स्थान–होटल खजुराहो का निर्माण स्थल। **समय**–संध्या 4 बजे। कौमुदी पत्थर तोड़ रही है]

जेनी : अरे कौमुदी!

कौमुदी : नमस्ते, मेम साहब। मंदिर देखने आया।

जेनी : हाँ, तुम यहाँ पत्थर तोड़ती हो, कौमुदी।

कौमुदी : हाँ, मेम साहब। मजदूरी करता, बीस रुपिया रोज मिलता।

जेनी : जयंत बाबू नहीं आया?

कौमुदी : ना, बाबू मूर्ति का रचना करता। हम भी पत्थर तोड़ता। बाबू भी पत्थर तोड़ता (हँसती है)

जेनी : ठीक है। तुम दोनों कलाकार हो।

[देसाई का प्रवेश]

देसाई : हलो मिस जेनी, घूमने आईं।

जेनी : यस मिस्टर देसाई, मंदिरों का राउंड कर रही थी, तभी कौमुदी दिख गयी।

देसाई : कौमुदी! क्या मतलब ?

जेनी : कौमुदी को नहीं पहचानते। तुम्हारे यहाँ मजदूरी करती है।

कौमुदी : प्रणाम, देसाई बाबू।

देसाई : चलो, मिस जेनी, तुम्हें अपना होटल दिखा दूँ।

जेनी : चलो।

[दोनों होटल में प्रवेश करते हैं]

देसाई : योर कौमुदी इज़ ए ब्यूटी। क्या खूबसूरत फिगर है।

जेनी : क्यों, क्या शादी का इरादा है?

देसाई : शादी! क्या मज़ाक करती हो; ये लड़कियाँ एक रात के लिए अच्छी होती हैं।

जेनी : क्या बकते हो, डोंट टॉक नानसेंस!

देसाई : देखता हूँ कि तुम खजुराहो में भी मुक्त नहीं हुई।

जेनी : क्या मतलब?

देसाई : खजुराहो के कलाकारों का जिन्दगी के प्रति बहुत 'बोल्ड एप्रोच' था। वे किसी कुंठा से नहीं जुड़े थे।

जेनी : तुम कुंठाओं की मुक्ति चाहते हो या कुंठाओं से मुक्ति?

देसाई : दोनों एक ही चीज़ हैं।

जेनी : दोनों एक चीज़ नहीं है।

देसाई : इस देश ने आत्मा के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, शरीर की माँगों को बिल्कुल अस्वीकार कर दिया है। हमारी हरेक मधुर इच्छा को धर्म की जंजीरों में कस दिया गया है।

जेनी : तुम शायद ठीक कहते हो।

देसाई : लगता है कि अस्वीकार ही हमारा धर्म हो गया है। एक पूरी संस्कृति ने हजारों साल तक अस्वीकार के इस नरक को भुगता है।

जेनी : तुम कहना क्या चाहते हो?

देसाई : क्या यह आश्चर्य नहीं है कि एक हज़ार साल पहले खजुराहो के कलाकारों ने इन जंजीरों को तोड़ दिया। मंदिरों पर ये मिथुन मूर्तियाँ उस अस्वीकार के अस्वीकार हैं।

जेनी : कहते चलो।

देसाई : खजुराहो की आवाज़ विद्रोह की आवाज़ थी। धर्म के महन्तों ने इस आवाज़ को दबा दिया। लोग खजुराहो को भूल गये।

जेनी : तुम्हारी बातें काफी दिलचस्प हैं।

देसाई : आज हमारी शताब्दी फिर उन्हीं बुनियादी सवालों में उलझ गयी है। यूरोप ने अपना उत्तर दे दिया। केवल हम दुविधा में जी रहे हैं।

जेनी : लेकिन खजुराहो के दर्शन और यूरोप की जिन्दगी में फर्क है।

देसाई : कोई फर्क नहीं है। दो संस्कृतियाँ अलग-अलग जुबान में बोल रही हैं। बात एक ही है।

जेनी : बात एक नहीं है। आज का यूरोप विलास केन्द्र बना रहा है। खजुराहो के कलाकारों ने मंदिर की रचना की थी।

देसाई : खजुराहो का मूल कथ्य मंदिरों में नहीं है। ये पारम्परिक मंदिर भी नहीं हैं। कलाकारों का मूल संदेश इन मिथुन मूर्तियों में है।

जेनी : हाँ, खजुराहो की मूर्तियाँ एक ऐसी भाषा है जिन्हें समझना आसान नहीं है।

देसाई : सब कुछ स्पष्ट है। यह एक मुक्त जीवन का दर्शन है। भगीरथ ने स्वर्ग से गंगा को उतारा था। मैं खजुराहो को जिन्दगी में उतार कर दम लूँगा।

जेनी : तुम्हारे होटल के निर्माण में कितनी प्रगति हुई है?

देसाई : धीरे-धीरे सब कुछ आकार ग्रहण कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि अगली शरद पूनो तक होटल का उद्घाटन हो जाएगा।

जेनी : अभी तो बहुत काम बाकी लगता है।

देसाई : नहीं, भवन का काम पूरा हो गया है। सजावट में अधिक समय नहीं लगेगा। सिर्फ एक मूर्ति का निर्माण बाकी है।

जेनी : कैसी मूर्ति?

देसाई : मैं होटल के मेन हाल में एक आदम कद मिथुन मूर्ति लगाना चाहता हूँ। यह मूर्ति इस भवन के स्थापत्य की चरम कला-बिन्दु होगी। इसका शीर्षक होगा—समर्पण।

जेनी : तुम सोचते हो कि लोग इसे सहन कर लेंगे?

देसाई : लोगों ने हजारों साल तक खजुराहो को सहा है। वे इस मूर्ति को भी सह लेंगे।

जेनी : देसाई, बहुत तेज़ी से भाग रहे हो! गिर पड़ोगे!

देसाई : मैं इस खतरे को उठाने के लिए तैयार हूँ। मैं लोगों को एक शॉक देना चाहता हूँ।

जेनी : इस मूर्ति को कौन बना रहा है?

देसाई : अभी कोई कलाकार ठीक नहीं हुआ है। मैंने इस मूर्ति के लिए पांच लाख का पुरस्कार घोषित किया है। विदेश के अनेक कलाकारों ने नमूने भेजे हैं।

जेनी : तुमने जयंत को नहीं कहा?

देसाई : जयंत के पास कला है, पर दृष्टि नहीं है। अच्छा पढ़ा-लिखा आदमी है लेकिन जब बोलता है तो लगता है कि कोई चुटिया वाला पंडित बोल रहा हो!

जेनी : कला के बारे में उसके अपने विचार हैं।

देसाई : कला का काम है लोगों को मुक्त करना। पर जब कला पर पूर्वाग्रह हावी हो जाय तो कला हमारी आत्मा का बंधन बन जाती है।

जेनी : मैं जयंत से कहूँगी। उसने खजुराहो की कला का बड़ी गहराई से अध्ययन किया है।

देसाई : कोशिश करो। मुझे लगता है कि पंडित जी की छेनी नारी शरीर को छूकर अपवित्र हो जाएगी।

जेनी : मज़ाक मत करो। मैं जयंत को राज़ी कर लूँगी।

देसाई : एक बात और कहना चाहता था। मेरे लिए यह एक होटल नहीं है। यह एक मुक्ति-तीर्थ है—सभी कुंठाओं से मुक्ति का तीर्थ।

जेनी : तुम इस बात को कह चुके हो।

देसाई : हाँ, पर जो नहीं कह सका अब कह रहा हूँ। इसे चलाने के लिए मुझे तुम्हारा सहयोग चाहिए। मैं तुम्हारे साथ साझेदारी के लिए तैयार हूँ।

जेनी : मेरा कार्यक्रम अभी कुछ निश्चित नहीं है। मैं किसी समय पेरिस लौट सकती हूँ।

देसाई : मैंने तुम्हें पहचान लिया है। विचारों की भिन्नता के बावजूद हम एक-दूसरे के बहुत पास हैं।

जेनी : देसाई, यह सब क्या कह रहे हो?.

देसाई : मुझे एक मौका दो, जेनी! हो सकता है कि हमारी साझेदारी धीरे-धीरे जीवन की साझेदारी में बदल जाय।

जेनी : नहीं-नहीं, यह बिल्कुल असंभव है।

देसाई : बहुत सी असंभव बातें समय पर संभव हो जातीं हैं।

जेनी : इस विषय को छोड़ो, देसाई! देर हो रही है। अभी चल रही हूँ।

देसाई : मैं तुम्हारे आकर्षण-बिन्दु को जानता हूँ। पर यह असंभव है। जयंत बिल्कुल दूसरी दुनिया का आदमी है।

जेनी : आई से शट अप! तुम बहुत आगे बढ़ रहे हो।

देसाई : ठीक है। जाने दो इस बात को। चलो, तुमको पहुँचा दूँ।

जेनी : चलो।

[दोनों साथ चलते हैं]

कौमुदी : आ गयी मेम साहब! देसाई बाबू का मंदिर देखा!

जेनी : हाँ, देखा। बहुत सुंदर है। घर चलोगी, कौमुदी?

कौमुदी : अभी कैसे जाएगा। साहब डबल काम के लिए बोला है। आज रात हो जाएगा।

जेनी : ठीक है। चलती हूँ।

[दोनों चलते हैं]

देसाई : तुम्हारी कौमुदी जबरदस्त वुमन है। वेरी सेक्सी, वेरी इनवाइटिंग!

जेनी : देसाई, यह जयंत की कौमुदी है। उससे बहुत लव करती है।

देसाई : देखता हूँ कि जयंत मुझसे हर जगह कंपीट कर रहा है।

जेनी : नहीं, जयंत कंपीट नहीं कर रहा है। वह अभी देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ रहा है। उसे जिन्दा इंसानों में कोई दिलचस्पी नहीं है।

देसाई : तब ठीक है। उसे देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ने दो।

जेनी : मैं उससे कह कर देखूँगी। शायद वह मिथुन मूर्ति के लिए तैयार हो जाय।

देसाई : ओ. के. जेनी। अभी चलता हूँ।

जेनी : ठीक है। थैंक यू फार द कंपनी।

(संगीत वादन)

चतुर्थ दृश्य

[**स्थान**–जयंत की मूर्तिशाला। **समय**–रात्रि 8 बजे।]

जेनी : लेकिन जयंत, मैं देसाई को वादा कर चुकी हूँ।

जयंत : मुझे धर्म-संकट में मत डालो, जेनी! देसाई के पास पैसा है। वह मिथुन मूर्ति बनवा लेगा।

जेनी : तुम्हें क्या एतराज है?

जयंत : तुमसे इस सवाल पर कई बार चर्चा हो चुकी है।

जेनी : यह तुम्हारा अकारण हठ है। रोम और पेरिस के कलाकेन्द्रों को देखो। सभी बड़े चित्रकारों एवं मूर्तिकारों ने न्यूड्स रचनाएँ की हैं।

जयंत : कला का काम है ऊपर उठाना। ये सारी मिथुनमूर्तियाँ अश्लील हैं।

जेनी : यह मात्र रूढ़िवाद है। मुझे मालूम है कि कुछ लोगों ने मानवीय प्यार को नरक का द्वार घोषित किया है।

जयंत : प्रेम और वासना एक नहीं है।

जेनी : स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम और वासना की दूरी बहुत कम है। पुरुष और स्त्री के बीच समर्पण एक पूरा अनुभव है।

जयंत : यह इस देश की दृष्टि नहीं है।

जेनी : यही इस देश की बुनियादी दृष्टि है। तुम्हारे देश में काम को जो सहज स्वीकृति मिली है, वैसा किसी दूसरी संस्कृति में नहीं है।

जयंत : खजुराहो पूरा भारत नहीं है।

जेनी : खजुराहो के पीछे एक पूरी जीवन-दृष्टि है। वह जीवन-दृष्टि खजुराहो के पहले भी थी, खजुराहो के बाद भी रहेगी।

जयंत : जेनी, तुम सही भारत को नहीं पहचान सकी।

जेनी : हजारों साल में इस देश ने अनेक मुद्राएँ ओढ़ी हैं। उसकी आत्मा की आवाज़ को सुनना पड़ेगा।

जयंत : तुम इस देश में कितने दिन रही हो?

जेनी : एक साल। इस एक साल में मैंने पूरी जिन्दगी पा ली है।

जयंत : तुममें लगन है। तुम इस देश के सत्य को भी पा लोगी।

जेनी : जयंत, तुम बात को टाल रहे हो। मैं तुमसे मिथुन मूर्ति का वादा लेने आई हूँ।

जयंत : अगर सिद्धान्त की बात न करूँ तो भी ये मूर्तियाँ मेरे अनुभव से बाहर की चीज़ हैं। एक कलाकार की रचना उसके अनुभवों की प्रतिबिम्ब होती है।

जेनी : तुमने किसी को प्यार किया है, जयंत?

जयंत : एक लड़की मुझसे प्यार के मीठे डायलॉग बोलती थी। अचानक उसके प्यार का जोश खत्म हो गया।

जेनी : ऐसा क्यों हुआ?

जयंत : मैंने जब सुविधा के जीवन को छोड़कर कला का वरण किया तो मेरे परिवार की निगाह बदल गयी। उस लड़की के प्रेम का स्रोत भी सूख गया।

जेनी : बड़ी दुखद कहानी है। तुमने बहुत सहा है, जयंत।

जयंत : तुम्हारे लिए चाय लाऊँ, जैनी। आज कौमुदी नाइट-शिफ्ट ड्यूटी कर रही है।

जेनी : मुझे चाय की जरूरत नहीं है। पर तुम्हें कौमुदी को इस तरह भेड़ियों के बीच नहीं छोड़ देना चाहिए।

जयंत : यह क्या कह रही हो?

जेनी : ठीक कह रही हूँ। कौमुदी तुम्हारी आश्रिता है। तुम्हें अपनी जिम्मेदारी महसूस करनी चाहिए।

जयंत : लेकिन जेनी···!

(नेपथ्य से मारो··· मारो··· की आवाज़)

जयंत : कैसा शोर है?

जेनी : मैं पता लगा कर आती हूँ।

जयंत : मैं भी चलता हूँ।

जेनी : नहीं, तुम यहीं ठहरो। मैं अभी आती हूँ।

[जेनी का प्रस्थान। नेपथ्य में पुनः शोर]

[जेनी का प्रवेश]

जयंत : क्या हुआ?

जेनी : कोई गंभीर दुर्घटना हो गयी है। लोग कौमुदी का नाम ले रहे हैं!

जयंत : कौमुदी, क्या पत्थर की चट्टान गिर गयी है?

जेनी : मालूम नहीं। लोग बार-बार देसाई का भी नाम ले रहे हैं।

जयंत : कुछ समझ में नहीं आता, कौमुदी कहाँ है?

जेनी : साफ पता नहीं लगता। कोई अस्पताल का नाम लेता है, कोई पुलिस स्टेशन।

जयंत : पुलिस स्टेशन। तुम कहना क्या चाहती हो?

जेनी : पूरी बात मालूम नहीं है। एक आदमी कह रहा था कि देसाई ने कौमुदी को रेप किया है।

जयंत : यह क्या कह रही हो? देसाई ने ऐसा काम किया।

जेनी : लोग यही कह रहे हैं। होटेल खजुराहो की अच्छी शुरुआत हुई है।

जयंत : चलो, हम कौमुदी का पता लगायें। उसे हमारी जरूरत होगी।

जेनी : हाँ, चलो।

[मुखिया और कौमुदी का प्रवेश]

मुखिया : इसे संभाल कर रखो। इसकी हालत अच्छी नहीं लगती।

जयंत : तुम कौन हो!

मुखिया : हम इस गाँव का मुखिया। कौमुदी हमारी जात की लड़की।

जयंत : क्या हुआ है, कौमुदी को?

मुखिया : देसाई बाबू ने जबरदस्ती किया।

जयंत : तुम पुलिस स्टेशन गये थे?

मुखिया : हम पुलिस स्टेशन नहीं जाता। अपना फैसला खुद करता।

जयंत : बहुत दुख की बात है।

मुखिया : हम अभी जाता। फिर लौट के आयेगा।

[मुखिया का प्रस्थान]

जेनी : कैसी हो कौमुदी?

कौमुदी : (रोती हुई) देसाई बाबू ने बर्बाद किया। बिल्कुल बर्बाद किया।

जयंत : तुम्हें देसाई कहाँ मिला?

कौमुदी : (रोती हुई) काम के वास्ते रात को बुलाया। उसका आदमी उठा ले गया। मुँह बंद करके जबरदस्ती किया। हम बेहोश हो गया।

जयंत : यह तो सरासर अत्याचार है!

जेनी : देसाई बाबू कहाँ गया?

कौमुदी : पता नहीं। मुखिया और गाँव का आदमी खोजता।

जेनी : बड़ी खतरनाक बात है! गाँव के सभी आदिवासी फरसा लेकर देसाई की तलाश कर रहे हैं।

जयंत : इस हत्या को रोकना होगा। देसाई को पकड़ कर पुलिस स्टेशन को दे देना चाहिए।

कौमुदी : देसाई बाबू को नहीं मारता। हमारा ब्याह देसाई बाबू से करता।

जयंत : तुम्हारा ब्याह देसाई बाबू के साथ।

कौमुदी : देसाई बाबू ने जबरदस्ती किया! हमारी शादी उसी से होता। हमारे जात का एही रीत।

जयंत : यह रिवाज़ गलत है। सरासर अन्याय है।

कौमुदी : हम क्या करता। हमारे लोग का एही रीत होता।

जयंत : नहीं-नहीं यह असंभव है। देसाई से तुम्हारी शादी नहीं हो सकती।

जेनी : इस घटना के बाद जात का कोई लड़का कौमुदी से शादी नहीं करेगा।

जयंत : लेकिन देसाई शादी न करे तो? मेरे ख्याल से देसाई शादी नहीं करेगा।

कौमुदी : तब हमको मरना होता। देवी के सामने हमारी बलि करता।

जयंत : नहीं, यह नहीं होगा। कभी नहीं होगा।

जेनी : जयंत, कौमुदी बहुत संकट में फँस गयी है।

जयंत : हमें इन खूनी रिवाज़ों को खत्म करना होगा।

जेनी : कौमुदी स्वयं इस घेरे से बाहर नहीं निकल सकती। तुम्हें उसकी मदद करनी होगी।

[मुखिया के साथ देसाई का प्रवेश]

मुखिया : देसाई बाबू को पकड़ कर लाया।

देसाई : मुझे बचा लो, जयंत। मुझे बचा लो।

मुखिया : साफ बोलो। कौमुदी से शादी करता।

देसाई : मुझे बचा लो, जयंत। मैं कौमुदी से शादी कर लूँगा।

जयंत : यह सब धोखा है। तुमने अब तक कितनी शादियाँ की हैं?

देसाई : जयंत, मैं तुम्हें खुश कर दूँगा।

जयंत : शट अप! कौमुदी की शादी देसाई से नहीं होगी।

मुखिया : लेकिन देसाई बाबू शादी को तैयार होता।

जयंत : यह शादी नहीं, शादी का मज़ाक होगा।

मुखिया : गाँव का लड़का कौमुदी से शादी नहीं करता।

जयंत : देसाई से शादी के कोई माने नहीं हैं। इससे अच्छा है कि कौमुदी की मंदिर में बलि दे दी जाय।

जेनी : इस बात को मत कहो, जयंत। कौमुदी से पूछ लिया जाय कि वह क्या चाहती है?

कौमुदी : हम क्या कहता? जो जयंत बाबू कहता हम वही करता।

मुखिया : कौमुदी, तुम क्या बोलता? चलो, हम तुमको पंचायत में ले जाता।

जेनी : लेकिन पंचायत में जाने का अर्थ है, मृत्युदंड—एक क्रूर रस्म और नरबलि।

जयंत : बड़ी भयानक स्थिति है।

जेनी : अब सिर्फ एक रास्ता रह गया है। जयंत, कौमुदी तुम्हारे जवाब का इंतजार कर रही है।

जयंत : मैं उस जवाब के लिए तैयार हूँ। मैं कौमुदी से विवाह के लिए तैयार हूँ।

कौमुदी : तुम जयंत बाबू, हमसे शादी करेगा।

जयंत : कौमुदी, मैं तुम्हें भेड़ियों के सुपर्द नहीं कर सकता।

कौमुदी : जयंत बाबू।

मुखिया : हमारा बधाई। यह बहुत अच्छा शादी होता।

देसाई : तुमने मुझे बचा लिया जयंत। मैं इस एहसान को कभी नहीं भूलूँगा।

जयंत : लेकिन हम सब इस घटना को भूल जाना चाहते हैं। देसाई, तुम्हें खजुराहो छोड़ देना होगा।

देसाई : हाँ, जरूर छोड़ दूँगा। अजब जंगली देश है, अजब जंगली लोग हैं।

(संगीत वादन)

पाँचवाँ दृश्य

[**स्थान**–जयंत की मूर्तिशाला से बाहर। **समय**–सुबह 8 बजे।]

जेनी : कौमुदी।

कौमुदी : हाँ, मेम साहब।

जेनी : मंदिर जा रही हो?

कौमुदी : हाँ, मेम साहब।

जेनी : शादी से खुश हो, कौमुदी।

कौमुदी : मेम साहब।

जेनी : अरे, तुम रो रही हो!

कौमुदी : कुछ नहीं मेम साहब, रुलाई आया।

जेनी : तुम्हारी आँखें सूजी हुई हैं। तुम रात में रोई थी।

कौमुदी : कुछ नहीं। कुछ नहीं, मेम साहब।

जेनी : जयंत क्या कर रहा है?

कौमुदी : मूर्ति बनाता।

जेनी : साहब रात में भी मूर्ति गढ़ता रहा?

कौमुदी : हाँ मेम साहब? छिन भर नहीं सोया।

जेनी : अजब आदमी है। तुमसे नाराज़ है।

कौमुदी : हम क्या करता, मेम साहब? कितना दिन से साहब बात नहीं करता।

जेनी : कौमुदी, तुम्हें यह शादी पसंद है?

कौमुदी : हम क्या कहता, मेम साहब! साहब को पसंद होता कि नहीं होता?

जेनी : ठीक है! जाओ, अब मंदिर जाओ।

कौमुदी : मेम साहब, तुम बहुत अच्छा आदमी होता।

जेनी : और जयंत?

कौमुदी : साहब देवता है। साक्षात् देवता।

जेनी : अच्छा, अब जाओ। सब ठीक हो जायगा।

कौमुदी : नमस्ते, मेम साहब।

जेनी : नमस्ते।

[कौमुदी का प्रस्थान]

[जेनी मूर्तिशाला में प्रवेश करती है।]

जेनी : हलो जयंत! ग्रेट आर्टिस्ट।

जयंत : जेनी, बहुत दिनों में दिखाई दी।

जेनी : बाम्बे गयी थी। एक बिजनेस डील का चक्कर था।

जयंत : बिजनेस डील। कैसा बिजनेस डील?

जेनी : अभी सब कुछ हवा में है। पूरा हो जाने पर कहूँगी।

जयंत : सुनती हूँ कि देसाई बाम्बे में अरेस्ट कर लिया गया है।

जेनी : हाँ, यह खबर ठीक है। होटल खजुराहो की असलियत अब खुल रही है। देसाई मूर्तियों की स्मगलिंग कर रहा था। वह गिरफ्तार कर लिया गया है।

जयंत : मूर्तियों की तस्करी! थैंक गॉड, वह यहाँ से चला गया।

जेनी : देसाई सच्चा विलेन था।

जयंत : होटल खजुराहो का क्या होगा?

जेनी : सरकार ने देसाई की सभी संपत्ति पर रिसीवर रख दिया है।

देसाई ने कई वर्षों से टैक्स नहीं दिया है। संभव है कि सरकार होटल को नीलाम कर दे।

जयंत : पर अगली शरद् पूर्णिमा पर होटल का उद्घाटन होने वाला था?

जेनी : उस कार्यक्रम में परिवर्तन नहीं होगा। सरकार ने सब कुछ अरेंज कर दिया है।

जयंत : देखो, क्या होता है।

जेनी : सुना है कि तुम कोई नयी मूर्ति बना रहे हो। कुछ दिन तो हनीमून मनाया होता।

जयंत : जेनी, इस विवाह में न 'हनी' है, न 'मून'।

जेनी : जयंत, ऐसा मत बोलो। क्या तुम जानते हो कि तुम कौमुदी को कितना रुला रहे हो?

जयंत : जेनी, तुम नहीं जानती कि मैंने कितना जहर पिया है? कैसी जिन्दगी जी रहा हूँ?

जेनी : यह झूठ है। तुम्हें कौमुदी को इस तरह सताने का कोई हक नहीं है।

जयंत : जेनी, नयी मूर्ति देख लो। अभी सिर्फ रफ़ वर्क किया है। एक हफ्ते में पूरी करूँगा।

जेनी : इस बार क्या बना रहे हो?

जयंत : मैंने तुम्हारी बात मान ली है। मैं एक मिथुन मूर्ति बना रहा हूँ।

जेनी : मिथुन मूर्ति, देखती हूँ कि कौमुदी ने तुम्हें नये अनुभव दिये हैं।

जयंत : नये अनुभव। शायद तुम ठीक कहती हो, चलो।

[दोनों मूर्ति के पास जाते हैं।]

जयंत : देखो, यह है मेरी नयी रचना।

जेनी : माई गॉड! इतनी बड़ी मूर्ति। यह पत्थर का काव्य नहीं, महाकाव्य है।

जयंत : देसाई ने लाइफ-साइज की मूर्ति चाही थी।

जेनी : तुम मिथुन मूर्ति बना रहे हो, पर इस मूर्ति में तो अजीब तरह का टेंशन है।

जयंत : ठीक कहती हो। इस युगल मूर्ति का नायक है, देसाई–होटल खजुराहो का मालिक।

जेनी : यह तुम क्या कह रहे हो?

जयंत : इसकी नायिका है, कौमुदी। शीर्षक है–'बलात्कार'।

जेनी : जयंत, इतने क्रूर मत बनो। तुम यह सब क्या बना रहे हो?

जयंत : मैं क्रूर नहीं हूँ। मैं तो मात्र एक कलाकार हूँ। हाँ विषय थोड़ा कड़वा हो गया है।

जेनी : जयंत, यह सच नहीं है।

जयंत : यही सबसे बड़ा सच है। मैंने इसे सिर्फ एक मूर्ति का रूप दिया है।

जेनी : क्या, कौमुदी इस बात को जानती है? जयंत, तुम उसके अपमान की मूर्ति बना रहे हो।

जयंत : हाँ, मैंने उससे कहा था।

जेनी : तब उसने क्या कहा?

जयंत : क्या कहती, कोई क्या कह सकता है?

जेनी : जयंत, कौमुदी तुमको बहुत प्यार करती है।

जयंत : जानता हूँ, पर हमारे और उसके प्यार के बीच जहर का एक समुद्र खौल रहा है।

जेनी : तुम अपने पारिवारिक जीवन में आग लगा रहे हो।

जयंत : इस परिवार का जन्म ही एक आग की कोख से हुआ है।

जेनी : काश, तुम कौमुदी की भावनाओं को समझ सकते!

जयंत : काश, तुम मेरी मजबूरियों को समझ पातीं!

जेनी : तुम कहना क्या चाहते हो?

जयंत : जानती हो जेनी, जब मैंने पहली बार कौमुदी का हाथ पकड़ा तो वह चीख कर बेहोश हो गयी। मैं बहुत घबरा गया। होश में आने पर उसने कहा कि अचानक उसे लगा कि देसाई उसके साथ फिर जबरदस्ती करना चाहता है।

जेनी : बेचारी कौमुदी! एक कड़वे अतीत ने उसे बुरी तरह डरा दिया है।

जयंत : प्यार के हरेक प्रयत्न में वह भय सामने खड़ा हो गया।

धीरे-धीरे मैं भी बदल गया। मुझे लगा कि मैं जयंत नहीं देसाई हूँ।

जेनी : सुनकर बहुत दुख हो रहा है।

जयंत : कौमुदी और मेरे बीच देसाई की छाया है। मन की हरेक परत में उसका भूत जम कर बैठ गया है। प्रेम के चरम क्षणों में मुझे उसके ठहाके और कौमुदी की चीखें सुनाई पड़ती हैं।

जेनी : जयंत, तुम बहुत भावुक हो। यह सब एक दुःस्वप्न मात्र है।

जयंत : तुम भी ऐसा सोचती हो।

जेनी : मैं अभी कौमुदी से मिली थी। रात के आँसू उसकी आँखों में चमक रहे थे।

जयंत : मगर मैंने तो कुछ नहीं कहा।

जेनी : एक लड़की को मारने के लिए उपेक्षा काफी होती है।

जयंत : मुझे कौमुदी के लिए दुख है। पर मैं क्या कर सकता हूँ।

जेनी : पहला काम यह है कि तुम इस मूर्ति का विचार छोड़ दो।

जयंत : क्यों, क्या यह मिथुन मुद्रा नहीं है। इस मुद्रा को देसाई बहुत पसंद करेगा।

जेनी : दिक्कत यह है कि तुम बदला देसाई से लेना चाहते हो। पर तुम्हारा हरेक वार कौमुदी पर पड़ता है।

जयंत : यह तुम क्या कह रही हो?

जेनी : तुमने खजुराहो के मंदिरों पर कहीं ऐसी मूर्ति देखी है? तुम्हारी मूर्ति देखकर ऐसा लगता है कि एक गिद्ध एक जिन्दा चिड़िया के मांस को नोच-नोच कर खा रहा है।

जयंत : यह भी एक सत्य है।

जेनी : हर सत्य संग्रह के योग्य नहीं होता। लाओ अपनी हथौड़ी, मैं अपने हाथ से इस मूर्ति को तोड़ूँगी। **(जेनी हथौड़ी उठाती है)**

जयंत : अरे, यह क्या कर रही हो?

जेनी : तुम्हारे और कौमुदी के बीच इस इतिहास को तोड़ना बहुत जरूरी है।

[दूर से गीत के स्वर]

आँचल में बाँध लिए,
फूल चार प्यार के,
फूल हरशृंगार के,
फूल हरशृंगार के।

जेनी : सुनो, कैसी मोटी आवाज़ है। उस दिन इस गीत को कौमुदी के मुँह से सुना था।

जयंत : इस समूह गायन में कौमुदी नहीं है। किसी कोने में बैठकर सिसक रही होगी।

[नेपथ्य से सामूहिक शोक-ध्वनि]

जयंत : यह कैसी आवाज़ है? लगता है कि कोई दुर्घटना हो गयी है।

जेनी : पता नहीं कौमुदी कहाँ है? भगवान् उसका मंगल करे।

[शोक ध्वनि]

जयंत : बहुत शोर हो रहा है। चलो देखें क्या बात है?

जेनी : हाँ, चलो।

[मुखिया कौमुदी को उठा कर लाता है। कौमुदी खून से लतपथ है]

कौमुदी : बाबू जी!

जयंत : सर्वनाश! इतना खून! ये कौमुदी को क्या हुआ?

मुखिया : कौमुदी बेटी ने मंदिर में पूजा किया। फिर अपना बलि दिया।

जेनी : माई गॉड! यह तो बड़ी भयानक बात है। इसे तुरंत अस्पताल ले चलो!

मुखिया : कौमुदी बेटी ने बलि दिया। वह अस्पताल नहीं जाता।

जेनी : यह कौन-सा रिवाज़ है। मैं अभी पुलिस को फोन करती हूँ।

कौमुदी : मेम साहब, अब हम जाता।

जेनी : यह तुमने क्या किया, कौमुदी?

कौमुदी : मेम साहब, हरेक मंदिर की नींव में बलि होता। बाबू साहब देवता। हमारा बलि जरूरी होता।

जयंत : नहीं कौमुदी, मैं देवता नहीं हूँ। मैंने ही तुझे मृत्यु के नरक में ढकेला है।

कौमुदी : यह नरक नहीं है, बाबू जी! तुम कष्ट नहीं करेगा।

जयंत : तुमने अन्याय किया है, कौमुदी! मुझे इतना कड़ा दंड नहीं देना चाहिए था।

कौमुदी : बाबू जी, हमको माफ करना।

जयंत : तुमने बहुत जल्दी की, कौमुदी! धीरे-धीरे सब ठीक हो जाता।

कौमुदी : बाबू जी अब हम जाता। हमको माफ करना। बाबू जी... मेम साहब।

[कौमुदी मर जाती है]

जेनी : चली गयी। एक मासूम लड़की हवस की शिकार हो गयी।

मुखिया : बाबू जी, कौमुदी की मिट्टी मंदिर में ले जाता, फिर दाह करता।

[मुखिया कौमुदी की लाश ले जाता है]

जेनी : चलो जयंत, हमें भी चलना चाहिए।

जयंत : जरा ठहरो, जेनी! जाने से पहले एक नरक तोड़ना जरूरी है। हमारे और कौमुदी के बीच का नरक।

[जयंत मूर्ति तोड़ता है]

(संगीत वादन)

छठा दृश्य

[**स्थान**–होटल खजुराहो का निर्माण स्थल। **समय**–संध्या 5 बजे।]

(शहनाइयों की हल्की-हल्की आवाज़)

कवि : बहनो और भाइयो, आज का दिन एक ऐतिहासिक दिन है। भगवान शंकर की यह पवित्र भूमि हजारों साल से एक कला तीर्थ रही है, इस पवित्र साधना केन्द्र में आज एक नया वसंत अवतरित हो रहा है।

[तालियों की आवाज़]

कवि : मगन देसाई खजुराहो में एक फाइव स्टार होटल बनाना चाहता था। हम फ्रांस की मिस जेनी कॉरेल को धन्यवाद देते

हैं कि उन्होंने इसे एक पवित्र कला विद्यापीठ का रूप दिया।

[तालियों की आवाज़]

जयंत : जेनी, क्या यह सच है?

जेनी : हाँ जयंत, मैंने देसाई से इस होटल को खरीद लिया है। मैंने इसका एक ट्रस्ट बना दिया है।

जयंत : कैसा ट्रस्ट?

जेनी : मैंने इसे एक कला विद्यापीठ का रूप दिया है। यहाँ विश्व के कोने-कोने से कवि और कलाकार आएँगे। वे खजुराहो के दर्शन और कला को जिएँगे।

जयंत : जेनी, तुम महान हो।

जेनी : देखो, मज़ाक मत करो।

कवि : अब हम मिस जेनी को मंच पर आमंत्रित करते हैं।

[तालियों की आवाज़]

जेनी : जेनी भाइयो, फ्रांस मेरी जन्मभूमि रही है पर भारत मेरी आध्यात्मिक माँ है। इस देश ने मेरी आत्मा को गढ़ा है इसने मुझे एक गहरा जीवन दर्शन दिया है।

खजुराहो को एक कला विद्यापीठ की जरूरत थी। ईश्वर की कृपा से यह काम संपन्न हो गया है।

श्री जयंत सर्वसम्मति से इसके निर्देशक मनोनीत हुए हैं।

[तालियों की आवाज़]

जयंत : जेनी, यह सब क्या है? तुमने क्या कह दिया?

जेनी : ठीक कहा है। तुमको यह काम करना है।

जयंत : नहीं जेनी, यह काम मुझसे नहीं होगा।

जेनी : लेकिन क्यों?

जयंत : खजुराहो की कला एक विराट संसार है। मैं तो सिर्फ पत्थरों का संतराश हूँ। इस समुद्र के किनारे अभी कंकर चुन रहा हूँ।

जेनी : इस विराट कला में विश्व के सम्मुख हम सचमुच बहुत छोटे हैं। सिर्फ आवश्यकता है समर्पण की।

जयंत : मुझे अभी सोचने दो।

जेनी : क्या बात है? बहुत नरवस हो।

जयंत : चलो जेनी, मूर्तिशाला चलो।

जेनी : चलो।

[दोनों साथ चलते हैं]

जयंत : जेनी, मैंने एक नयी मिथुन मूर्ति बनायी है।

जेनी : मिथुन मूर्ति! तुमने कभी जिक्र नहीं किया।

जयंत : हाँ, मैं उसे देसाई के हाथ नहीं बेचना चाहता था।

जेनी : देसाई अब कहाँ है। वह अपने अपराधों के लिए आजन्म कारावास भोग रहा है।

[दरवाजा खुलने की आवाज़]

जयंत : देखो जेनी, यही है नयी मूर्ति।

जेनी : जस्ट ग्रैंड! सुपर्व! जयंत, यह खजुराहो की सच्ची शैली है।

जयंत : मेरे अंदर एक संशय था। लगता था कि कौमुदी की मूर्ति न बना सकूँगा। हरु टाँके पर आँसू फूटते थे।

जेनी : उसके बाद।

जयंत : दूसरे दिन लगा कि कौमुदी मुस्क़रा रही है। उसके चेहरे पर एक आनन्द की मुद्रा थी। मैंने छेनी उठायी और मूर्ति को पूरा कर दिया।

जेनी : तुमने कौमुदी को सचमुच पुनर्जीवित किया है। लेकिन तुम्हारे चेहरे पर आनन्द नहीं, अपराध की भावना है।

जयंत : तुम ठीक कहती हो। एक अपराध की भावना मेरा पीछा नहीं छोड़ती है।

जेनी : तुम एक नरक से गुजरे हो। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।

जयंत : मैं एक अधूरा आदमी हूँ। कौमुदी मुझे पूरा कर सकती थी पर मैं उसे पहचान न सका।

जेनी : उस प्रसंग को अब भूलना होगा।

जयंत : एक पूरी मूर्ति चूर-चूर हो गयी है। जिन्दगी की नयी मूर्ति गढ़ने के लिए मुझे सहारे की जरूरत है।

जेनी : क्या मतलब?

जयंत : मुझे स्वीकार कर लो, जेनी। तुम्हारे बिना मैं बिल्कुल अधूरा हूँ।

जेनी : लेकिन जयंत, मैं पेरिस जा रही हूँ। सिर्फ इस फंक्शन के

कारण रुक गयी थी।

जयंत : नहीं जेनी, तुम नहीं जाओगी।

जेनी : जयंत, एक सवाल पूछूँ। तुम किस अधिकार से मुझे रोकना चाहते हो।

जयंत : इस सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

जेनी : जयंत, मैंने तुम्हारा बहुत इंतजार किया। सोचती थी कि तुम कब समझोगे कि एक लड़की तुम्हारे दुख-सुख को बाँटना चाहती है।

जयंत : जेनी, मैं अनुभवहीन हूँ। मुझे लगता है कि मैं घर से भटका हुआ एक बच्चा हूँ। शाम हो गयी है और मैं एक महानगर में भटक रहा हूँ।

जेनी : जयंत, मैं पेरिस जा रही हूँ। पूरा प्रोग्राम तय हो चुका है।

जयंत : पेरिस बहुत दूर नहीं है। मैं तुम्हारे लिए इंतजार करूँगा।

जेनी : जयंत, मुझे सोचने दो।

जयंत : जेनी, तुमने एक कोमल पौधा लगाया है। वह तुम्हारे बिना मर जाएगा।

जेनी : मैंने सही आदमी को सही जगह रख दिया है।

जयंत : नहीं जेनी, मुझमें वह सामर्थ नहीं है। खजुराहो को तुम्हीं सही ढंग से प्रस्तुत कर सकती हो।

जेनी : लेकिन जयंत...।

जयंत : जेनी, इस देश में आत्मविश्वास की गहरी कमी है। पश्चिम का सही संपर्क इसकी कुंठाओं को दूर कर सकता है।

जेनी : यह बात पश्चिम के बारे में भी कही जा सकती है। नयी पीढ़ी पश्चिम के वैचारिक ढाँचे को अस्वीकार कर रही है।

जयंत : सच्चाई कहीं इन दोनों के बीच में है।

जेनी : हो सकता है कि दोनों को जोड़ने से परिधि बनती हो।

जयंत : जेनी, खजुराहो शरीर और मन का मिलन बिन्दु है।

जेनी : संभव है खजुराहो पूर्व और पश्चिम का मिलन बिन्दु बन जाय।

जयंत : जेनी, खजुराहो हमारा और तुम्हारा मिलन बिन्दु बन गया है।

जेनी : यू नॉटी ब्वाय। डोट ट्राई टू ट्रेप मी!

जयंत : जेनी, तुम ट्रैप्पड हो गयी हो।

जेनी : अच्छा बाबा चलो तुम्हीं जीते। चलो, पंडाल में लोग हमें खोज रहे होंगे।

जयंत : चलो!

[दोनों पंडाल में जाते हैं]

गाइड : अब महाकवि चंद्रकांत एक कविता प्रस्तुत करेंगे। शीर्षक है—'खजुराहो की यक्षिणी'

कवि चन्द्रकान्त :

खजुराहो की शिला सुंदरी,
समय रेत पर अविरल चंचल,
तुम सुन्दरता की सरिता हो।
कालिदास कवि की कविता हो।
इन आँखों के कमल पत्र पर,
छिपा हुआ जो प्रेम काव्य है,
आसाढ मेघ पढ़ कर व्याकुल है
पर शिप्रा के शापित तट पर
एक शकुंतला
अपनी भाषा भूल गयी है।
यक्ष तुम्हारा भी शापित है।
खजुराहो की शिला सुन्दरी
समय रेत पर अविरल चंचल
तुम सुन्दरता की सरिता हो,
कालिदास कवि की कविता हो।

[तालियों की आवाज़]

(पटाक्षेप)

Scanned with OKEN Scanner

एक और अहल्या

(एक सामाजिक एकांकी)

पात्र

स्वामी मुक्तानन्द

अहिल्या

गौतम

इंद्रनाथ

मलका जान

नूरा

जीवानन्द

खान

कथासार

अहल्या पुराणों पर आधारित एक पुराकथा की नायिका थी।

अहल्या, ऋषि गौतम और इंद्र।

यह एकांकी एक नयी अहल्या की कहानी है—अहल्या, उसका पति रंगदार गौतम और स्मगलर इंदर।

सुंदरी अहल्या का विवाह अत्यन्त कुरूप और क्रिमिनल गौतम से होता है। गौतम अहल्या पर बहुत अविश्वास करता है। वह उससे बहुत दुर्व्यवहार करता है।

अपने व्यापार की खातिर गौतम अहल्या को दाँव पर लगा देता है। अहल्या गौतम से अलग होती है पर मछली एक नये जाल में फँस जाती है।

इंदर अहल्या को मुंबई के कोठे पर पहुँचा देता है। उधर गौतम प्रतिक्रिया में कॉल गर्ल्स की हत्या करने लगता है।

दोनों का पुनः साक्षात्कार होता है। गौतम पकड़ा जाता है। उधर अहल्या कोठा छोड़कर एक आश्रम में दाखिल हो जाती है।

गौतम और अहल्या का एक तीसरा साक्षात्कार भी होता है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम दृश्य

[**स्थान**–मुक्ताश्रम का प्रांगण। **समय**–सुबह आट बजे।]

(भगवान की प्रतिमा के सम्मुख गायन)

जीवानन्द : **(गायन)**

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु,
गुरु देवो, महेश्वरः,
गुरु साक्षात परम ब्रह्म,
तस्मै श्री गरुवे नमः।
अखंड मंडलाकारं,
व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदम् दर्शितम् येन
तस्मै श्री गुरुवे नमः।

अहल्या : **(गायन)**

प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।
समदरशी है नाम तिहारो,
चाहे तो पार करो।
प्रभु मेरे अवगुन···

[स्वामी मुक्तानन्द का प्रवेश]

स्वामी : जीवानन्द।

जीवानन्द : हाँ गुरुदेव।

स्वामी : आज गुरु-पूर्णिमा है।

जीवानन्द : गुरुदेव, हमें स्मरण है। दीक्षा का मंडप तैयार है।

स्वामी : ठीक है। अहल्या बेटी, तुम्हें भी स्मरण है न। आज तुम्हारी दीक्षा का दिन है। दीक्षा के बाद तुम्हें आश्रम में साध्वी का पद

मिलेगा। यह सेवा और साधना का नया सोपान होगा।

अहल्या : नहीं गुरुदेव, मुझे दीक्षा मत दीजिए। मैं इस सम्मान के योग्य नहीं हूँ।

स्वामी : बेटी, इस आश्रम में आए हुए तुम्हें दस वर्ष बीत चुके हैं। अपने आचार-व्यवहार से तुमने जो सम्मान अर्जित किया है वह आश्रम के इतिहास में अनूठा है। बेटी, तुम दीक्षा के लिए हर तरह से योग्य हो।

अहल्या : नहीं गुरुदेव, आपने जो कुछ देखा है, वह पूरा सच नहीं है। प्रकाश की हल्की-सी परत के नीचे अंधेरा-ही-अंधेरा है। गुरुदेव, मैं आपको धोखा नहीं दे सकती। मुझे साध्वी पद नहीं चाहिए। मैं आश्रम की सामान्य सेविका ही रहना चाहती हूँ।

स्वामी : बेटी, अंधेरा हमारी जिन्दगी का हिस्सा है। हम सब एक पिंजड़े में बंद अंधेरे के दुर्दांत दैत्य से लड़ रहे हैं। यही हमारी नियति है। यही हमारी मजबूरी है।

अहल्या : गुरुदेव, आश्रम ने मुझे सुरक्षा ही नहीं, अनन्त स्नेह दिया है। मेरे लिए यह स्वर्ग है। इससे अधिक मुझे कुछ नहीं चाहिए।

स्वामी : बेटी, तुम साधारणतया मौन ही रहती हो। आज तुम्हें बोलते देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। कह डालो सब कुछ। एक खौलते हुए समुद्र को दबा कर बैठना आसान नहीं है।

अहल्या : समुद्र! हाँ गुरुदेव, मैं सचमुच एक समुद्र के साथ जूझ रही हूँ पर मेरे भीतर जो कुछ खौल रहा है, वह पानी नहीं ज़हर है।

स्वामी : बेटी, हम सभी को अपने-अपने हिस्से का ज़हर पीना पड़ता है।

अहल्या : गुरुदेव, एक इतिहास मर चुका है। एक आग सब कुछ जलाकर बुझ गयी है फिर उसे कुरेदने से क्या लाभ है?

स्वामी : कौन कहता है कि इतिहास मर गया। तुम एक इतिहास से लगातार लड़ रही हो। मैं सब कुछ देख रहा हूँ। एक भोली लड़की अनकिए पापों की आग में बुरी तरह झुलस रही है।

अहल्या : गुरुदेव, लड़की भोली नहीं है। मैं आपसे झूठ नहीं बोल सकती। मैंने अकथनीय पाप किये हैं। मैं पाप की काली

कोठरी से निकल कर आयी हूँ।

[जीवानन्द का प्रवेश]

जीवानन्द : गुरुदेव, दीक्षा मंच के पास सब लोग एकत्र हो गए हैं। लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

स्वामी : तुम चलो, हम जल्दी ही आ रहे हैं।

[जीवानन्द का प्रस्थान]

अहल्या : नहीं गुरुदेव, मैं दीक्षा नहीं ले सकूँगी।

स्वामी : बेटी, तुम इतना क्यों डर रही हो। तुम्हारे अंदर अटूट साहस है। उसके बिना तुम अब· तक मर-खप गयी होतीं।

अहल्या : गुरुदेव, मैं हर क्षण मरती रही हूँ। मुझे डर है कि मेरी वजह से कहीं आश्रम की छवि कलंकित न हो जाय।

स्वामी : बेटी, तुम्हें आश्रम के स्वास्थ्य के बारे में विचार करने की जरूरत नहीं है। मुझे तुम्हारे बारे में चिंता हो रही है।

अहल्या : गुरुदेव, आप नहीं जानते। मैं एक महान पापिन हूँ। मैं एक रूपाजीवा रही हूँ। मैंने अपनी अस्मत को कौड़ियों के मोल बेचा है।

स्वामी : बहुत आश्चर्य की बात है।

अहल्या : गुरुदेव, मेरा पति एक क्रूर नरपशु है। उसने अगणित हत्याएँ की हैं। वह मेरी हत्या को भी आया था।

स्वामी : ईश्वर उसे क्षमा करें। बेटी, तुमने बहुत दुख भोगा है।

[जीवानन्द का प्रवेश]

जीवानन्द : गुरुदेव, दीक्षा का मुहुर्त बीतता जा रहा है।

स्वामी : दीक्षा के लिए किसी मुहूर्त की जरूरत नहीं है। जाओ, हम जल्दी ही आयेंगे।

[जीवानन्द का प्रस्थान]

अहल्या : गुरुदेव, मेरी बचपन की सहेली विमला के कमरे में एक चित्र था। काली साड़ी में लिपटी एक लड़की बुरी तरह से रो रही थी। उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा रखा था। मैंने विमला से पूछा, वह एक बलात्कारित युवती का चित्र था।

स्वामी : समाज दिनों-दिन क्रूर हो रहा है।

अहल्या : मुझे लगा कि वह मेरा चित्र है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ था। मैंने भी अपना चेहरा ढक लिया था। मैं किससे आँख मिला सकती थी।

स्वामी : बड़े दुख की बात है।

अहल्या : मैं जिस घर में जन्मी थी, उसमें न दीवारें थीं, न छत। बचपन में ही पिता की मृत्यु हो गयी। माँ ने शायद मेरा रूप देखकर नाम रखा—अहल्या। आपने रामायण की अहल्या की कहानी जरूर पढ़ी होगी। मैं उसी अहल्या का भाग्य लेकर जन्मी थी। एक अनकिए पाप ने फिर एक खूबसूरत लड़की को एक जीवित पाषाण में बदल दिया।

स्वामी : उसके बाद।

अहल्या : मुहल्ले के लोग अपराधी युवक को पकड़ कर लाए। वह एक अच्छे परिवार का बिगड़ा हुआ लड़का था। बहुत दबाव देने पर भी वह मुझसे शादी करने को तैयार नहीं हुआ। वह अपने एक मित्र को तैयार कर लाया। यह प्रकृति का क्रूर मज़ाक ही था कि नये लड़के का नाम गौतम था पर वह रामायण का तपस्वी गौतम मुनि नहीं, शराब की दुकान का मालिक रंगदार, गौतम दादा था।

स्वामी : बेटी, तूने बहुत सहा है।

अहल्या : माँ मजबूर थी। एक कलंक ने हमें समाज की परिधि से बाहर पहुँचा दिया था। भावरों के समय मैंने गौतम को पहली बार देखा। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने अपने जीवन में इतना कुरूप आदमी नहीं देखा था।

स्वामी : किसी के मूल्यांकन के लिए सिर्फ चेहरा काफी नहीं होता।

अहल्या : वह कुरूप ही नहीं, बेहद क्रूर भी था।

स्वामी : बेटी, मैं तुम्हारा दुख समझ सकता हूँ।

अहल्या : मैंने नियति के निर्णय को स्वीकार कर लिया। मैं पूरी तरह समर्पित हो गयी। लेकिन गौतम ने मुझे स्वीकार नहीं किया। उसमें भयानक हीन भावना थी। उसे मुझ पर विश्वास नहीं था। वह किसी पर विश्वास नहीं करता था। मैंने एक घर

बनाना चाहा। पर अविश्वास की आँधी में धीरे-धीरे सब कुछ ढह गया।

(संगीत वादन)

द्वितीय दृश्य

[**स्थान**–गौतम की खोली। **समय**–रात के दो बजे।]

(दरवाजे पर दस्तक)

अहल्या : कौन?

(दरवाजे पर दूसरी दस्तक)

(दरवाजा खुलता है)

गौतम : क्यों री चुड़ैल दरवाज़ा खोलने में इतनी देर लगती है?

अहल्या : तुमने अपना नाम नहीं कहा था।

गौतम : क्यूं री, तुझे वार्निंग बेल चाहिए। किसी यार के साथ बैठी थी।

अहल्या : मैं हरेक दस्तक पर दरवाज़ा नहीं खोल सकती। शाम ढलते ही न जाने कितने लोग आते हैं। दरवाज़ा पीटते हैं।

गौतम : कौन हैं वे लोग।

अहल्या : मैं नहीं जानती। आवाज़ों से लगता है कि वे सभी नशे में धुत हैं।

गौतम : वे सब मेरे ग्राहक हैं। दारू की तलाश में आते हैं। खबरदार, अगर उन्हें कुछ कहा तो तेरा भुरता बना दूँगा।

अहल्या : कहने-सुनने का सवाल ही नहीं है। मैं दरवाज़ा ही नहीं खोलती। तुम बहुत देर से आते हो। मैं हरेक क्षण एक नरक झेलती हूँ।

गौतम : नरक, तो यह खोली नरक है! साली, बहुत बोलना सीख गयी है।

अहल्या : क्या तुम जल्दी नहीं आ सकते। शाम होते ही बस्ती आवाज़ों

की आँधी में थरथराने लगती है। मैं डर से काँपती रहती हूँ।

गौतम : तुझे किसका डर है। तू तो छम्मकछल्लो है। न जाने कितने घाटों का पानी पी चुकी है।

अहल्या : सुनो, यह बस्ती ठीक नहीं है। हमें कोई दूसरी जगह तलाश करनी चाहिए।

गौतम : अच्छा तो तुझे मैरिन ड्राइव का फ्लैट चाहिए।

अहल्या : मैरिन ड्राइव की कौन बात करता है। हम किसी शरीफ टोले में रह सकते हैं।

गौतम : शरीफ टोला। क्या यह भटियारों की बस्ती है। चुड़ैल, यहाँ हमारी दुकानदारी है। हम शरीफ़ों के बीच जाकर क्या करेंगे?

अहल्या : बहुत देर हो गयी। चलो खाना खा लो।

गौतम : क्यूं री, यह खत किसका है?

अहल्या : मेरी सहेली की चिट्ठी है।

गौतम : यह सहेली कहाँ से पैदा हो गयी?

अहल्या : तुम उसे जानते हो। वह मेरी शादी में शामिल हुई थी।

गौतम : इस सहेली का नाम क्या है?

अहल्या : विमला। बहुत अच्छे घर की लड़की है।

गौतम : चुडैल, क्यों झूठ बोल रही है? यह विमला नहीं, विमल की चिट्ठी है।

अहल्या : यह विमल कौन है?

गौतम : विमल वही लड़का है जिसके साथ तूने मुँह काला किया था।

अहल्या : यह सरासर झूठ है। तुम्हें झूठा इलजाम लगाते शर्म नहीं आती।

गौतम : मुझसे जबान लड़ाती है। हरामजादी, आज मैं सारा हिसाब-किताब साफ कर देता हूँ।

[अहल्या को छाते से मारता है। अहल्या आह-ऊह करती है।]

अहल्या : रोज़-रोज़ क्यों मारते हो। एक बार ही जान से मार दो।

गौतम : जान लेने से क्या होगा? मेरे पाँच हजार रुपये कैसे वसूल होंगे।

अहल्या : पाँच हजार। यह क्या कह रहे हो?

गौतम : बड़ी भोली बनती है। मैंने तुझसे शादी करने के लिए विमल को पाँच हजार रुपये दिए थे?

(संगीत वादन)

तृतीय दृश्य

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

अहल्या : इस घटना ने मुझे बिलकुल तोड़ दिया। कानों में हर समय एक ही स्वर गूँज रहा था—पाँच हजार··· पाँच हजार। प्रेम, समर्पण, कर्त्तव्य—ये सब कितने खोखले शब्द हैं। पैसे के सामने सभी संबंध दम तोड़ देते हैं।

पर यह तो रात की शुरुआत थी। एक-एक कर तारे टूटते गये और में अंधेरे में छटपटाने लगी।

स्वामी : सब कुछ कहो बेटी।

अहल्या : एक दिन गौतम के साथ एक नाजुक-सा नवजवान आया। नाम था इंदर। मैंने हँसकर पूछा—राजा इंदर! वह खिलखिला कर हँस पड़ा। मुझे उसकी हँसी अच्छी लगी।

इंदर मुंबई और खाड़ी मुल्कों के बीच बिजनेस करता था। गौतम इंदर की लगातार खुशामद कर रहा था। मैंने गौतम को कभी इतना सभ्य और शिष्ट नहीं देखा था।

गौतम दुकान चला गया। इंदर के पास बातों का खज़ाना था। मुम्बई का शेयर मार्केट, खाड़ी देशों का सोना, फिल्मी दुनिया के किस्से। मैं उत्सुकता पूर्वक सब कुछ सुन रही थी। उसके शब्दों में संगीत था। मेरी आँखों के सामने नयी खिड़कियाँ खुल रही थीं। हवा में रजनीगंधा की महक और कोयल की कूक थीं।

Scanned with OKEN Scanner

उस रात गौतम घर नहीं आया। मैं परेशान थी। इंदर का व्यवहार धीरे-धीरे अमर्यादित हो रहा था। मैंने हल्का-सा विरोध किया पर उसे रोकना असंभव था। धीरे-धीरे मेरा प्रतिरोध भी शिथिल हो गया। उस रात एक मिथक फिर दुहराया गया। घड़ी भर सुख के लिए तापसी अहल्या ने जीवन-भर का शाप खरीद लिया।

सुबह होने से पहले मैं इंदर के साथ मुम्बई पहुँच गयी। तय हुआ कि फिलहाल मैं उसकी मौसी के पास रहूँगी। फिल्म में काम मिलने के बाद वह मेरे लिए स्वतंत्र फ्लैट की व्यवस्था करेगा।

मौसी का रंग-ढंग देखकर मैं आश्चर्य में पड़ गयी। उसकी बातचीत, हाव-भाव सबमें एक पेशेवर औरत का लहज़ा था। वह मुझे इस तरह देख रही थी जैसे एक कसाई बकरे को खरीदने से पहले गोश्त का अंदाज़ा लगा रहा हो।

(संगीत वादन)

चतुर्थ दृश्य

नूरा : (गायन)

बनाओ बतियाँ, चलो काहे को झूठी।
वहीं जाओ जहाँ रहे सारी रतियाँ।
कदर पिया हमसे ना बोलो,
जानू, मैं जानू तोरी सारी घतियाँ।

[मलका का प्रवेश]

मलका : नूरा, जा नयी लड़की को बुला ला।

नूरा : मौसी, लड़की खूबसूरत है मगर…।

मलका : मगर क्या?

नूरा : शऊर नहीं है। सजाना-संवारना पड़ेगा।

मलका : खाँटी सोना है। मैं माल पहचानती हूँ। मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता।

[नूरा का प्रस्थान]

मलका : खान साहब।

[खान का प्रवेश]

खान : हुक्म मालकिन!

मलका : एक नयी लड़की आयी है। उसकी तालीम शुरू करना होगा।

खान : बेहतर है। चार बजे तक आ जाऊँगा।

[नूरा और अहल्या का प्रवेश]

मलका : आओ बैठो। क्या नाम है?

अहल्या : अहल्या।

मलका : वल्लाह, यह भी कोई नाम है। आज से तुम्हारा नाम जौली होगा।

नूरा : वाह कितना खूबसूरत नाम है। सुनो, मैं तुम्हें जौली कहूँगी। तुम मुझे आपा कहना।

मलका : संगीत जानती हो?

अहल्या : थोड़ा बहुत।

मलका : उससे काम नहीं चलेगा। आज से तालीम शुरू होगी। कल डांस के मास्टर आएँगे।

अहल्या : इंदर जी कब आएँगे?

मलका : इंदर जी अब नहीं आएँगे। उनको बिलकुल भूल जाओ।

अहल्या : इंदर जी ने मुझे फिल्मों में काम दिलाने को कहा था।

मलका : यह मुम्बई का सबसे बड़ा स्टूडियो है। यहाँ रोज नयी कहानी बनती-बिगड़ती है। नये हीरो, नयी हीरोइन और क्या चाहिए।

अहल्या : मौसी, क्या मैं अपनी माँ से मिल सकती हूँ।

मलका : बिलकुल नहीं। उन सब रिश्तों को बिलकुल भूल जाओ। अब तुम्हारा मैका-ससुराल सब यहीं है।

खान : बेबी, भागने की कोशिश मत करना। उससे कोई फायदा नहीं होगा।

मलका : सुनो, मैंने तुम्हारे लिए बीस हजार नकद दिए हैं। हमेशा याद रखना, यह मलिका बाई का कोठा है। इस दरवाज़े में घुसने के बाद बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

(संगीत वादन)

पाँचवाँ दृश्य

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

अहल्या : चिड़िया पूरी तरह से जाल में फँस चुकी थी। उस जाल को काटना उसके बस की बात नहीं थी। धीरे-धीरे उसने जाल से सुलह कर लिया।

स्वामी : नहीं बेटी, यह पूरा सच नहीं है। जीने की इच्छा नहीं मरती।

अहल्या : मैंने मलका मौसी को अपना गार्जियन मान लिया। मेरे सामने अब कोई लक्ष्य नहीं रह गया था। अहल्या मर गयी थी। जौली भी एक बदरंग कथरी ओढ़कर जिन्दा थी।

गुरुदेव, घटनाओं पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं रह गया था। गौतम, इंदर, मौसी—किसी का दोष नहीं था। मैंने ही एक बड़ा जुआ खेला था। अब रोने से क्या फायदा था?

स्वामी : गौतम की कोई सूचना मिली?

अहल्या : गौतम से मेरा सीधा संपर्क नहीं था। विमला के पत्रों से कुछ सूचनाएँ मिलती थीं। विमला बहुत खुले दिल की लड़की थी। वह मुझसे गहरी सहानुभूति रखती थी।

गौतम किससे शिकायत कर सकता था। उसने इंदर के साथ एक रात का सौदा किया था। उसे क्या मालूम था कि यह सौदा इतना महँगा पड़ेगा।

गौतम ने मुझे खोजने की कोशिश की। पर एक महानगर में एक लड़की को खोजना भूसे के ढेर में सुई खोजने के बराबर था।

अंत में वह थक कर बैठ गया। अपना ग़म भूलने के लिए वह शराब और शबाब में बुरी तरह से डूब गया। शराब की बोतल और एक नयी लड़की—उसके जीवन की धुरी बन गयी।

कभी-कभी मैं सोचती थी कि क्या मैं उसकी बर्बादी के लिए जिम्मेदार हूँ। फिर मेरी बर्बादी के लिए कौन गुनहगार था।

अचानक एक घटना ने सब कुछ बदल दिया।

मलका का कोठा रइसों का अड्डा था। वहाँ मामूली आदमियों का प्रवेश नहीं था।

एक दिन गौतम मलका के कोठे पर चढ़ गया।

(संगीत वादन)

छठा दृश्य

[**स्थान**—मलका बाई का कोठा। **समय**—रात्रि के नौ बजे।]

नूरा : **(गायन)**

कदर प्यारे, लागे तोसे नैन।

[गौतम का प्रवेश]

खान : कहिये बाबू साहब, कैसे चले?

गौतम : लोग मलका जान के मुजरे की बहुत तारीफ करते हैं। आज का मुजरा मेरे नाम पर रहेगा।

खान : बाबू साहब, बाराबंकी के नवाब साहब ने आने की खबर दी है। मुआफ करेंगे।

गौतम : कोई बात नहीं। नवाब साहब को भी आने दो।

खान : यह नामुमकिन है। आप आज तशरीफ ले जाएँ।

गौतम : तुम मुझे पहचानते नहीं हो। मैं बांदरा का दादा हूँ। मेरी मरज़ी के बिना पेड़ की एक पत्ती भी नहीं डोलती।

Scanned with OKEN Scanner

खान : बाबू साहब, आपके माथे पर शराब चढ़ गयी है। आपका घर लौट जाना ही मुनासिब होगा।

गौतम : सुनो खान, मैं अपनी मरजी का मालिक हूँ। बुलाओ मलका बेगम को। आज गौतम के नाम पर मुजरा होगा।

[मलका का प्रवेश]

मलका : खान कौन है? बुरी तरह से चीख रहा है।

खान : कहता है कि रंगदार हूँ। नशे में धुत है।

मलका : वल्लाह, यह कैसा रंगदार है! यह तो शक्ल से कुंजड़ा लगता है। या खुदा, मैंने सारी उम्र ऐसा बदसूरत इंसान नहीं देखा।

गौतम : वाह, कोठे वाली भी पैसा नहीं, सूरत देखने लगी है।

खान : जाओ बाबू साहब, जल्दी जाओ।

मलका : लात के देवता बात से नहीं मानते। लगाओ दो हाथ, नशा उतर जाएगा।

[खान गौतम को पीटता है]

गौतम : साले, सबको बर्बाद कर दूँगा। इस बदनाम गली को नेस्तनाबूद कर दूँगा।

(संगीत वादन)

साँतवाँ दृश्य

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

अहल्या : गुरुदेव, गौतम के माथे पर खून चढ़ गया था। उसने भयानक बदला लिया। मैं गौतम को इतना उग्र और क्रूर नहीं समझती थी।

पहले उसने गरीब कॉल गर्ल्स को मारना शुरू किया। वह इन लड़कियों को पैसा देता। फिर एकांत स्थानों पर ले जाकर इनकी हत्या कर देता। पोस्ट मार्टम से एक आश्चर्यजनक

बात सामने आयी। उसने इन लड़कियों की हत्या के बाद बलात्कार किया था।

मलका बाई का कोठा भी उसके क्रोध से नहीं बच सका। उस दिन खान कहीं गया हुआ था। मलका बाई उसे देखकर भाग खड़ी हुई। उसने नूरा की हत्या कर दी। नूरा बहुत अच्छी लड़की थी। उसकी मौत से मैं लगभग टूट गयी।

नूरा की मौत से पूरी गली में दहशत फैल गयी। मलका बाई का कोठा उजड़ गया। बहुत-सी लड़कियाँ भाग गयीं। मलका बाई ने मुझसे भी चले जाने को कहा। पर मैं कहाँ जा सकती थी। मुझे जिन्दगी से कोई मोह नहीं रह गया था।

एक दिन मेरे दरवाज़े पर भी मौत ने दस्तक दी। उसने पहली निगाह में मुझे नहीं पहचाना। पर मैंने जब उसे नाम से पुकारा तो वह अचकचा गया।

आठवाँ दृश्य

[**स्थान**–मलका बाई का कोठा। **समय**–संध्या काल]

अहल्या : गौतम, किसे ढूँढ़ रहे हो?

गौतम : कौन है तू, जौली कहाँ है?

अहल्या : मैं हूँ अहल्या, पहले मुझसे मिलो।

गौतम : नीच, चुड़ैल, तू यहाँ छिप कर बैठी है?

अहल्या : छिप कर नहीं बैठी हूँ। यह पूरा बाज़ार है। बोलो क्या चाहिए? मुजरा सुनने आये हो?

गौतम : हरामजादी, मैं तुझे जान से मार डालूँगा। ऐसी बदचलन औरत को जीने की कोई जरूरत नहीं है।

अहल्या : गौतम, तुम मुझे जान से मार सकते हो। पर हत्या और

बलात्कार के मुजरिम को दूसरे के चरित्र पर उँगली उठाने का हक नहीं है।

गौतम : चुड़ैल, आज सड़कों और गलियों में जो खून बह रहा है उसके पीछे तेरा ही पाप है।

अहल्या : मेरा पाप! गौतम, पहले मैं पति और परमेश्वर में फर्क नहीं करती थी। पर जब पति ने ही पत्नी की अस्मत का सौदा किया तो मैंने पति की मूर्ति को मंदिर से बाहर रख दिया।

गौतम : यह सरासर झूठ है।

अहल्या : यह झूठ नहीं है। कौन था इंदर? खाड़ी सोने का स्मगलर। उसने तुम्हें बिजनेस में हिस्सा देने का वादा किया। जवाब में तुमने अपनी पत्नी को एक चाँदी की तश्तरी में रखकर उसके हवाले कर दिया।

गौतम : यह सच नहीं है। उस रात मुझे लौटने में देर हो गयी थी।

अहल्या : यह दूसरा झूठ है। इंदर सुन्दर था। उसका बातचीत करने का तरीका बहुत आकर्षक था। उसने मुझे अनेक प्रलोभन दिए थे। पर मैं लड़ना चाहती थी—अपनी कमजोरी से, उसके आकर्षण से, तुम्हारी साजिश से। मैं सारी रात लड़ती रही। पर अंत में सब कुछ ढह गया।

गौतम : मैंने तुम्हें उसके साथ भागने को नहीं कहा था।

अहल्या : हाँ, तुमने नहीं कहा था। पर मैं जीना चाहती थी।

गौतम : दुष्ट, क्या तुझे अपनी गलती का एहसास नहीं है।

अहल्या : गौतम, बचपन में माँ एक कहानी सुनाती थी। एक सती अपने कंधे पर कोढ़ी पति को उठाकर वेश्या के घर पहुँचाती थी। क्या तुम भी अपनी पत्नी से ऐसी ही उम्मीद करते थे?

गौतम : पति को जहन्नुम में पहुँचा कर तुम तो सुखी हो न?

अहल्या : मेरे सुख की बात छोड़ो। सुना है कि इंदर का भेजा सोने का एक पूरा कनसाइनमेंट तुम्हारे हाथ लग गया है। शराब और शबाब की नदी बह रही है।

गौतम : वह दौर खत्म हो गया। मैंने संकल्प लिया है कि पाप की इन गलियों को पूरी तरह खत्म कर दूँगा।

अहल्या : गौतम, सत्रह निर्दोष लड़कियों का खून बह चुका है। तुम्हारे सफाई अभियान के लिए और कितने खून की जरूरत होगी।

गौतम : यह एक पवित्र युद्ध है। मैंने एक आग जला दी है। गुनाह की इन गलियों में मौत के पाँव पड़ चुके हैं।

अहल्या : तुम इसे पवित्र युद्ध कहते हो। सुना है कि तुमने लड़कियों की हत्या के बाद उनके शव के साथ बलात्कार किया है।

गौतम : हाँ, यह सच है। उनके लिए मौत की सज़ा काफी नहीं थी। मैं उनका अपमान करना चाहता था।

अहल्या : गौतम, तुम एक वहशी हो! क्रूर नरपशु हो!

गौतम : कोई क्या कहता है इससे मुझे कोई फरक नहीं पड़ता। घृणा में बहुत ताकत होती है। एक पूरी लड़ाई के लिए मन में नफरत की आग जलाना पड़ता है।

अहल्या : गौतम, तुम किससे लड़ रहे हो! ये गरीब लड़कियाँ नफरत नहीं, दया की पात्र हैं। तुमने इनकी ऊपरी चमक-दमक को देखा है, इनके आँसू नहीं देखे। इनकी बर्बादी नहीं देखी।

गौतम : वह सब धोखा है।

अहल्या : गौतम, तुम शराब के ठेकेदार थे। इस बिजनेस में लाखों लोग हैं। ये लोग करोड़ों घरों को बर्बाद कर रहे हैं। तुम इन लोगों के लिए क्यों नहीं लड़ते।

गौतम : लोग खुशी से पीते हैं।

अहल्या : यह सबसे बड़ा झूठ है। हम लोग जिस बस्ती में रहते थे वहाँ हर समय शराब की नदी बहती थी। विरोध करने पर औरतों की पिटाई होती थी। उनकी रुलाई का कोरस लगातार चलता रहता था।

गौतम : औरतों को रोने की आदत होती है।

अहल्या : गौतम, यह इंदर कौन है? यह क्या कर रहा है? उसकी साझेदारी कहाँ तक ठीक है?

गौतम : कोई आदमी एक साथ सभी मोर्चों पर नहीं लड़ सकता।

अहल्या : गौतम, क्या तुम्हें मालूम है कि ये मासूम लड़कियाँ किन परिवारों से आती हैं। ये भेड़-बकरियों की तरह खरीदी-

बेची जाती हैं। इनकी पूरी जिन्दगी गिरबी रहती है। अपनी पूरी जवानी मोम की तरह गलाकर उन्हें कुछ हासिल नहीं होता।

गौतम : मुझे मत समझाओ। मैं सब कुछ जानता हूँ।

अहल्या : गौतम, इन लड़कियों को निर्दयता पूर्वक मारने से क्या होगा? तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जो इस जहरीली व्यवस्था को चरखी की तरह घुमा रहे हैं।

गौतम : तुम एक झूठी वकालत कर रही हो। इन गलियों में दोज़ख की आग जल रही है। नरक की ये बेटियाँ दूसरों को भी इस आग में जला रही हैं।

अहल्या : सुनो, हम बहस से किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकते। मेरे पास एक रिवाल्वर है। कोई ग्राहक गलती से छोड़ गया था। इसे लो और एक निरर्थक जीवन का अंत कर दो।

गौतम : यह क्या कह रही हो।

अहल्या : मैं सब कुछ देख चुकी हूँ। सब कुछ भोग चुकी हूँ। तुमने कसाई की दुकान पर कछुओं को बिकते देखा है। जीवित कछुए के मांस को काट-काट कर बेचा जाता है। इस कोठे पर मैं भी ऐसे ही खंड-खंड मर रही हूँ।

गौतम : तुमने सब कुछ गड़बड़ कर दिया। जौली कहाँ है।

अहल्या : जौली मेरा ही नाम है। मौसी ने नया नाम रखा था। लो यह रिवाल्वर, खत्म कर दो यह किस्सा।

गौतम : सुनो, मैं फिलहाल जा रहा हूँ। सब कुछ फिर से सोचना होगा।

अहल्या : गौतम, गलत मत समझना। पुलिस ने तुम्हें खोज लिया है। तुम चारों तरफ से घिर चुके हो। तुम्हारे लिए शूट ऐट साइट का आर्डर है।

गौतम : तुम मुझे डरा रही हो।

अहल्या : जाओ गौतम, सरेंडर करो। नहीं तो कुत्ते की मौत मरोगे।

गौतम : माई गौड।

(संगीत वादन)

नौवाँ दृश्य

[पहले दृश्य की पुनरावृत्ति]

स्वामी : उसके बाद।

अहल्या : गौतम ने बाहर निकल कर पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। पुलिस उसे गिरफ्तार कर थाने ले गयी।

स्वामी : विचित्र कहानी है।

अहल्या : गौतम के जाने के बाद मैंने तय किया कि जो हुआ बहुत हुआ। अब इस नरक में नहीं रहूँगी।

मैंने अखबार में आपके आश्रम के बारे में पढ़ा था। पर यहाँ पहुँचाकर भीतर घुसने की हिम्मत नहीं हुई। बाहर बैठे-बैठे बेहोश हो गयी। सुनती हूँ कि भाई जीवानन्द मुझे उठा कर आश्रम में ले आये थे।

स्वामी : बेटी, गौतम का क्या हुआ?

अहल्या : पूरी बात नहीं जानती। पुलिस ने उस पर मुकदमा चलाया था। शायद वह जेल में हो।

स्वामी : बेटी, तुमने बहुत दुख उठाया है। तुम्हारे बयान से मुझे बहुत खुशी हुई है।

अहल्या : गुरुदेव, एक पूरा जीवन व्यर्थ हो गया। मुझसे अधिक कुटिल और पापी कौन होगा।

स्वामी : बेटी, तुम्हारे प्रायश्चित के दिन पूरे हो गए। आज तुम एक नये जीवन में प्रवेश करोगी।

[जीवानन्द का प्रवेश]

जीवानन्द : गुरुदेव, एक सज्जन आपसे मिलना चाहते हैं।

स्वामी : उन्हें ले आओ।

[जीवानन्द का प्रस्थान]

स्वामी : बेटी, भूल जाओ सब कुछ। भगवान् ने तुम्हें फिर से जीने का अवसर दिया है।

[जीवानन्द और गौतम का प्रवेश]

अहल्या : अरे गौतम तुम!

गौतम : हाँ अहल्या।

अहल्या : गौतम, सुना था तुम्हें आजीवन कारावास की सजा मिली थी।

गौतम : हाँ, यह सच है। पर ईश्वर की कुछ और मर्जी थी। मुकदमे के दौरान मुझे पागलपन का दौरा पड़ा। सरकार ने मुझे मेंटल हास्पिटल में भेज दिया। दस साल के बाद मुझे छोड़ दिया गया।

अहल्या : ईश्वर की कृपा है।

गौतम : पागलखाने में रहकर मुझे नया एहसास हुआ। मुझे जिन्दगी के सभी पहलुओं को देखने का अवसर मिला। मेरे अंदर एक नये इंसान का जन्म हुआ। वहाँ हर रविवार को एक स्वामी जी आते थे। उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया। मैं आपके लिए उनका अनुशंसा पत्र लाया हूँ।

स्वामी : मैं सब कुछ समझ गया। तुम्हें अब किसी परिचय-पत्र की जरूरत नहीं है। मैं तुम दोनों को साथ-साथ दीक्षा दूँगा। आप दोनों साथ-साथ दुहराइये।

स्वामी : तमसो मा ज्योर्तिगमयः।

गौतम अहल्या : तमसो मा ज्योर्तिगमयः।

स्वामी : असतो मा सद् गमयः।

गौतम अहल्या : असतो मा सद् गमयः।

स्वामी : मृत्योमा अमृतं गमयः।

गौतम अहल्या : मृत्योमा अमृतं गमयः।

(संगीत वादन)

तुम्हारे सुनहरे कल के लिए

पात्र

पत्रकार संजय	30 वर्ष
मेजर बलराम सिंह	80 वर्ष
द्वारिका नागी	45 वर्ष
सुरेन्द्र नागी	25 वर्ष
श्रीमती सरमा नागी (लिली)	75 वर्ष
चंदन बाला	20 वर्ष
नेताजी सुभाषचंद बोस	

कथासार

कोहिमा के बाहर एक युद्ध-स्मारक है। उसमें मरने वाले सैनिकों का देश के नाम एक संदेश है—भाइयो, हमने तुम्हारे सुनहरे कल के लिए अपने आज का बलिदान कर दिया।

ये द्वितीय महायुद्ध के बाद की कहानी है—पृष्ठभूमि है भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र।

यह नेताजी सुभाषचंद्र बोस की नेशनल आर्मी की उत्तर-कथा है।

यह मेजर बलराम सिंह पत्नी सरमा नागी, पुत्र द्वारिका और पौत्र सुरेन्द्र की कहानी है।

यह एकांकी कुछ सवाल भी उठाता है कि आखिर सैनिक किन लक्ष्यों के लिए अपना बलिदान करते हैं।

क्या युद्ध के बाद समाज को ये लक्ष्य प्राप्त होते हैं?

प्रथम दृश्य

[स्थान–कोहिमा का एक उपनगर]

(दूर से एक लोकगीत का स्वर)

गीत– गंगा कहाँ से आये रे,
गंगा कहाँ जाये रे।

[पत्रकार संजय का प्रवेश]

संजय : सब कुछ कितना सुंदर है। पूरब में बरमा की नीली पहाड़ियाँ, बाँस के जंगल और बीच में नदी-सा बहता मादक संगीत। लोगों ने कश्मीर को स्वर्ग कहा है। भारत का यह उत्तर-पूर्वी क्षेत्र धरती का दूसरा स्वर्ग है।

[एक नागरिक का प्रवेश]

संजय : ब्रदर, मेजर बलराम सिंह का कौन-सा मकान है?

नागरिक : यहाँ से करीब दो किलोमीटर पर कोहिमा का कैंटूमेंट है। वहाँ पूछने पर सब कुछ पता चल जाएगा।

संजय : पर ब्रदर, मेजर बलराम सिंह ऐक्टिव सरविस में नहीं है। वे आई. एन. ए. के रिटायर्ड मेजर हैं।

नागरिक : अच्छा-अच्छा, नाम तो नहीं जानता पर सामने पहाड़ी पर एक बूढ़े मेजर साहब रहते हैं। वे नेशनल आर्मी में लड़े थे।

[मशीन गन की आवाज़]

संजय : ब्रदर, यह कैसी आवाज़ है?

नागरिक : यहाँ से बरमा बार्डर बहुत पास है। फिर कैंटूमेंट है। यहाँ धूम-धड़ाका चलता रहता है।

संजय : माई गौड, सब कुछ कितना बेमेल है। भूपेन हजारिका के गीत और बार्डर का गनफायर। अच्छा ब्रदर, थैंक यू वेरी मच।

(संगीत वादन)

(कॉल बेल की आवाज़)

(दरवाजा खुलता है)

द्वारिका : हलो, आप किसको चाहते हैं?

संजय : मैं हूँ संजय कुमार, बिहार टाइम्स का पत्रकार। नार्थ-ईस्ट को कवर कर रहा हूँ। मेजर बलराम सिंह से मिलना चाहता हूँ।

द्वारिका : लेकिन पापा तो मम्मी के साथ मंदिर गए हैं।

संजय : वे लोग कब तक आएँगे।

द्वारिका : कुछ देर हो सकती है। उन्हें आर्मी के कैंटूमेंट में भी जाना था।

संजय : मेजर बलराम सिंह तो आई. एन. ए. में थे न। सुना है कि वे नेताजी सुभाषचंद्र बोस के बहुत क्लोज़ थे।

द्वारिका : हाँ, ऐसा ही था। वे नेताजी की सिक्यूरिटी के इनचार्ज थे।

संजय : आपकी फैमिली का कोई मेंबर कोहिमा कैंटूमेंट में है।

द्वारिका : इट इज ए फैमिली आफ सोल्जरस्। हमारा बेटा आसाम राइफल्स में लेफ्टिनेंट है।

संजय : क्या उसकी पोस्टिंग कोहिमा बार्डर पर है।

द्वारिका : नहीं उसकी पोस्टिंग डिब्रूगढ़ में थी पर आसाम के उग्रवादियों ने उसका अपहरण कर लिया। यह घटना नेशनल प्रेस में भी आ चुकी है। हम लोग फिलहाल बहुत टेंशन में हैं।

संजय : वेरी सॉरी। लेफ्टिनेन्ट सुरेन्द्र का कुछ पता चला?

द्वारिका : सरकार को पता है। शायद सरकार आतंकवादियों से बात कर रही है पर अभी तक कोई नतीजा नहीं निकला।

संजय : आप भी आर्मी में हैं?

द्वारिका : मैं बी. एस. एफ. में सूबेदार-मेजर था। सियाचिन की लड़ाई में आई लॉस्ट ए लेग। मुझे रिटायरमेंट दे दिया गया।

संजय : ओ माई गौड। मैंने नोटिस नहीं किया। शायद आपका बायाँ पैर डैमेज्ड है।

द्वारिका : बायाँ पैर है ही नहीं। यह फाल्स लेग है। पैर में गोली लगी थी। उससे शायद मैं बच जाता। पर फ्रॉस्ट ने बर्बाद कर दिया।

संजय : मिस्टर सिंह, यू आर रीयली ए ब्रेव परसन।

द्वारिका : थैंक यू। बाई द वे, हमारा सरनेम सिंह नहीं, नागी है। मम्मी नागालैंड के अंगामी कबीले की हैं। हमने मम्मी के जाति नाम को स्वीकार किया है।

संजय : वेरी गुड, आपके पापा ने बहुत अच्छा निर्णय लिया। आज से पचास साल पहले यह काम तो और भी मुश्किल रहा होगा।

द्वारिका : यू आर राइट। वी आर प्राउड आफ अवर पापा एंड मम्मी।

संजय : बाई द वे, मेजर बलराम सिंह और आपकी मम्मी की एज क्या है?

द्वारिका : पापा इज़ एट्टी-प्लस। मम्मी इज़ सेवेन्टी-फाइव। पर यहाँ का हवा-पानी बहुत अच्छा है। एज इज़ नो प्राब्लेम हीयर।

संजय : लगता है कि आपके पापा-मम्मी आ रहे हैं। व्हाट ए ब्यूटीफुल पेयर।

[मेजर बलराम सिंह और पत्नी सरमा नागी का प्रवेश]

द्वारिका : पापा, क्या हुआ? सुरेन्द्र का पता चला?

बलराम : पता तो है ही। आर्मी को मालूम है। सरकार को मालूम है। अल्फा ग्रुप ने भी कबूल किया है।

द्वारिका : फिर क्या प्राब्लेम है?

बलराम : टेररिस्ट्स ने नयी माँगें रखी हैं। वे बड़े राजनीतिक मुद्दे उठा रहे हैं। सरकार इन माँगों को मानने के लिए तैयार नहीं है।

द्वारिका : तब क्या होगा?

बलराम : टेररिस्ट्स ने पन्द्रह दिन का समय दिया है। उसके बाद वे सभी कैदियों की हत्या कर देंगे।

द्वारिका : आर्मी कुछ नहीं कर रही है।

बलराम : आर्मी की अपनी सीमाएँ हैं। आज उनका यूनिट डे है। शाम को बड़ा खाना है। ब्रिगेडियर साहब ने निमंत्रण दिया है।

द्वारिका : लगता है कि अपहरित फौजियों का कोई माई-बाप नहीं रह गया है।

बलराम : नहीं उनके भी माँ-बाप हैं। इसीलिए मंदिर गया था। भगवान् के यहाँ प्रार्थना पत्र दे आया हूँ।

द्वारिका : पापा, ये हैं मिस्टर संजय, पत्रकार हैं। नार्थ-ईस्ट का टूर कर रहे हैं।

बलराम : अरे भइया, तू तो अपन देस के लगत बाडऽ।

संजय : हाँ, मैं पटना से आया हूँ। बिहार टाइम्स का पत्रकार हूँ।

बलराम : भइया, हम भोजपुर के बानी। का कहीं, एगो नागकन्या हमरा के मंत्र-तंत्र से बाँध देलस। हम जनम-कैदी हो गयनी।

सरमा : बलराम, तुम्हारा महाभारत क्या कहता है। अर्जुन ने नागकन्या चित्रांगदा को बाँधा था या चित्रांगदा ने अर्जुन को मायाजाल में फँसाया था।

बलराम : लिली, महाभारत पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है। अर्जुन हो या बलराम सिंह, हर बार स्त्री ही पुरुष का अपहरण करती है।

सरमा : बलराम, पुरुष मुद्दई भी होता है और जज भी। देवता भी पुरुषों का पक्ष लेते हैं।

द्वारिका : पापा, संजय जी बहुत देर से तुम्हारा इंतजार कर रहे थे।

बलराम : सारी भइया, तू इहाँ अइला, स्वागत बा। कुछ काम बा।

संजय : दादा जी, कोहिमा आया था। सोचा कि उस धरती का भी दर्शन कर लूँ जहाँ नेताजी के पैर पड़े थे। सोचा है कि वहाँ आपके साथ जाऊँ पर आप फिलहाल बहुत परेशान हैं।

बलराम : नहीं संजय जी, मैं आपके साथ चलूँगा। कोहिमा का बार्डर हमारे लिए पवित्र धरती है। वह हमारे लिए संकल्प और बलिदान की जमीन है।

संजय : दादा जी, सुना है कि वहाँ एक शिलालेख है—सैनिक का संदेश। देश-विदेश में उसकी बहुत चर्चा है।

बलराम : हाँ, वह एक अद्भुत शिलालेख है। उसका संदेश बहुत मार्मिक है।

सरमा : बलराम, तो तुम दोनों बार्डर पर जा रहे हो। लेकिन देर मत करना। मैं लंच पर तुम दोनों का इंतजार करूँगी।

बलराम : लिली, कोहिमा बार्डर हमारे लिए एक मंदिर का प्रांगण है। वेट मत करना। हमें देर हो सकती है।

(संगीत वादन)

द्वितीय दृश्य

[स्थान–कोहिमा का बार्डर।]

(चिड़ियों की चहचहाहट)

संजय : बलराम दादा, नागालैंड में बाँस के जंगल बहुत खूबसूरत हैं। सुना है कि यहाँ बाँस में फूल और फल लगते हैं। इनके फलों को खाने चूहों की फौज आती है।

बलराम : हाँ, हमने यहाँ बाँस को फूलते-फलते देखा है। इस क्षेत्र में वैसे भी बहुत चूहे हैं।

संजय : दादा, आप ही इंडियन आर्मी में थे। आप सुभाषचन्द्र बोस की सेना में कैसे पहुँचे।

बलराम : मैं भारतीय सेना में जीविका की खातिर गया था। युद्ध छिड़ने पर अंग्रेजों ने हमारी यूनिट को सिंगापुर भेज दिया। पर जापानी सेना के सिंगापुर विजय से सब कुछ बदल गया। हम युद्धबंदी बन गये।

उसी समय नेताजी बर्लिन से सिंगापुर आए। उन्होंने भारतीय सेना को देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने का आह्वान किया। हमने अपना बैज नोच कर फेंक दिया। अधिकतर सैनिकों ने नेताजी के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया।

संजय : दादा, सुभाषचन्द्र बोस की सेना कोहिमा से आगे नहीं बढ़ी। इसके क्या कारण थे?

बलराम : संजय जी, नेशनल आर्मी पूरी तरह से स्वतंत्र सेना नहीं थी। हमें जापानी सेना की योजनाओं के साथ सामंजस्य बैठाना पड़ता था। इंडिया के बार्डर पहुँचने के बाद जापानी सेना के लक्ष्य बदल गये। हिरोशिमा पर ऐटम बम गिरने पर जापान ने मित्र राष्ट्रों से सलाह किए बिना आत्म-समर्पण कर दिया।

संजय : बलराम दादा, सरमा मैडम से आपकी भेंट कहाँ और कब हुई। पहले लोग कहा करते थे कि असम की लड़कियाँ जादू जानती हैं। वे यू. पी., बिहार के युवकों को भेड़ बना देती हैं। आपने तो इस लोककथा को सचमुच सच कर दिया।

बलराम : भइया, सरमा मेरे लिए जिन्दगी का दूसरा नाम है। सरमा ने नेशनल आर्मी की नर्स-यूनिट को ज्वायन किया था। एक बार मैं कोहिमा के मोर्चे पर बुरी तरह से घायल हो गया था। सरमा ने मेरे लिए खून का प्रबन्ध किया। उसने बेहतरीन नर्सिंग की। उसकी सेवा के बिना मैं कभी का मर-खप गया होता।

संजय : युद्ध खत्म होने के बाद आप सरकार के द्वारा बंदी बनाकर लाल किले में रखे गये थे। आपके ऊपर देशद्रोह का मुकदमा चला था।

बलराम : हाँ, यह सब कुछ सच है पर कभी-कभी सच्चाई उपन्यास से अधिक रोचक होती है।

संजय : हाँ कभी-कभी ऐसा भी होता है।

बलराम : जापान के आत्म-समर्पण के बाद हमारी सेना बरमा की ओर हटी। हमें नेताजी की सुरक्षा की सबसे अधिक चिन्ता थी। नेताजी को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा कर हम लौट ही रहे थे कि अंग्रेजी सेना ने हमें गिरफ्तार कर लिया। हमें लाल किले में रखा गया।

सरमा कोहिमा में छूट गयी थी। हमारे बीच कोई संपर्क नहीं था। वह हमें खोजने अराकान के जंगलों में गयी और रास्ता भूल गयी।

इधर कई वर्षों के बाद हम जेल से छूटे। मैंने उसे बहुत तलाश किया। पर उसका कहीं पता नहीं था। मैं जहाज से रंगून गया। मैं अराकान के जंगलों में भी गया और महीनों भटकता रहा। एक दिन मैंने उसे एक पहाड़ी नदी के पास बैठे देखा। उसने पहले मुझे नहीं पहचाना। पहचानने पर वह लिपट कर घंटों रोती रही।

भइया, किस्मत ने हमें एक सूत्र में बाँध दिया है। जो कुछ हुआ है, ठीक ही हुआ है।

संजय : बड़ी मार्मिक कहानी है। दादा, यह गाँठ खून, पसीना और आँसुओं से जुड़ी है। यह सम्बन्ध कभी नहीं टूटेगा।

[मार्टर गन की आवाज़]

बलराम : हम अपनी मंजिल पर पहुँच गये। वह सामने कोहिमा घाटी है। आज़ाद हिन्द फौज का पहला मोर्चा यहीं लगा था।

सजय : सामने भारतीय सेना की छावनी है। यह गन-फायर उसी का था।

बलराम : बार्डर पर टेररिस्ट बहुत ऐक्टिव हो गये हैं। भारतीय सेना को एलर्ट रहना पड़ता है।

संजय : बहुत दुख की बात है। इसे तो पीस ज़ोन बना देना चाहिए।

बलराम : भइया, यही चबूतरा है जिस पर खड़े होकर नेताजी ने आज़ाद हिन्द फौज के जवानों को संबोधित किया था। वह साधारण भाषण नहीं था, एक-एक शब्द आग का शोला था। मैंने सब कुछ टेप किया है—

(संगीत वादन)

नेता जी सुभाष चंद बोस—बहादुर साथियो हमारे पास एक ही नारा है—जय हिन्द!

सामूहिक स्वर : जय हिन्द!

हमारे पास एक ही कार्यक्रम है—

दिल्ली चलो!

सामूहिक स्वर : दिल्ली चलो! नेताजी मैं आप सभी को दिल्ली चलने की दावत देता हूँ।

सामूहिक स्वर : हम दिल्ली चलने को तैयार हैं।

नेताजी : पर दिल्ली बहुत दूर है। इस सफ़र में आपको अनेक कुर्बानियाँ करनी पड़ेंगी। मुमकिन है कि आपको रोटी का एक टुकड़ा भी समय पर नसीब न हो।

मुमकिन है कि आपको अपनी जान भी कुरबान करनी पड़े।

पर मैं आपके सामने एक वायदा करता हूँ।

आप मुझे खून दीजिये।

मैं आपको आज़ादी दूँगा।

सामूहिक स्वर : भारत माता की जय। नेताजी जिन्दाबाद।

(संगीत वादन)

संजय : सब कुछ कितना उत्तेजक था। नेताजी के शब्द आज भी खून में उबाल पैदा करते हैं।

बलराम : भैया, वे हमारे सुनहरे दिन थे। सच कहो तो नेताजी के साथ बीते क्षण अनमोल थे। वह हमारी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत टुकड़ा था।

संजय : दादा, हमें वह शिलाखंड भी देखना है। किधर जाना होगा।

बलराम : वह शिलाखंड कोहिमा के कलक्टर कंपाउंड में लगा है। कोहिमा बार्डर पर बहुत से अंग्रेजी सैनिक मरे थे। सुनता हूँ कि इसे एक युद्ध स्मारक के रूप में लगाया गया था।

संजय : दादा, इसे जिसने भी लगाया हो पर इसके पीछे एक आम सैनिक का दर्द है। यह शिलालेख युद्ध नहीं, शांति का संदेश देता है।

बलराम : संजय भैया, आर्मी की एक जीप उधर आ रही है। मैंने उनसे कहा है। वे हमें लिफ्ट दे देंगे।

[मोटर रुकने की आवाज़]

एक आवाज़ : मेजर सिंह, कम इन।

बलराम : संजय भइया चलो। ड्राइवर हमें कलक्टर बंगला पर ड्राप करो।

एक आवाज़ : येस मेजर।

[मोटर चलने की आवाज़]

(मशीनगन की आवाज़ें)

[मोटर रुकने की आवाज़]

बलराम : संजय भइया, हम पहुँच गये।

[कार के गेट के खुलने की आवाज़]

संजय : वाह, इट्स ए ब्यूटीफुल मैमोरियल।

बलराम : उस समय मिस्टर पैंजी कोहिमा का डी. एम. था। यह सारा प्रोजेक्ट उसका ही है।

संजय : कितने खूबसूरत शब्द हैं।
(आवाज़) सुनो ए साथी, जब तुम देश लौटना तो देशवासियों से कह देना कि उनके सुनहरे कल के लिए हमने अपने आज

का बलिदान कर दिया।

बलराम : यह एक सैनिक का संदेश है। एक सैनिक इससे अधिक क्या कह सकता है।

संजय : ब्यूटीफुल वर्डस्! वेरी इमोशनल। शिलालेख के ये शब्द सिर्फ एक देश ही नहीं पूरे विश्व के लिए शांति का संदेश हैं।

बलराम : संजय भइया, साधारणतया सील्जर इमोशनल नहीं होता। पर कभी-कभी उसकी भावनाओं को गहरी ठोकर लगती है। पर दुनिया क्या एक सैनिक की कराह को सुन पाती है।

संजय : दादा, हम लोग अब चलें। मैडम हम लोगों के लिए वेट करती होंगी।

बलराम : येस वी गो नाऊ। यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। हम लोग वॉक कर सकते हैं।

संजय : हाँ, दादा चलो।

[गोली चलने की आवाज़]

संजय : दादा, तुम क्या सोचते हो। सैनिक के संदेश के पीछे समर्पण की भावना है या मात्र निराशा। फ्रस्ट्रेशन।

बलराम : भइया, मैं उस सैनिक की भावनाओं को तो नहीं पढ़ सकता। पर मैं अपने फ्रस्ट्रेशन की बात कह सकता हूँ।

संजय : दादा, तुम भी ऐसा महसूस करते हो।

बलराम : भैया, नेताजी के नेतृत्व में हम देश की आज़ादी के लिए लड़े। हम स्वतंत्रता के सैनिक थे या देशद्रोही, गद्दार! समूचे देश में हमारी जय-जयकार हुई। पर भारतीय सेना में हमारी वापसी क्यों नहीं हुई।

संजय : दादा, इस सवाल को इतने दिनों के बाद क्यों उठा रहे हो?

बलराम : हाँ, हमने इस सवाल को उस समय नहीं उठाया। हमने देशभक्ति का मुकुट पहन लिया था। हम भावनात्मक रूप से सातवें आसमान पर थे। पर देश क्यों चुप रहा। क्या यह मौन हमें अपमानित नहीं कर रहा था।

संजय : दादा, सुना है कि ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने कुछ तकनीकी आपत्तियाँ की थीं।

बलराम : यानि कि आज़ाद हिन्द फौज के भविष्य के बारे में एक विदेशी शासक ने अंतिम फैसला किया।

संजय : बाबा, तुम शायद ठीक कहते हो।

बलराम : संजय भैया, मैंने कभी कोई शिकायत नहीं की। मेरा इकलौता बेटा द्वारिका बी. एस. एफ. में सूबेदार-मेजर था। सियाचिन की लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ। अगर उसे तुरंत दिल्ली के अस्पताल में भेजा जाता तो उसके पैर को बचाया जा सकता था।

संजय : दादा, क्या द्वारिका भैया के इलाज में लापरवाही हुई है?

बलराम : देखो भइया फ्रॉस्ट केस में समय का बहुत महत्त्व होता है। द्वारिका को बेस कैम्प के अस्पताल में भेजने में बिना वजह देर हुई थी।

संजय : दादा, अफसरों की कोई मजबूरी रही होगी।

बलराम : हाँ, उनकी मजबूरी हो सकती है। एक बात और—इस देश में भाग्य का तर्क बहुत चलता है।

संजय : बाबा, लगता है कि तुम्हारी आत्मा में कई काँटे चुभ रहे हैं।

बलराम : संजय भैया, यह सब तो बीते हुए कल की चर्चा थी पर सुरेन्द्र के अपहरण ने तो मुझे बुरी तरह से तोड़ दिया है।

संजय : दादा, सुना है कि सरकार आतंकवादियों से बातचीत कर रही है।

बलराम : इस तरह की बातचीत का रिकार्ड अच्छा नहीं रहा है। बीच में राजनीति के सवाल खड़े हो जाते हैं। सफलता की संभावनाएँ खत्म हो जाती हैं।

संजय : दादा, तुम ही धैर्य खो दोगे तो परिवार का क्या होगा? तुमने द्वारिका भइया का चेहरा देखा है? उनकी आँखों में आतंक की छाया है।

बलराम : हमने एक पूरा जीवन ईमानदारी से जिया है। पर आज हमारी आस्थाएँ टूट रही हैं। हजारों सवाल हैं, इन सवालों का जवाब कौन देगा।

[शहनाई की आवाज़]

संजय : दादा, घर पर बड़ी भीड़-भाड़ दिखाई पड़ रही है। सब कुछ ठीक-ठाक है न।

बलराम : मैं भी यही सोच रहा हूँ। लगता है कि कुछ हुआ है।

[सरमा का प्रवेश]

सरमा : (दूर से) बलराम कम फास्ट। देयर इज़ गुड न्यूज फार आल ऑफ अस।

बलराम : लिली, जल्दी बोलो। इस घर को बहुत दिनों से अच्छी खबर का इन्तजार है।

सरमा : बलराम, सुरेन्द्र हैज़ कम। ही हैज़ बीन रिलीज्ड बाई द टेररिस्ट।

बलराम : थैंक गौड, ईश्वर तुम सचमुच महान हो।

संजय : दादा, इट्स ग्रेट न्यूज़। एक बहुत बड़ी दुर्घटना टल गई।

[सुरेन्द्र और चंदनबाला का प्रवेश]

(दोनों बलराम के पैर छूते हैं)

सुरेन्द्र : दादा, मैं घर आ गया। ईश्वर की दया से एक निश्चित मौत दरवाजे से लौट गयी।

बलराम : बच्चा जी, तुम घर आ गये। मुझे अब और कुछ नहीं चाहिए।

सुरेन्द्र : बाबा, इनसे मिलो। ये है चंदन बाला। आई. एन. ए. में तुम्हारे साथ थे प्रदीप बरुआ।

बलराम : हाँ-हाँ, प्रदीप बरुआ हमारे साथ था। ही वाज़ ए गुड फ्रेंड। अब वह कहाँ है?

सुरेन्द्र : दादा, प्रदीप बरुआ इज़ डेड। उनके पुत्र हैं, संदीप बरुआ। चंदन बाला संदीप बरुआ की पुत्री हैं।

बलराम : चंदन बेटी से कहाँ भेंट हो गई?

सुरेन्द्र : बाबा, जिस ग्रुप ने मेरा अपहरण किया था। संदीप बरुआ उसके लीडर हैं।

बलराम : बेटा, तू यह सब क्या कह रहा है?

सुरेन्द्र : बाबा, यही सच है। संदीप बरुआ तुम्हें जानते हैं। बाबा, मिस्टर बरुआ ने लेफ्टिनेंट सुरेन्द्र को नहीं, आई. एन. ए. के मेजर बलराम सिंह के ग्रैंड सन को मुक्त किया है।

बलराम : बच्चा जी, मेरा सिर चक्कर खा रहा है। क्या सभी फौजी जवान छूट गये?

सुरेन्द्र : बाबा, उन्होंने किसी और को नहीं छोड़ा है। वे नहीं छूटेंगे। सरकार और आतंकवादियों के बीच चलने वाली वार्ता असफल हो गई है।

बलराम : बेटी चंदन बाला क्या कर रही है? कालेज की स्टूडेंट है?

सुरेन्द्र : चंदना हिस्ट्री में रिसर्च कर रही है। इसने आज़ाद हिन्द फौज पर रिसर्च किया है। मेरी मुक्ति के पीछे चंदन की पैरवी थी।

बलराम : बच्चा जी, समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ। जो हुआ, ठीक ही हुआ है।

सुरेन्द्र : नहीं दादा, कुछ ठीक नहीं है। मैं तो छूट गया पर मेरे साथियों को कौन छुड़ाएगा। मैं गहरी अपराध-भावना से ग्रस्त हूँ। दादा, मैं ज़ोर-ज़ोर से रोना चाहता हूँ।

बलराम : बेटे, अभी तुम टेंशन में हो। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।

सुरेन्द्र : दादा, कहाँ-कहाँ मरम्मत किया जा सकता है। किसी भी पत्थर को उठाओ, हजारों सवाल कुलबुलाने लगते हैं। इनका जवाब कौन देगा?

बलराम : बच्चा जी, तुम्हें आराम की जरूरत है।

सुरेन्द्र : दादा, तुम और प्रदीप बरुआ साथ-साथ आज़ादी के लिए लड़े थे। आज संदीप बरुआ और उनका गैंग फौजियों का अपहरण कर रहा है। उन्होंने ही हमारा अपहरण किया था।

बलराम : बच्चा जी, लगता है कि कहीं न कहीं कोई गलतफहमी है।

सुरेन्द्र : दादा, हम विदेशी सेनाओं से लड़ चुके हैं। आज हम अपनी ही सीमाओं पर देश के मिलिटेंट्स से लड़ रहे हैं। दादा, ये सारी स्थितियाँ हमें कहाँ ले जा रही हैं।

चंदन : सुरेन्द्र, एक दिन में कितने सवालों का जवाब चाहते हो।

सुरेन्द्र : चंदना, एक बुनियादी सवाल है। मेरे पिता ने कश्मीर की लड़ाई में अपनी टाँग का बलिदान कर दिया। पूर्वी मोर्चे पर रोज न जाने कितने फौजी अपने प्राणों का बलिदान कर रहे हैं। आखिर हम किस लिए, किसके लिए लड़ रहे हैं।

चंदन : सुरेन्द्र, तुम कहना क्या चाहते हो?

सुरेन्द्र : चंदना, हम देश की सीमाओं पर जान दे रहे हैं। पर वे लोग कौन हैं जो देश की छाती पर बैठकर देश को लूट रहे हैं।

चंदन : नहीं सुरेन्द्र, यह सवाल नहीं किया जा सकता।

सुरेन्द्र : लेकिन क्यों? यह सवाल क्यों वर्जित है?

चंदन : सुरेन्द्र तुम्हारे दादा आज़ाद हिन्द फौज में लड़े थे। तब उन्होंने यह सवाल नहीं पूछा कि हम क्यों लड़ रहे हैं?

सुरेन्द्र : उस समय हमारे लक्ष्य स्पष्ट थे।

चंदन : सुरेन्द्र, तुम्हारे पापा कश्मीर की लड़ाई में लड़े थे। क्या उन्होंने देश से सवाल किए? क्या उन्होंने पूछा कि हमारी फौजें क्यों लड़ रही हैं?

सुरेन्द्र : इन सवालों को अब पूछने का समय आ गया है।

चंदन : सुरेन्द्र, कभी-कभी हमारे लक्ष्य अस्पष्ट हो जाते हैं। उस समय अधिक संकल्प, अधिक समर्पण की जरूरत होती है।

सुरेन्द्र : ये सब मात्र शब्द हैं। खूबसूरत शब्दों से कठोर सच्चाइयों को नहीं ढका जा सकता।

चंदन : सुरेन्द्र, तुमने कोहिमा बार्डर पर अज्ञात सैनिकों का संदेश पढ़ा है। सैनिकों के अनुसार उन्होंने देश के सुनहरे कल के लिए अपने आज का बलिदान किया है।

सुरेन्द्र : इन बातों का अब कोई अर्थ नहीं है।

चंदना : इन बातों का पहले भी अर्थ था, आज भी है। यह कोई नयी बात नहीं है। सैकड़ों-हजारों साल से सैनिकों ने देश के सुनहरे कल के लिए अपना बलिदान किया है। जिन देशों में सैनिकों ने सवाल पूछे और सत्ता अपने हाथों में ली, उनका ही क्या रिकार्ड है?

सुरेन्द्र : चंदना, तुम बुराइयों से सुलह की बात क्यों करती हो? क्या नेताजी ने बुराइयों से सुलह किया था?

सुरेन्द्र : नेताजी एक अपवाद थे।

चंदन : नेताजी न तो अपवाद थे, न कोई आकस्मिक घटना। आज़ादी की लड़ाई के समय देश की आत्मा में एक गहरा मंथन हुआ

था। उस समय जो अमृत निकला—नेताजी उसी अमृत तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते थे।

सुरेन्द्र : नेताजी! नेताजी! हम कब तक इस नाम की माला जपते रहेंगे।

चंदन : सुरेन्द्र, कम-से-कम तुम यह नहीं कह सकते। यह नेताजी का पुण्य था जिससे तुम्हारी मुक्ति हुई। शायद उसी पुण्य के फल से दूसरे सैनिक भी छूट जाएँगे।

बलराम : बेटी, बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने अच्छी सूचना दी। ईश्वर करे कि हमारे सभी बच्चे छूट जाएँ।

चंदन : दादा, देश में फिर एक गहरा मंथन चल रहा है। उतना बड़ा मंथन जितना पौराणिक समुद्र मंथन था। मुझे उम्मीद है कि इस मंथन से भी अमृत निकलेगा।

बलराम : बेटी, तुमने चीजों को ठीक से देखा और समझा है। तुम्हारे शब्दों से वही अमृत झर रहा है।

चंदन : बाबा, सबसे जरूरी है कि हम अपने लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट हों। कवि रवि ठाकुर की एक कविता हमारे लक्ष्यों को परिभाषित करती है।

चित्त जहाँ शून्य, शीश जहाँ उच्च है। ज्ञान जहाँ मुक्त है।
जहाँ सह प्राचीरों ने
वसुधा को आठों पहर अपने आँगन में
छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर
बंदी नहीं किया है।
हे पिता, भारत को
उसी स्वर्ग में जागृत करो।

बलराम : बेटी, तुम इतना ऊँचा मन लेकर एक टेररिस्ट ग्रुप में कैसे रहीं?

चंदन : दादा, हमारे ग्रुप की कुछ शिकायतें हैं। बीच-बीच में एक जातीय अस्मिता का सवाल उठता है। पर जब ऊँचे लक्ष्यों से साक्षात्कार होता है तो हम वापस मुड़ जाते हैं। मैं आज आपके बीच में हूँ। दादा, मैं आपसे सुरेन्द्र के अपहरण के

लिए माफी माँगने आयी हूँ।

बलराम : बेटी, इतनी जल्दी माफी नहीं मिलेगी। सच तो यह है कि हम तुम्हारे अपहरण की योजना बना रहे हैं।

चंदन : दादा, यह आप क्या कह रहे हैं।

बलराम : बेटी, परिस्थितियाँ बहुत जटिल हैं। हमारे पास भी एक बेचैन पीढ़ी है। बेटी, तुमने इतिहास ठीक से पढ़ा है। तुम्हारे पास एक स्वच्छ दृष्टि है।

चंदन : दादा, क्या कहूँ? समझ में नहीं आता। मैं आपका बेहद सम्मान करती हूँ।

सुरेन्द्र : दादा, चंदना और मेरे बीच बहस के कई मुद्दे हैं। हम किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाते हैं।

बलराम : इस बहस को चलने दो। मैं भी उसमें शामिल होऊँगा।

[सरमा का प्रवेश]

सरमा : बलराम, द फूड इज़ रेडी। आज हमने स्पेशल फूड तैयार किया है।

बलराम : हाँ-हाँ, आज हमारा फीस्ट डे है। आज हम बड़ा खाना खाएँगे।

[द्वारिका का प्रवेश]

द्वारिका : पापा, सुरेन्द्र के आने पर शहनाई वाले को बुलाया गया था। वह अब जाना चाहता है।

बलराम : उसे अभी रोको। हमें थोड़ी और शहनाई की जरूरत है। यह एक सुखद अवसर है। हम बच्चा जी और बेटी चंदन बाला के एनगेजमेंट को सेलीब्रेट करेंगे।

द्वारिका : पापा, तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी। इस परिवार में बहुत दिनों के बाद एक पर्व आया है।

संजय : दादा, शहनाई की आवाज़ देश में दूर-दूर तक सुनाई पड़ेगी।

(शहनाई की आवाज़)

आधा दिन : आधी रात

पात्र

सलमा
नज़मा
मेजर हुसैन
कर्नल महबूब
बिलकिस

कथासार

देश में जनरल जावेद की सैनिक क्रांति के कारण वजीरे आज़म सादिक जेल में डाल दिए गये। उन पर कुशासन, सरकारी पद का दुरुपयोग और राजनीतिक हत्या का इल्ज़ाम था। एक फौजी अदालत उन्हें राजनीतिक हत्या के जुर्म में फाँसी की सजा घोषित करती है।

फाँसी की रात—सादिक की पत्नी नज़मा और बेटी सलमा के बीच समय गुजरना मुश्किल था। बेटी को विश्वास था कि अंत में सजाए मौत कैंसिल हो जाएगी।

पर कोई योजना कारगर नहीं होती। चार बजे सुबह सादिक खान फाँसी पर चढ़ा दिए जाते हैं। उनके परिवार को खानदानी गाँव भेज दिया जाता है।

समय बदलता है। एक दुर्घटना में जनरल जावेद मारा जाता है। चुनाव होते हैं और सलमा मुल्क की वजीरे-आज़म बनती है।

सलमा अपने दुश्मनों से बदला लेने की योजना बनाती है। पर घटनाएँ एक पुराने राज़ को खोलती हैं। सादिक ने सचमुच अपने साथी का खून कराया था।

सलमा का मोहभंग हो जाता है। वह सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने का आदेश देती है।

प्रथम दृश्य

[**स्थान**–एक डाक बंगला। **समय**–रात्रि आठ बजे।]

(पृष्ठभूमि में अजान की आवाज़)

सलमा : मम्मी, आठ बज गये। शाही मस्ज़िद में एशा की नमाज़ अदा की जा रही है।

नजमा : अल्ला, तेरा ही भरोसा है। या खुदा रहम कर।

सलमा : मम्मी, खुदा की रहमत का खज़ाना खत्म हो गया है। लगता है कि उसने भी पाला बदल लिया है।

नजमा : नहीं बेटी, ऐसा नहीं कहते। यह फौजी अदालत नहीं है। खुदा ने सब कुछ देखा है। वह सब कुछ जानता है। वह इंसाफ करेगा।

सलमा : मम्मी, हुसैन साहब तुमसे मिलने आए थे। कौन हैं ये?

नजमा : मेजर हुसैन तुम्हारे अब्बा का सिक्यूरिटी आफिसर था। हुकूमत बदल जाने पर भी यह नहीं बदला। इसे लगातार धमकियाँ मिल रही हैं।

सलमा : हुसैन अंकल में कैरेक्टर है। वे जोखिम उठाकर भी रिश्तों की कीमत अदा कर रहे हैं।

नजमा : कर्नल महबूब को ही देखो। लोग इसे सादिक साहब का अल्सेशियन कहते थे। पर हुकूमत बदलते ही वह पलट गया। फौजी अदालत में वह प्रोसिक्यूटर था। उसने तुम्हारे अब्बा को हर तरह से जलील करने की कोशिश की थी।

सलमा : मम्मी कर्नल महबूब को ही क्यों दोष दिया जाए। जनरल जावेद की बगावत के बाद सभी आर्मी अफसर खिलाफ हो गये।

नजमा : क्या कहा जाए। दूसरे डिपार्टमेंट के लोगों ने भी निगाहें फेर

लीं। दोस्तों ने भी झूठी गवाहियाँ दीं। लोगों का कहना है कि सब लोग डरे हुए हैं।

सलमा : मम्मी, अब हम किससे शिकायत कर सकते हैं।

नजमा : कुछ भी कहना बेकार है। सब लोग बदल गये हैं। या खुदा रहम कर।

सलमा : मम्मी, हुसैन अंकल आए थे। उन्होंने क्या कहा?

नजमा : हुसैन कैबिनेट सेक्रेटरी कर्नल खुरशीद से मिला था। खुरशीद कह रहा था कि अमेरिका से प्रेसिडेंट का फोन आया था। प्रेसिडेंट ने सादिक साहब को सज़ा-ए-मौत के खिलाफ राय ज़ाहिर की है।

सलमा : मम्मी, दिस इज़ ग्रेट न्यूज। जनरल जावेद ने क्या जवाब दिया?

नजमा : यह तो मालूम नहीं। हुसैन कह रहा था कि जावेद इस मेसेज से बहुत परेशान है। कैबिनेट की मीटिंग चल रही है।

सलमा : वेरी गुड। जावेद अमेरिकन प्रेसिडेंट को इनकार नहीं कर सकता।

नजमा : जावेद बहुत जिद्दी आदमी है। वह कुछ भी कर सकता है।

सलमा : मम्मी, अमेरिका के ह्यूमन राइट्स ग्रुप ने भी अब्बा को सज़ा-ए-मौत पर सख्त एतराज़ किया है।

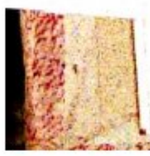
नजमा : बेटी, जावेद एक बेरहम तानाशाह है। वह किसी एतराज़ को तवज्जो नहीं देगा।

सलमा : मम्मी, यह देखो। आज का वाशिंगटन-पोस्ट है। इसमें इंग्लैंड के प्राइम मिनिस्टर और फ्रांस के फारेन मिनिस्टर के बयान छपे हैं। उन्होंने जावेद की फौजी हुकूमत को फासिस्ट सरकार कहा है।

नजमा : ये सब इंसानियत की आवाज़ है। पर जावेद ने अपने दोनों कान बंद कर लिए हैं।

सलमा : मम्मी, सुना है कि इंडिया की प्राइम मिनिस्टर ने भी अ़ब्बा के लिए मर्सी अपील की है।

नजमा : बेटी, ये सब अब अखबार की कतरनें हैं। हमारे दरवाज़े पर



मौत दस्तक दे रही है। इसे कौन रोक सकता है।

सलमा : मम्मी, अमेरिका में हाल में एक ओपिनियन पौल हुआ था। वहाँ लोगों ने अब्बा को दुनिया के पाँच पापुलर नेताओं में गिनती की थी।

नजमा : अपने मुल्क में भी सादिक साहब बहुत पापुलर थे, पर उनकी पापुलैरिटी ही उन्हें महँगी पड़ी।

सलमा : मम्मी, यह सब कुछ एक साजिश है। सारी दुनिया में भ्रष्टाचार का शोर है। पापा पर मर्डर चार्ज की बात गले के नीचे नहीं उतरती।

नजमा : यह इल्ज़ाम मेरी समझ में भी नहीं आया था। एक अनवर सादिक साहब की पार्टी का वर्कर था। एक दिन वह लापता हो गया। फौजी अदालत ने अनवर की हत्या का इल्ज़ाम सादिक साहब पर लगाकर सज़ा-ए-मौत का एलान कर दिया।

सलमा : कोई सबूत भी पेश हुआ था?

नजमा : सरकारी गवाह थे। एक मुर्दे का पोस्टमार्टम हुआ। उसे अनवर की डेड बॉडी कह दिया गया।

सलमा : मम्मी, इस किस्से में कोई दम नहीं है। यह सब एक खूनी साजिश से ज्यादा कुछ नहीं है।

नजमा : क्या कहूँ। जावेद सादिक साहब का फेवरिट था। उसे कई सीनियर अफसरों को सुपरसीड कर जनरल बनाया गया था।

सलमा : मम्मी, मुझे मालूम है। जब मैं हायर स्टडीज़ के लिए अमेरिका जा रही थी तो जनरल जावेद मुझे एयरपोर्ट तक पहुँचाने गया था।

नजमा : सादिक, साहब को शान-शौकत बहुत पसंद थी। उन्होंने एक साथ बहुत-सी योजनाएँ चालू कीं। कुछ लोगों ने कोरप्शन का शोर मचाया। सादिक साहब ने इस शोर की परवाह नहीं की।

सलमा : मम्मी, अब्बा एक एरिस्ट्रोक्रैट रहे हैं। डिमोक्रेसी में बहुत मोटी चमड़ी की जरूरत होती है।

नजमा : जब जावेद ने फौजी बग़ावत की तो हमने उसे एक दोस्ताना कदम समझा। तुम्हें सुनकर ताज्जुब होगा कि सादिक साहब

ने बग़ावत के बाद जनरल जावेद को बधाई का फोन किया था।

सलमा : कितना अच्छा मजाक था।

नजमा : जब जावेद हुकूमत की लापरवाही और भ्रष्टाचार की बात करने लगा तो हम सब ने समझा कि यह सब फारेन प्रेस के लिए है। पर जब हमने अनवर की पोस्ट मार्टम की बात सुनी तो हमारे कान खड़े हो गये। हमने जावेद को फोन किया। उससे मिलने की कितनी ही कोशिश की। पर उसने हमारे हरेक मेसेज को अनसुना कर दिया।

[क्लाक टावर पर दस बजने की आवाज़]

सलमा : माई गौड, दस बज गये। छह घंटे के बाद हमारी किस्मत का फैसला हो जाएगा।

नजमा : हाँ फौजी अदालत का यही फैसला है। सुबह चार बजे मुल्क के वजीरे आजम को फाँसी पर लटका दिया जाएगा।

सलमा : नहीं मम्मी, ऐसा नहीं होगा। कभी नहीं होगा।

[मेजर हुसैन का प्रवेश]

हुसैन : मैडम।

नजमा : आओ हुसैन, हम बेचैनी से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे थे।

हुसैन : मैडम, आपके लिए दवा लाया हूँ।

नजमा : कैसी दवा!

हुसैन : हार्ट की दवा है। टेंशन को कम करती है।

नजमा : हुसैन, तुम मजाक कर रहे हो। मुझे किसी दवा की जरूरत नहीं है।

हुसैन : मैडम, कैबिनेट की मीटिंग खत्म हो गयी। क्या हुआ, पता नहीं चल सका।

नजमा : कर्नल खुरशीद से नहीं मिले?

हुसैन : मिला था। उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनका चेहरा उतरा हुआ था।

सलमा : क्या जावेद अमेरिकन प्रेसीडेंट को इनकार कर सकता है?

हुसैन : सलमा जी, यह सब ऊँची सियासत की बातें हैं। मैं क्या कह

सकता हूँ। हाँ, मैं सेंट्रल जेल भी गया था। उन्होंने जेल के जल्लाद को बुला लिया है। मैं जल्लाद माजिद को भी देखने चला गया। वह फाँसी घर के पास बैठकर शराब पी रहा था।

नजमा : सादिक साहब से मिले?

हुसैन : नहीं, यह मुमकिन नहीं था। उनके चारों तरफ सख्त पहरा है।

सलमा : जावेद ने पापा की बहुत इंसल्ट की है। एक दिन उसे भुगतना पड़ेगा।

हुसैन : जेल में गहरी खलबली है। कैदियों ने सादिक साहब के समर्थन में भूख हड़ताल की है। सुनता हूँ कि वे रात बारह बजे प्रदर्शन भी करने वाले हैं।

नजमा : लेकिन इससे क्या होगा?

हुसैन : हो भी सकता है। हुकूमत डरी हुई है। शहर में दफा चौबालीस लगी हुई है, पर पीपुल्स पार्टी का जुलूस निकलने वाला है।

नजमा : अब क्या होगा। बहुत देर हो चुकी है।

हुसैन : सादिक साहब के समर्थक इकट्ठा हो रहे हैं। आर्मी भी तैयार है। लगता है कि एक खूनी मुकाबला होगा।

नजमा : लेकिन इससे किसे फायदा होगा। हमारा आशियाँ तो जल कर राख हो जाएगा।

हुसैन : बहुत बुरा ज़माना आ गया है। हम लोग सिर्फ तमाशबीन बनकर रह गये हैं। मैडम, जा रहा हूँ।

[हुसैन का प्रस्थान]

नजमा : अल्ला, तेरा ही भरोसा है। रहम कर, परवरदिगार रहम कर।

सलमा : नहीं मम्मी, हिम्मत छोड़ने की कोई जरूरत नहीं है।

नजमा : पता नहीं। पर दिल में दहशत समाती जा रही है। मौत दरवाज़े पर दस्तक दे रही है।

[नेपथ्य से आवाज़]

(नारा) मुल्क के नेता, सादिक खान।
सबके दुलारे सादिक खान।
फौजी हुकूमत, होश में आओ।
खून का बदला, खून से लेंगे।

सलमा : लगता है, रात के बारह बज गये। सेन्ट्रल जेल के कैदियों ने प्रदर्शन शुरू कर दिया।

नजमा : या खुदा रहम कर।

सलमा : मम्मी, तुम कुछ भूल रही हो। नौ अप्रैल, रात बारह बजे पापा के जनम का महूरत है। यह पापा का साठवाँ जनमदिन है।

नजमा : बेटी, मौत के साये में इस जनमदिन के क्या मायने हैं? हम सिर्फ खुदा की इबादत कर सकते हैं।

सलमा : नहीं मम्मी, हम जनमदिन मनाएँगे। मैं पापा की फोटो के सामने मोमबत्ती जला रही हूँ।

[नेपथ्य से आवाज़]

खूनी निज़ाम, होरा में आओ।
खून का बदला खून से लेंगे।

सलमा : मम्मी, मोमबत्ती जल गयी। फूँको, मम्मी फूँको!

नजमा : खुदा रहम कर! रहम कर!

सलमा : कोई बात नहीं। मैं ही फूँकती हूँ। **(फूँकती है)** पापा, हैपी बर्थ डे टू यू पापा, हम तुम्हारी जिन्दगी और लम्बी उम्र के लिए खुदा से दरखास्त करते हैं।

नजमा : रहम कर परवरदिगार, रहम कर! **(रोने लगती है)**

सलमा : मम्मी, मत रोओ।
मुल्क के सरबराह, गरीबों के मसीहा, हर दिल अज़ीज़ पापा को कौन फाँसी दे सकता है।

(नेपथ्य से आवाज़)

मुल्क का नेता कैसा हो।
सादिक खान जैसा हो।
टूटेगा जुल्मों का निशान।
आसमान का यही पयाम।
फौजी कातिल, होश में आओ।
[खून का बदला, खून से लेंगे]

सलमा : बढ़ो जवानो, बदल दो इस खूनी निज़म को। तवारीख का

सबसे खतरनाक दौर है। आज पूरे
मुल्क के तकदीर का फैसला होगा।
(दूसरी दिशा से आवाज़)
सादिक का मुकदमा-झूठा है।
सज़ा मौत की साजिश है। साजिश है।
खूनी जनरल होश में आओ

(सलमा दूसरी बाल्कोनी में खड़ी होती है)

सलमा : मम्मी, यह पीपुल्स ग्रुप की यूथ-विंग है। हजारों नवजवान हैं।

नजमा : इस संस्था का संगठन सादिक साहब ने किया था। लोगों ने इसका नाम रखा था—यंग टाइगर्स।

सलमा : मम्मी, इनके हाथों में लाठियाँ हैं। कुछ बंदूकें भी दिखाई पड़ रही हैं।

(मिलीटरी गाड़ी के हार्न)

सलमा : माई गौड, आर्मी की यूनिट्स भी पहुँच गयी हैं।
कर्नल महबूब युवा नेताओं से बात कर रहा है। युवा नेता गुस्से का इज़हार कर रहे हैं।

(आवाज़)

देश का नेता—सादिक खान।
सबका दुलारा—सादिक खान।
जुल्मी जनरल होश में आओ।
खून का बदला, खून से लेंगे।

सलमा : मम्मी, आर्मी की एक यूनिट जेल के भीतर घुस रही है। जेल के झंडा चौक पर कैदी इकट्ठा हो रहे हैं।

(आवाज़)

जो हमसे टकराएगा।
चूर-चूर हो जाएगा।
सादिक को यदि मौत मिली—
तो खून का बदला खून से लेंगे।

सलमा : मम्मी, कैदियों ने ईंट-पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। ओ माई गौड उन्होंने सेंट्रल वाच टावर में आग लगा दी।

(फायरिंग की आवाज़)

सलमा : आर्मी ने फायरिंग शुरू कर दिया।

(फायरिंग की आवाज़)

सलमा : कैदी दीवारों के पीछे छिप रहे हैं। वे जेल किचेन से बरतन, लोहा-लक्कड़ फेंक रहे हैं। **(गोलियों की आवाज़)** कैदी मर रहे हैं। सिपाही आगे बढ़ रहे हैं। वे कैदियों पर बेयोनेट से हमला कर रहे हैं। माई गौड!

नजमा : या खुदा, रहम कर।

सलमा : मम्मी, सड़क पर भी फाइटिंग शुरू हो गयी। यंग टाइगर्स ने मकानों की रेलिंग के पीछे मोर्चा बनाया है। वे ईंट-पत्थर फेंक रहे हैं।

(गोली चलने की आवाज़)

सलमा : आर्मी ने फायरिंग शुरू कर दी। वे टीयर गैस के बम भी फेंक रहे हैं। मम्मी, लोग छत से पानी फेंक रहे हैं। वे टाइगर्स की मदद कर रहे हैं। सड़क पर पश्चिम से आर्मी की दूसरी यूनिट भी पहुँच गयी है। माई गौड, नवजवान बुरी तरह से घिर गये हैं। वे चूहों की तरह मर रहे हैं।

नजमा : या खुदा, रहम कर।

सलमा : मम्मी, पब्लिक बिना हरबा-हथियार के कितनी देर तक लड़ सकती है। सड़क पर सैकड़ों नवजवानों की लाशें बिछी हुई हैं। फौजी सिपाही उन्हें ट्रकों पर लाद रहे हैं। मम्मी, लगता है कि जेल की लड़ाई भी खत्म हो गयी। फ़ौजी लाशों को इकट्ठा कर रहे हैं। घायल लोग चीख रहे हैं। माई गौड!

नजमा : या परवरदिगार रहम कर! खुदा, तेरा ही आसरा है!

(क्लाक टावर पर दो की घंटी)

सलमा : दो बज गये। हुसैन अंकल नहीं आए। पता नहीं क्या हुआ?

नजमा : अब क्या हो सकता है। हुसैन क्या कर सकता है।

सलमा : मम्मी, जनरल जावेद अमेरिका को 'नो' नहीं कह सकता। अंत में फाँसी का आर्डर कैंसिल हो जाएगा। मम्मी, तुम क्या सोचती हो?

नजमा : मैं अब कुछ सोच नहीं सकती। मौत दरवाजे पर खड़ी है। मैं उसकी आहट सुन रही हूँ।

सलमा : नहीं मम्मी, ऐसा नहीं होगा। मम्मी, जावेद बेहद डरा हुआ है। पब्लिक पापा को बेहद प्यार करती है।

[हुसैन का प्रवेश]

हुसैन : मैडम!

नजमा : आओ हुसैन, न जाने क्या-क्या हो रहा है? हम बेहद घबरा गये हैं।

हुसैन : मैडम, आज की रात कयामत की रात है। फौज ने एक हँसते-खेलते शहर को मुर्दों का टीला बना दिया है।

नजमा : या खुदा, रहम कर।

हुसैन : जनरल जावेद को अन्दाज़ा नहीं था कि सादिक साहब अवाम के बीच इतने पापुलर हैं। लगता है कि उनके सपोर्ट में पूरा शहर उठ खड़ा हुआ है।

सलमा : लेकिन फौज ने जनता के विरोध को सख्ती से कुचल दिया।

हुसैन : फिलहाल ऐसा ही लगता है।

सलमा : जावेद कहाँ है। उसने क्या फैसला किया?

हुसैन : कुछ लोगों का कहना है कि फौज ने जनरल जावेद को नजरबंद कर दिया है। कर्नल महबूब फौज पर हावी हो गया है।

सलमा : अमेरिकन प्रेसिडेंट को क्या जवाब भेजा गया?

हुसैन : कुछ गोल-मटोल बातें कही गयीं हैं। आर्मी में सत्ता का संघर्ष शुरू हो गया है। हमारे पक्ष में कोई फैसला संभव नहीं है।

नजमा : या खुदा, रहम कर!

हुसैन : जेल में सभी तैयारी पूरी हो गयी है। जेलर साहब ने सादिक साहब के कपड़े और किताबें मुझे दी हैं। मैंने उन्हें एक दोस्त के पास रख दिया है।

सलमा : क्या हम पापा से मिल सकते है? जेल मैनुअल में ऐसी व्यवस्था है।

हुसैन : वे इसकी इजाज़त नहीं देंगे। कानून की बात करना ही बेकार है।

सलमा : पर यह तो जुल्म है। ज्यादती है।

हुसैन : आपका कहना ठीक है। पर यह कानून नहीं, शैतान की हुकूमत है।

सलमा : शैतान का नाश हो। जो भी हो, पापा नहीं मरेंगे। हम उन्हें मरने नहीं देंगे।

हुसैन : जा रहा हूँ मैडम! पता नहीं खुदा को क्या मंजूर है?

[हुसैन का प्रस्थान]

(अजान की आवाज़)

सलमा : सुबह की अजान हो रही है। लगता है कि चार बज गये।

नजमा : या परवर दिगार, गरीबों का रखवार, रहम कर। सारे जहाँ के मालिक, हम तुमसे भीख माँगते हैं। अपने शौहर की जिन्दगी की भीख! या खुदा अपने रहमो-करम से हमारी हिफाज़त करो।

सलमा : मम्मी, हिम्मत करो। सब ठीक होगा। वह देखो आसमान पर खुदा का नूर बरस रहा है। दूर डालों पर कोयल बोल रही है। सब कुछ ठीक है। खुदा के फज़ल से सब कुछ ठीक होगा।

[कर्नल महबूब का प्रवेश]

नजमा : यू कर्नल महबूब।

महबूब : सारी मैडम, देयर इज़ बैड न्यूज़ फार यू। योर हजबेंड हैज बीन हैंगड्। उनकी डेड बाडी इस्लामी रिवाज के मुताबिक जेल की कब्रगाह में दफन कर दी गयी।

सलमा : यू बास्टर्ड! मर्डर! दिस इज़ जस्ट मर्डर।

महबूब : सादिक साहब पर मर्डर के चार्ज थे। फौजी अदालत ने उन्हें मौत की सजा दी थी।

सलमा : शट अप। तू उसे अदालत कहता है। इट वाज़ जस्ट ए कांस्पिरेसी। यू आर ए बैंड आफ मर्डरर्स।

महबूब : सादिक साहब का सामान जेल सुपरिंटेंडेंट के पास जमा है। वह आपको मिल जायेगा।

सलमा : मैं तुमसे एक सवाल पूछती हूँ। डेड बॉडी को फैमिली के सदस्यों को दिखाये बिना कैसे दफन किया। यह तो इस्लाम की रस्मों के बिल्कुल खिलाफ है।

महबूब : इसका जवाब मैं नहीं दे सकता। जो कुछ हुआ है, कोर्ट के आर्डर से हुआ है।

सलमा : यू आर ए लायर। तुम झूठ के पुलिंदे हो। तुमने अपने बोस को कत्ल किया है। तुम्हें दोज़ख में भी जगह नहीं मिलेगी।

महबूब : मैडम, एक और आर्डर है। आपको अपने खानदानी गाँव जाना होगा। यू मस्ट वेकेट दिस बिल्डिंग इन सिक्स्टी मिनट्स।

[कर्नल महबूब का प्रस्थान]

नजमा : सब कुछ खत्म हो गया। कोई तरकीब कारगर नहीं हुई। परिवार का पालनहार, मुल्क के सरबराह को एक यतीम की तरह दफना दिया गया। एक मसीहा एक साजिश का शिकार हो गया।

सलमा : मत रोओ मम्मी। खुदा की यही मर्जी थी। एक सितारा टूट कर गिर गया है।

नजमा : या खुदा, यह कहर हम पर ही गिरना था। हम तो लुट गये।

सलमा : मम्मी, पापा की फोटो के सामने खड़ी होकर मैं सलमा सादिक एक कौल कर रही हूँ। सुनो पापा, जिन्होंने तुम्हारा मर्डर किया है वे भी नहीं बच सकेंगे। जिन लोगों ने तुम्हें फाँसी के तख्ते पर खड़ा किया है उन्हें भी फाँसी का फंदा मिलेगा। आई फार ऐन आई। टुथ फार ए टुथ।

(संगीत वादन)

द्वितीय दृश्य

[**स्थान**–सादिक साहब का खानदानी गाँव। **समय**–संध्या 4 बजे।]

[हुसैन का प्रवेश]

हुसैन : मैडम! मुबारक! खुदा के यहाँ देर है, अंधेर नहीं है।

नजमा : क्या हुआ हुसैन, बहुत खुश नज़र आ रहे हो।

हुसैन : मैडम, जनरल जावेद अब इस दुनिया में नहीं हैं। वह अपनी ही साजिश का शिकार हो गया।

नजमा : क्या कह रहे हो! सलमा बेटी, जरा टी. वी. लगाओ। बहुत गरमागरम खबर है।

(सलमा टी. वी. आन करती है)

(टी. वी. पर घोषणा)

यह मुल्क के टी. वी. की आलमी सरविस है। हम बहुत दुख के साथ सूचना दे रहे हैं कि मरकजी सरकार के सदर, सेना के सुप्रीम कमांडर जनरल जावेद का इंतकाल हो गया। वे एक सरकारी प्लेन से सफर कर रहे थे। कहा जाता है कि एक टाइम-बम के धमाके से प्लेन के टुकड़े-टुकड़े हो गये। प्लेन पर पायलट के अलावा बीस सरकारी अफसर थे।

इस दुर्घटना के पीछे एक साजिश की बात कही जा रही है। पुलिस ने कर्नल महबूब और उनके साथ एक दर्जन सैनिक अफसरों को गिरफ्तार कर लिया है।

कर्नल खुरशीद ने हुकूमत की बागडोर संभाल ली है। उन्होंने तीन महीने के बाद आम चुनावों की घोषणा की है।

खबरें खत्म हुईं। हमारा अगला बुलेटिन दो घंटे के बाद नस्र किया जाएगा।

सलमा : मम्मी, दिस इज़ ग्रेट न्यूज़। हमें यह चुनाव लड़ना है। हमें यह चुनाव जीतना है।

हुसैन : अब बातचीत का समय नहीं है। हमें तुरंत राजधानी फ्लाई करना चाहिए। लोग हमारा इंतजार कर रहे होंगे।

(संगीत वादन)

तृतीय दृश्य

[सड़क पर जुलूस। सामूहिक आवाज़]

देश की नेता सलमा सादिक!

सबकी दुलारी सलमा सादिक!

जो हमसे टकराएगा।
चूर-चूर हो जाएगा।

(संगीत वादन)

(सामूहिक आवाज़)

शहीदों के खूँ का असर देख लेना,
मिटा देंगे जालिम का घर देख लेना।
रुकेंगे नहीं हम, झुकेंगे नहीं हम,
बदलता है कैसे शहर देख लेना।

(संगीत वादन)

चतुर्थ दृश्य

(टी. वी. पर घोषणा) यह टी. वी. की आलमी सर्विस है। अब आप खास-खास खबरें सुनिए।

आम चुनाव में मैडम सलमा सादिक और उनकी पीपुल्स पार्टी की शानदार जीत का पूरे देश में स्वागत हुआ है। सलमा मैडम के पास देश-विदेश से बधाई के तार आ रहे हैं।

आज दिन के ग्यारह बजे सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस मुदस्सर हसन ने वजीरे आलम के पद की शपथ दिलाई।

उनके साथ पार्टी के दस लोगों ने कैबिनेट के वजीर की हैसियत से शपथ ली। मेजर हुसैन को होम मिनिस्टर का विभाग दिया गया है।

खबरें खत्म हुईं। हमारी अगली बुलेटिन शाम छह बजे नश्र होगी।

(संगीत वादन)

पाँचवाँ दृश्य

[**स्थान**–वजीरे-आजम की कोठी। **समय**–दूसरा दिन, सुबह।]

[हुसैन का प्रवेश]

हुसैन : वजीरे-आजम सलमा सादिक जिन्दाबाद!

सलमा : (हँसकर) यह क्या कह रहे हैं हुसैन अंकल। यह सब आपकी प्लैनिंग थी। आपने एक जर्रे को आसमान पर पहुँचा दिया है।

हुसैन : सलमा जी, यह खुशियाँ मनाने का वक्त नहीं है। सिर्फ चुनाव जीतना काफी नहीं है। हमें अपनी ताकत का इज़हार करना चाहिए।

सलमा : क्या करना चाहिए।

हुसैन : कर्नल महबूब और उसके साथी हमारे एनीमी नम्बर वन हैं। हमें उन्हें मौत का तोहफ़ा देना चाहिए।

सलमा : अंकल, वे जेल में हैं। उन्होंने कोर्ट में रिट किया है। पता नहीं कोर्ट का फैसला क्या होगा?

हुसैन : मैडम, इस तरह हुकूमत नहीं चल सकती। मैंने उन्हें एक जेल से दूसरे जेल के ट्रांसफर का आर्डर दिया है। बीच रास्ते में एक शूट-आउट का प्रबन्ध कर दिया गया है। वे अब तक खुदा को प्यारे हो गये होंगे।

सलमा : कर्नल महबूब ने पापा को बहुत इंसल्ट किया था। उसकी मौत पर आँसू बहाने की जरूरत नहीं है।

हुसैन : आर्मी में हमारे दुश्मनों की कमी नहीं है। उनकी लिस्ट तैयार हो गयी है। मैंने एक ग्रीन-थंडर प्रोग्राम चालू किया है।

सलमा : यह कैसा प्रोग्राम है!

हुसैन : अपने दुश्मनों को नेस्तनाबूद करना होगा। यह काम जल्दी-से-जल्दी होना चाहिए।

सलमा : लगता है कि सब कुछ बहुत जल्दबाज़ी में हो रहा है।

हुसैन : नहीं, यह सही वक्त है। ग्रीन थंडर के साथ-साथ व्हाइट थंडर भी चलेगा। फौज की सफाई के साथ-साथ सियासत के काँटों को भी निकालना होगा।

[नजमा का प्रवेश]

नजमा : शालू, तूने आज का अखबार देखा है। फ्रंटियर मेल का एक्सिडेंट हो गया है। लाइन पर बम के टुकड़े मिले हैं। दूसरी खबर बहुत अजीब है। फ्रंटियर मेल को उड़ाने के जुर्म में चालीस सैनिक अफसरों को गिरफ्तार किया गया है। उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाएगा।

हुसैन : मैडम, बहुत सोचने की जरूरत नहीं है। वे हमारे दुश्मन हैं। उन्हें जाना ही होगा।

नजमा : शालू बेटी, यह सब क्या है? सादिक साहब भी ऐसी ही बातें करते थे। उस रात हत्याओं का दौर आया था। न जाने कितने लोग हलाक हुए थे। इन सबका क्या नतीजा निकला?

हुसैन : मैडम, जो कुछ हो रहा है, जरूरी है। अगर समय पर हमने दुश्मनों पर वार नहीं किया तो वे आप पर हमला करेंगे।

नजमा : या खुदा रहम कर।

हुसैन : सलमा मैडम, जा रहा हूँ। आपके पास हौट लाइन है। आप जब चाहें संपर्क कर सकती हैं।

सलमा : ओ. के. अंकल।

[हुसैन का प्रस्थान]

[एक औरत के साथ सिक्यूरिटी गार्ड का प्रवेश]

गार्ड : मैडम, इस औरत का नाम बिल्किस है। आज सुबह पुलिस इसके शौहर अजहर को पकड़ कर ले गयी है। यह आपसे भेंट करना चाहती है।

सलमा : सुनो, तुमको जो कुछ कहना हो, थाने में जाकर कहो। फिर डी. एस. पी., एस. पी, कमिश्नर हैं। उनके पास जा सकती हो।

बिल्किस : मलका, सब दरवाज़े खटखटा चुकी हूँ। सब कहते हैं कि यह मुल्क की हिफाज़त का मामला है। हम कुछ नहीं कर सकते।

सलमा : तुम अदालत में जा सकती हो।

बिल्किस : उससे क्या होगा? वे उसे मार डालेंगे। मलका, बचा लीजिए मेरे शौहर को।

सलमा : तुम्हारे शौहर पर राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है। यह एक

खतरनाक इल्ज़ाम है।

बिल्किस : मलका, हम बेहद गरीब लोग हैं। मेरा शौहर फक्त एक मज़दूर है। हम मुल्क को क्या नुकसान पहुँचा सकते हैं।

सलमा : उसने जरूर कोई जुर्म किया होगा। ठहरो, मैं पूछती हूँ। **(टेलीफोन पर)** हलो हुसैन अंकल एक औरत आई है। नाम है बिल्किस। उसके शौहर अजहर को राष्ट्रीय सुरक्षा में गिरफ्तार किया गया है। मैं उसके जुर्म की तफसील चाहती हूँ।

हुसैन : **(टेलीफोन पर)** मैं इस केस को जानता हूँ। अज़हर मुल्क का दुश्मन है। सादिक साहब की मौत पर पूरे कुनबे ने खुशियाँ मनाई थीं। बतासे बाँटे थे।

बिल्किस : मलका, उस बात को छोड़ दीजिए।

सलमा : लेकिन क्यों ? देश के नेता गरीबों के पालनहार अब्बा की मौत पर तुमने खुशियाँ मनाईं। इससे बढ़कर क्या जुर्म हो सकता है?

बिल्किस : मलका, यह एक अलग कहानी है। मैं कह नहीं सकूँगी।

सलमा : लगता है तुम सब सादिक साहब के खिलाफ साजिश में शामिल थे। तुम सबने उस बगावत का समर्थन किया था।

बिल्किस : नहीं मलका, यह सच नहीं है।

सलमा : तब बोलो, सच क्या है?

बिल्किस : मलका, सादिक साहब ने मेरे वालिद, अनवर मियाँ का कत्ल करवाया था।

सलमा : यह झूठ है। बहुत बड़ा झूठ। पापा महान आदमी थे। तुम्हारे जैसे टुच्चे लोगों से उन्हें क्या लेना-देना था।

[नजमा का प्रवेश]

बिल्किस : मलका, मेरे वालिद सादिक साहब की पार्टी के मेम्बर थे। वे उनके समर्थक और सलाहकार थे। पर हुकूमत के आने के बाद उनमें कुछ मतभेद हो गये। एक दिन पुलिस मेरे वालिद को पकड़ कर ले गयी। दूसरे दिन उनकी लाश सड़क के किनारे मिली।

सलमा : लेकिन इस बात का क्या सबूत है कि अब्बा ने अनवर मियाँ

का खून कराया था।

बिल्किस : हमारे पास इसका कोई सबूत नहीं है।

सलमा : तुम सरासर झूठ बोल रही हो। तुमने एक इल्ज़ाम लगाया है। तुम्हें सबूत देना होगा।

नजमा : शालू, अनवर सादिक साहब की पार्टी का मेम्बर था। सादिक साहब उसे बहुत पसंद करते थे। पर उसकी मौत कैसे हुई, कोई नहीं जानता।

सलमा : यही तो बात है। यह औरत बिना सबूत गंभीर इलजाम लगा रही है।

[हुसैन का प्रवेश]

सलमा : आइये हुसैन अंकल। हम आपको फोन करने जा रहे थे। यह औरत कहती है कि पापा ने अनवर मियाँ का कत्ल करवाया था।

हुसैन : सलमा मैडम, यह हमारी दुखती हुई रग है। मैंने होम मिनिस्ट्री का रेकार्ड देखा है। सादिक साहब अनवर मियाँ की नुक्ताचीनी पसंद नहीं करते थे। उन्होंने अनवर की मौत का आर्डर दिया था। यह बात फाइल में दर्ज है।

सलमा : मुझे विश्वास नहीं होता। अब्बा बहुत ऊँचे किस्म के आदमी थे। उन्होंने ऐसा घटिया काम नहीं किया होगा।

हुसैन : मैं भी यही सोचता था। पर जेल के सामान में सादिक साहब की डायरी मिली है। सादिक साहब ने लिखा है कि अनवर की हत्या उनकी बड़ी गलती थी। पार्टी में इसका गहरा विरोध हुआ। इससे ही फौजी बगावत को हवा मिली।

सलमा : माई गौड, तो अब्बा ने भी इतनी बड़ी गलती की। उन्होंने अपने ही सलाहकार का खून कराया। क्या हुकूमत के हरेक उम्मीदवार को खून की दरिया में नहाना पड़ता है।

बिल्किस : मलका, हमें बचा लीजिए। हम बिल्कुल बर्बाद हो जाएँगे।

सलमा : उठो बहन, मैं तुम्हारे वालिद को वापस नहीं ला सकती। पर मैं तुम्हारे शौहर को छुड़ा सकती हूँ। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। बहन, मुझे माफ कर दो। मैं तुमसे अपने पापा की

गलतियों के लिए माफी माँगती हूँ।

बिल्किस : मलका, तुम देश की वजीरे आज़म हो। मैं बेहद मामूली औरत हूँ। तुम्हें हुकूमत की इज्ज़त को कम नहीं करना चाहिए।

सलमा : नहीं बहन, आदमियों की हत्या पर टिकी हुकूमत इज्ज़त के काबिल नहीं है। मेरा भरम टूट चुका है। मुझे वजीरे आज़म मत कहो। मैं इस पद से इस्तीफा दे रही हूँ।

बिल्किस : नहीं बहन तुम इस्तीफा नहीं दोगी। तुम्हारी जैसी नरम दिल हुक्मरान बहुत भाग्य से मिलती हैं।

नजमा : बेटी, तवारीख हमारे-तुम्हारे सीने पर न जाने कितने दाग छोड़ गया है। पर खून के इन दागों को खून से नहीं धोया जा सकता। इनको धोने के लिए आबे हयात यानी ममता का पवित्र जल चाहिए।

सलमा : मम्मी, यही सबसे बड़ा सच है। हुसैन अंकल, मैं सभी राजनीतिक कैदियों को छोड़ने का आर्डर दे रही हूँ।

सब : सलमा सादिक जिन्दाबाद!

(संगीत वादन)

महोबा हाउस

(आज़ादी के बाद एक एंग्लो-इंडियन परिवार के सांस्कृतिक संकट की कहानी)

पात्र-परिचय

जेफ्री– बड़ा भाई	40 वर्ष
एरिक–छोटा भाई	34 वर्ष
सूशन–एरिक की पत्नी	30 वर्ष
जौली–बहन	22 वर्ष
मम्मी	60 वर्ष
चंदन	24 वर्ष

कथासार

भारत की आज़ादी के बाद ऐंग्लो-इंडियन समुदाय के बीच एक विवाद उभरा—वे कितने ऐंग्लो हैं, कितने इंडियन।

गाजीपुर के ऐंग्लो-इंडियन निकल परिवार के सामने भी यही संकट है। बड़ा भाई जेफ्री आस्ट्रेलिया चला गया। छोटा भाई एरिक भारत में रहना चाहता है पर उसकी पत्नी मारा, इस देश में रहना नहीं चाहती। उधर बहन जौली एक भारतीय युवक से प्रेम करती है।

जेफ्री चाहता है कि अब आस्ट्रेलिया चले आएँ। उसने सबके लिए नागरिकता का प्रबन्ध कर लिया है।

माँ आस्ट्रेलिया जाती है। पर वहाँ जेफ्री की पत्नी उसे छोड़ कर इंग्लैंड चली जाती है। स्वयं जेफ्री नास्टेल्जिया से पीड़ित है।

महोबा हाउस (गाजीपुर) में बहस का अंत नहीं है। पर अंत में मम्मी तय करती हैं कि वे महोबा हाउस छोड़ कर नहीं जाएँगी।

प्रथम दृश्य

[**स्थान**–दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रांगण। **समय**–संध्या 5 बजे।]

(मंदिर में घंटा बजने की आवाज़)

जौली : चंदन, मंदिर में घंटियाँ बज रही हैं। इट्स वेरी स्वीट टू द इयरस्!

चंदन : पास में लक्ष्मी नारायण मंदिर है। शाम की पूजा हो रही है।

जौली : सुनती हूँ कि हमारी ग्रैंड-माँ बहुत-बहुत रेलीजस थीं। वे रोज शाम को लार्ड कृष्णा की पूजा करती थीं।

चंदन : जौली, तुम्हारे दादा तो खाँटी अंग्रेज थे। उन्होंने दादी को अपने धर्म में दीक्षित नहीं किया?

जौली : हमारे ग्रैंड-पा मि. आर्थर निकल ब्रिटिश आर्मी में कर्नल थे। पीलीभीत के जंगलों में शिकार करते समय उनकी भेंट बिसुनगढ़ की राजकुमारी रत्ना कुंवर से हुई। उस आकस्मिक भेंट से एक नये इतिहास की शुरुआत हुई।

चंदन : पूरी घटना एक लोककथा जैसी लगती है।

जौली : विवाह के बाद भी ग्रैंड-पा ने ग्रैंड-माँ को न तो अपना नाम दिया, न धर्म। ग्रैंड-माँ जीवन-भर प्रिंसेस रत्ना कुंवर के नाम से ही पुकारी गयीं।

चंदन : तुम्हारे खाँटी अंग्रेज परिवार में विमुनगढ़ की राजकुमारी ने कैसे एडजस्ट किया होगा, सोचकर आश्चर्य लगता है।

जौली : कोई प्रॉब्लेम नहीं था। दोनों एक-दूसरे की इज्जत करते थे। किसी ने एक-दूसरे पर इंपोज़ करने की कोशिश नहीं की।

चंदन : तुम्हारी दादी इंग्लैंड नहीं गयीं?

जौली : नहीं ग्रैंड-माँ इंग्लैंड में नहीं बसना चाहती थीं। उनकी खुशी के खातिर ग्रैंड-पा ने गाजीपुर में प्रापर्टी खरीदी। अपने महोबा हाउस की डिज़ाइनिंग भी ग्रैंड-पा ने की थी।

चंदन : लगता है कि तुम्हारी दादी बहुत दबंग महिला थीं। उन्होंने एक खाँटी ब्रिटिश परिवार को इस देश से जोड़ दिया।

जौली : यह सच है। अगर परिवार में प्रिंसेस रत्ना कुंवर का प्रवेश न होता

तो हम भारत की आज़ादी के बाद इंग्लैंड चले जाते।

चंदन : क्या तुम्हें इस बात का दुख है?

जौली : बिल्कुल नहीं। वी आर प्राउड ऑफ अवर इंडियन ग्रैंड-मदर। वी आर प्राउड ऑफ अवर इंडियन हेरिटेज। प्रिंसेस रत्ना कुंवर ने हमें इस महान देश से जोड़ा। हमें एक नया नाम मिला—ऐंग्लो-इंडियन।

चंदन : पर आज़ादी के बाद ऐंग्लो-इंडियन समुदाय में एक असुरक्षा की भावना दिखाई पड़ती है। न जाने कितने लोग इंग्लैंड या ऑस्ट्रेलिया चले गये।

जौली : वह केवल असुरक्षा की भावना नहीं है। उसके पीछे एक सांस्कृतिक कुंठा है। हमारा ब्रिटिश ईगो टामी कल्चर से बेतरह जुड़ा हुआ था। वह भारतीय परिवेश से नफरत करता है।

चंदन : पर जौली, तुम तो इस देश या यहाँ की संस्कृति से नफरत नहीं करतीं।

जौली : चंदन, प्रिंसेंस रत्ना कुंवर ने परिवार को एक भारतीय मन दिया है। आई ऐम ऐज़ मच इंडियन ऐज़ यू आर।

चंदन : लेकिन तुम्हारा बड़ा भाई जेफ्री सपरिवार आस्ट्रेलिया चला गया।

जौली : इतना ही नहीं, जेफ्री 'प्रेस' कर रहा है कि पूरा परिवार आस्ट्रेलिया जाए। उसके प्रयत्नों से हमें आस्ट्रेलिया की सिटिजनशिप मिल गयी है।

चंदन : क्या तुम लोग माइग्रेट करोगे?

जौली : मालूम नहीं। मम्मी जाना नहीं चाहतीं। भाभी सूशन जो खाँटी अंग्रेज है, एक दिन भी यहाँ नहीं रहना चाहती। भाई एरिक बीच में खड़ा है—आधा इधर, आधा उधर।

चंदन : पर जौली तुम। क्या तुम भी आस्ट्रेलिया जाना चाहती हो?

जौली : चंदन, मैं प्रिंसेस रत्ना कुंवर की कल्चरल डिसाइपिल हूँ। ग्रैंड-माँ एक अंग्रेज पति का वरण करके भी इंग्लैंड नहीं गयीं। मेरे आस्ट्रेलिया या इंग्लैंड जाने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

चंदन : लेकिन जौली, हमारे अपने सपनों का क्या होगा? हमने भी जीवन का एक नक्शा बनाया है।

जौली : इसका जवाब देना आसान नहीं है। मेरी फैमिली को यह प्रस्ताव पसंद नहीं है। दे आर एलर्जिक टू द आइडिया ऑफ अनैदर इंडियन रिलेशन।

चंदन : इस बर्लिन की दीवार को कैसे तोड़ा जा सकता है।

जौली : दीवार कैसे टूटेगी, नहीं बता सकती। पर हम स्वयं विभाजित हैं। हमारा परिवार दीवार के दोनों तरफ बैठा हुआ है।

चंदन : तुम्हारी बातों को सुनकर तुम्हारी दादी के लिए असीम श्रद्धा होती है। तुम्हारे परिवार में दो धाराएँ बह रही हैं—टेम्स और गंगा। परिवार में गंगा की धारा लाने का श्रेय तुम्हारी दादी को है।

जौली : प्रिंसेस रत्ना कुंवर वाज़ ए ग्रेट वुमन, पर उनका एंड बहुत सैड था।

चंदन : तुमने कभी नहीं बताया।

जौली : ग्रैंड-पा बर्मा की लड़ाई में मारे गये। उनकी मृत्यु के बाद ग्रैंड-माँ ने इंडियन विडो (widow) का जीवन अपना लिया। सुनती हूँ कि भारतीय योगियों के पास इच्छा-मृत्यु की शक्ति होती है। प्रिंसेस रत्ना कुंवर ने भी इच्छा-मृत्यु के द्वारा छः महीने में ही प्राण त्याग दिये।

चंदन : माई गौड! व्हाट ए ट्रैजेडी!

(पट परिवर्तन)

द्वितीय दृश्य

[**स्थान**—महोबा हाउस। **समय**—संध्या 5 बजे।]

(ममी, सूशन और जौली बातचीत कर रहे हैं)

सूशन : ममी, ब्रदर जेफ्री का दूसरा लेटर आ गया। वी मस्ट टेक ए डिसीजन ऐंड प्लैन अवर डिपारचर।

ममी : बात इतनी आसान नहीं है। सब कुछ सोचना होगा।

सूशन : इसमें सोचना क्या है। वी मस्ट गेट आउट ऑफ दिस हेल, ऐज़ अर्ली एज़ पासिबुल।

ममी : सूशन, ग्रैंड-पा ने बहुत शौक से इस फार्म को डेवलप किया था। महोबा हाउस की एक-एक ईंट उनकी जोड़ी हुई है। हम इसे यूँ ही नहीं छोड़ सकते।

सूशन : इसे आसानी से डिसपोज़ किया जा सकता है। एरिक ने एक पार्टी से बात की है। सकलडीहा के बाबू साहब सब कुछ खरीदने को तैयार हैं।

जौली : सूशन, महोबा हाउस के कंपाउंड में ग्रैंड-पा की कब्र है। ग्रैंड-माँ की समाधि है। क्या हम इन्हें भी डिसपोज़ करेंगे?

सूशन ग्रैंड-पा! ग्रैंड-माँ—मैं इन दो शब्दों को सुनते-सुनते थक गयी हूँ। लेट

अस नाऊ फारगेट व्हाट ग्रैंड-पा सेड ऑर ग्रैंड-माँ डिड। हमें भी अपनी जिन्दगी का खयाल करना चाहिए।

जौली : सूशन, ग्रैंड-पा ने इस फैमिली को बुनियाद से खड़ा किया है। ग्रैंड-माँ ने इसमें नया रंग भरा। क्या हम अपने गौरवपूर्ण अतीत को खत्म कर सकते हैं? क्या यह ठीक होगा?

सूशन : मैं तुमसे डिफर करती हूँ। ग्रैंड-पा ने जो कुछ किया वह ग्लोरियस नहीं था। ग्रैंड-पा वाज़ ए ग्रेट सोल्जर। लेकिन एक इंडियन गर्ल से शादी कर उन्होंने गलती की।

ममी : सूशन, तुम अपनी सीमा से बाहर जा रही हो।

सूशन : ममी, मैं फ्रैंक बोलती हूँ। इस समय इमोशनल बातों में फँसने से वापस लौटना पॉसिबुल नहीं होगा।

जौली : सूशन, तुम कहाँ लौटना चाहती हो?

सूशन : मैं अपनी दुनिया में वापस लौटना चाहती हूँ। आई हेट दिस हेल!

जौली : सूशन, दिस कंट्री इज़ नॉट ए हेल। एरिक के पास एक अच्छा-सा जौब है। तुम एक स्कूल चला रही हो। हमारा फार्म है, डेयरी है, पोल्ट्री है—हमें और क्या चाहिए?

सूशन : नो, दिस इज़ नॉट माई कंट्री! डैडी की चिट्ट्री आई है। पूरा इंग्लैंड गोल्डेन स्प्रिंग के स्वागत के लिए तैयार हो गया है। चेरी के पेड़ों पर फूल आ गये हैं। डैडी ने फैमिली लान की फ्रेश कटिंग की है।

जौली : वापस लौटो सूशन, तुम इंग्लैंड में नहीं, भारत में हो।

सूशन : मैं केवल शरीर से यहाँ हूँ। मेरी सोल आज भी टेम्स के किनारे भटक रही है।

जौली : सूशन, तुम हम लोगों से ज्यादा इमोशनल हो।

ममी : दूसरी बात यह है कि माइग्रेट करने का प्रस्ताव भी आस्ट्रेलिया के लिए है। हम इंग्लैंड नहीं जा रहे हैं।

सूशन : आस्ट्रेलिया के सिटीज़ेन्स के लिए इंग्लैंड जाना आसान है।

ममी : तो तुम भी टूली की राह पर चलना चाहती हो। बेचारा जेफ्री आस्ट्रेलिया में झख मार रहा है। उधर जौली छः महीने से इंग्लैंड में बैठी है।

सूशन : नहीं टूली की राह पर चलना जरूरी नहीं है। मैं इस देश को छोड़ना चाहती हूँ। मेरे लिए आस्ट्रेलिया काफी है।

ममी : लेकिन सूशन, आस्ट्रेलिया हमारे लिए एक अपरिचित देश है। हम

लोग आस्ट्रेलिया के बारे में क्या जानते हैं?

सूशन : आस्ट्रेलिया ब्रिटिश फैमिली का देश है। आस्ट्रेलिया का 'वर्स्ट' भी इंडिया के 'बेस्ट' से अच्छा है।

जौली : सूशन, तुमने आस्ट्रेलिया नहीं देखा है। तुमने भारत को भी देखने की कोशिश नहीं की। सच बात यह है कि तुम एक जातीय घृणा की भावना से ग्रस्त हो।

सूशन : इसके लिए वाजिब कारण हैं। हमने जिन पर हुकूमत की आज वही इस देश के मालिक हैं। वे स्वतंत्र हो गये हैं। हम उनके गुलाम हो गये हैं।

जौली : नहीं सूशन, यह गलत है। हम उतने ही स्वतंत्र हैं जितना वे हैं।

सूशन : नो, दिस इज़ नाट ए फैक्ट।

जौली : सूशन, तुमने इस देश को समझने का प्रयत्न नहीं किया। इंग्लैंड ही नहीं, इस देश में भी वसंत आता है। तुमने एक आम के पेड़ को फूलते हुए देखा है। उसकी खुशबू पूरे गाँव में फैल जाती है। लोग सारी रात होली या चैता गाते हैं।

सूशन : आई नो, तुम इस देश की नयी प्रशंसक बनी हो। लेकिन एक इंडियन ब्वाय-फ्रेंड होने से यह देश हेवेन नहीं हो जाता।

जौली : सूशन, तुम चंदन को नहीं जानतीं। ही इज़ ए ब्रिलियेंट ब्वाय। उसका संबंध रवीन्द्रनाथ टेगोर के परिवार से है। रवीन्द्रनाथ को लिटरेचर का नोबल प्राइज़ मिला था।

सूशन : आई हैव सीन द बेंगाली ब्वाय। मैं इतना कह सकती हूँ कि ही इज़ एनेदर इंडियन।

जौली : सूशन, यह मेरा प्राब्लम है। अगर जरूरत हुई तो मैं ममी की राय ले लूँगी।

सूशन : नो, इट इज़ नॉट जस्ट योर प्राब्लम। अगर तुमने कोई गलत डिसीज़न लिया तो वह परिवार पर दूसरा ब्लैक स्पॉट होगा।

जौली : सूशन, मैं एक बालिग औरत हूँ। और परिवार के बारे में भी मैं तुमसे अधिक जानती हूँ।

सूशन : आई डोंट बिलीव इट। तुम्हारे अंदर सेल्फ रेस्पेक्ट की कमी है। तुम एक निगर से लव करती हो। इससे बढ़ कर शेमफुल बात क्या हो सकती है।

जौली : आई से, स्टाप इट! सूशन तुम मेरी इंसल्ट कर रही हो।

ममी : तुम लोग किस डिसकशन में उलझ गयीं। सूशन, तुम्हें ऐसी भाषा

नहीं बोलनी चाहिए।

[एरिक का प्रवेश]

एरिक : क्या बात है? सब लोग बहुत टेंस दिखाई पड़ रहे हैं।

ममी : एरिक, जेफ्री की दूसरी चिट्ठी आई है। वह सबको आस्ट्रेलिया बुला रहा है। तुमको इसके बारे में क्या कहना है?

एरिक : ममी, मैं क्या कह रहा हूँ। तुम फैमिली की हेड हो। तुम जो कुछ तय करोगी, हम सब मान लेंगे।

ममी : लेकिन तुम्हारे एयर फोर्स के जॉब का क्या होगा?

एरिक : छोड़ने के लिए मुझे नोटिस देनी होगी। लेकिन ममी, अगले साल मेरा प्रोमोशन होने वाला है।

सूशन : इस देश में जॉब या प्रोमोशन की क्या कीमत है?

ममी : सूशन, सबको डिक्टेट करने की कोशिश मत करो।

सूशन : सारी ममी!

ममी : तो ठीक है। मैं अकेले आस्ट्रेलिया जाऊँगी। लौटने के बाद हम फाइनल डिसीजन लेंगे।

(पट परिवर्तन)

तृतीय दृश्य

[**स्थान**–महोबा हाउस। **समय**–कुछ दिन बाद।]

[चंदन और जौली का प्रवेश]

चंदन : गुड इवनिंग, ममी।

ममी : अरे चंदन, हैपी टू सी यू!

चंदन : वेकेरान में कलकत्ता जा रहा था। जौली ने कहा कि नो, तुम्हें गाजीपुर में जर्नी ब्रेक करना होगा।

ममी : जौली ने ठीक किया। यहाँ गाँव में गेस्ट बहुत कम आते हैं। यहाँ हम गेस्ट्स का बेहद इंतजार करते हैं।

जौली : ममी, सूशन दिखाई नहीं पड़ती। एरिक के साथ टूर में गयी है?

ममी : तुम्हें नहीं मालूम! सूशन इंग्लैंड गयी है। एरिक उसे पहुँचाने गया है।

चंदन : सूशन इंग्लैंड गयी! पहले तो ऐसा कोई प्लान नहीं था।

ममी : सूशन वाज़ इन ए फैमिली वे डेलिवरी के लिए गयी है।

जौली : डेलिवरी के लिए इंग्लैंड जाने की बात तो नहीं थी। मैंने उसके कहने पर दिल्ली के बेस्ट हास्पिटल में सीट बुक की थी।

ममी : सूशन अजीब पागल है। हर समय इंग्लैंड, मेरा इंग्लैंड रटती रहती है। कहने लगी कि वहाँ डेलिवरी होने से मेरे बच्चे को इंग्लैंड की सिटीजनशिप मिल जाएगी।

जौली : माई गौड, सूशन सचमुच पागल है। बाई द वे, एरिक कितने दिनों की छुट्टी लेकर गया है?

ममी : एक महीना पूरा हो गया। उसने एक महीने के एक्सटेंशन के लिए लिखा है।

जौली : ममी, सूशन भी टूली की राह पर चल रही है। वह महोबा हाउस में रहेगी, उम्मीद कम है।

ममी : मैं खुद परेशान हूँ। पर इसके बारे में क्या किया जा सकता है।

जौली : ममी, तुम अपने दोनों लड़कों के लिए प्योर ब्रिटिश लड़कियाँ ले आयीं। तुम्हारा क्या अनुभव रहा?

ममी : दूसरा कोई चारा न था। अपनी कम्यूनिटी ही बहुत छोटी है। फिर अच्छे परिवार की लड़कियाँ ब्रिटिश हसबेंड्स चाहती हैं। मैंने तो ब्रिटिश पेपर्स में एडवर्टिजमेंट दिया था।

जौली : ममी, फैक्ट यह है कि हम अंग्रेजों से भी ज्यादा अंगेज बनना चाहते हैं। तुम्हें सुनकर ताज्जुब होगा कि यूरोप और अमेरिका की लड़कियाँ खुशी से कलर्ड हसबैंड्स चूज़ कर रही हैं।

ममी : मालूम नहीं। मुझे यूरोप गये कई साल हो गये। सुना है कि चीज़ें तेजी से बदल रही हैं।

जौली : ममी, आज हम दोनों एक रिक्वेस्ट लेकर आये हैं।

ममी : स्पीक ऑन!

चंदन : ममी, मैं और जौली एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।

ममी : आई नो!

चंदन : ममी, हम आपका आशीर्वाद लेने आये हैं।

ममी : आई नो!

चंदन : ममी, मेरी माँ जौली से मिल चुकी है। वह आपके जवाब की प्रतीक्षा

कर रही हैं।

ममी : हाऊ इज़ योर मदर?

चंदन : ठीक हैं। आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं।

ममी : तुम्हारी माँ ने तुम्हें एक कविता सिखाई थी। इस देश की तुलना एक समुद्र से की गयी है।

चंदन : यह टैगोर की कविता है—महामानव सागर-तट।

ममी : आई लाइक इट वेरी मच। कैन यू रिसाइट इट!

चंदन : क्यों नहीं, मुझे पूरी कविता याद है—

हे मेरे चित्त,
इस भारत के महामानव के
सागर तट पर धीर जगो।

(फोन की घंटी)

मर्मी : देखो जौली, कौन है?

[दूसरे कमरे से टेलीफोन पर बातचीत की अस्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ती है]

चंदन : ममी, कविता पढ़ूँ।

ममी : वेट, जौली को आ जाने दो।

[टेलीफोन पर अस्पष्ट बातचीत की ध्वनि]

[जौली का प्रवेश]

जौली : ममी, एरिक का फोन था। बहुत-सी खबरें हैं।

ममी : सूशन तो ठीक है न?

जौली : बिलकुल ठीक है। ममी बधाई। यू हैव बीन ब्लेसेड विथ ए ग्रैंड-सन।

ममी : थैंक गौड! मैं बहुत वरीड थी। सूशन बहुत नखरे वाली लड़की है। शी मस्ट हैव क्रीयेटेड मेनी प्राब्लमस् ओवर देयर।

जौली : नो प्राब्लम नाऊ! सूशन और बेबी दोनों स्वस्थ हैं।

ममी : कुछ और खबर है?

जौली : बहुत इंटरेस्टिंग खबर है। सूशन अपनी भाभी से बहुत नाराज़ है।

ममी : कोई न कोई वजह होगी।

जौली : सूशन पंद्रह दिन हॉस्पिटल रही। स्टेला ने रोज़ फूल भेजे पर एक दिन भी देखने नहीं गयी।

ममी : यह तो स्टेला की गलती थी।

जौली : ममी, सूशन बहुत जल्दी इंडिया लौट रही है। उसका ख्याल है कि स्टेला ने उसकी इंग्लैंड यात्रा को पसंद नहीं किया?

ममी : सूशन के फादर मिस्टर कौलिंस कैसे हैं?

जौली : एरिक ने तो कुछ नहीं कहा। सूशन भी फोन पर आई थी। उसने भी कुछ नहीं कहा।

ममी : मुहावरा है कि नो न्यूज़ इज़ गुड न्यूज़!

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

जौली : ममी, यह तुम्हारा फोन है। मैंने एरिक से कह दिया था कि ममी बाथरूम में हैं।

ममी : ओ. के!

[ममी का दूसरे कमरे में प्रस्थान]

[टेलीफोन पर अस्पष्ट सी बातचीत]

चंदन : ममी ने हमारे प्रस्ताव पर कुछ नहीं कहा।

जौली : उन्होंने रिजेक्ट भी नहीं किया।

[ममी के जोर-जोर से हँसने की आवाज़]

जौली : लगता है कि एरिक ने कोई हँसी की बात कही है।

[हँसते हुए ममी का प्रवेश]

जौली : क्या हुआ ममी, तुम्हारी हँसी तो रुकती ही नहीं है।

ममी : माई गौड! सूशन के लिए प्राब्लम ही प्राब्लम!

जौली : क्या हुआ, कुछ कहोगी।

ममी : सूशन के फादर मिस्टर कौलिंस!

जौली : क्या हुआ मिस्टर कौलिंस को?

ममी : हुआ कुछ नहीं। सूशन के खाँटी अंग्रेज फादर मि. कौलिंस ने हरे राम हरे किशन मूवमेंट ज्वायन कर लिया।

जौली : माई गौड!

ममी : इतना ही नहीं, उन्होंने एक भारतीय नाम रख लिया—स्वामी कुलानन्द।

जौली : ममी, सूशन तो बर्बाद हो गयी। अब उसके ब्रिटिश ईगो का क्या होगा?

ममी : इसीलिए इंडिया लौट रही है। एरिक ने कहा है कि इस बात की चर्चा सूशन से न की जाए।

(पट परिवर्तन)

चतुर्थ दृश्य

[**स्थान**–सिडनी का एक रेस्तरां। **समय**–संध्या सात बजे।]

(रेस्तरां के फ्लोर पर एक डांस धुन बज रही है)

जेफ्री : ममी, वुड यू लाइक टू डांस!

ममी : ओ जेफ्री, पैरों पर अर्थराइटिस का असर हो गया है। डांस नहीं कर पाऊँगी।

जेफ्री : अर्थराइटिस! बहुत तकलीफ है क्या?

ममी : कोई खास बात नहीं है। इट इज़ रेस्पौंडिंग टू ट्रीटमेंट।

जेफ्री : ममी, आस्ट्रेलिया माइग्रेट करने के बारे में क्या हुआ? क्या तुम सब कुछ तय कर आयी हो?

ममी : अगर सब कुछ वहीं तय कर सकती तो आस्ट्रेलिया आने की क्या जरूरत थी।

जेफ्री : ममी, आस्ट्रेलिया बहुत सुन्दर देश है।

ममी : हाँ, भूगोल की किताब में पढ़ा था। पर एक मन का भूगोल होता है। आत्मा का भूगोल होता है।

जेफ्री : आत्मा का भूगोल। ममी, तुम बहुत ऐब्सट्रैक्ट (abstract) बातें करने लगी हो।

ममी : इसमें ऐब्सट्रैक्ट कुछ नहीं है। कर्नल आर्थर निकल और प्रिंसेस रत्ना कुंवर ने एक घर बनाया–महोबा हाउस। पर महोबा हाउस सिर्फ एक घर का नाम नहीं है। महोबा हाउस एक संस्कृति–एक कल्चर का नाम है। इट रिप्रेजेन्ट्स द बेस्ट इन इंडियन ऐंड ब्रिटिश कल्चर।

जेफ्री : ममी, इतिहास बदलने पर तकदीरें भी बदलती हैं। भारतीय स्वतंत्रता का अर्थ हमारे लिए अलग है।

ममी : भारतीय स्वतंत्रता ने हमें एक कलंक से मुक्त किया है। हम एक स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर खड़े हुए हैं। भारतीय इतिहास की धारा पिछले दो सौ वर्षों में कुछ सोने के कण छोड़ गयी है। समाज की बालू पर पड़े ये सोने के कण हैं, हमारा ऐंग्लो-इंडियन समुदाय।

जेफ्री : ममी, डर है कि ये थोड़े से सोने के कण विशाल बालुका राशि में खो न जाएँ।

ममी : ऐसी कोई संभावना नहीं है। दो हज़ार साल हुए केरल के समुद्री तट

पर उतरे थे सिथियन क्रिश्चियन। वे आज भी स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं। पारसी समुदाय को देखो, भारतीय समाज ने उन्हें सिर्फ शरण ही नहीं, सम्मान का स्थान दिया है।

जेफ्री : ममी, भारत से अंग्रेजों के जाने के बाद हमारे समुदाय में असुरक्षा की भावना आ गयी है।

ममी : इसकी कोई जेनुइन वजह नहीं है। सच कहा जाय तो अब हमारी सही पहचान बन रही है।

जेफ्री : ममी, भारत के विशाल समाज में हमें कौन पहचानेगा?

ममी : जेफ्री, अगर कोई मेरिट न हो तो कहीं पहचान नहीं बनेगी। जो मीडीयॉकर है वह न भारत में चलेगा, न आस्ट्रेलिया में। वह इंग्लैंड में भी मीडियॉकर ही कहा जाएगा।

जेफ्री : ममी, आज बहुत से लोग अपनी रूट्स यानी जड़ों को खोज रहे हैं।

ममी : हमारी जड़ें कहाँ हैं। हमारी जड़ें इंडिया और वेस्ट, दोनों में फैली हुई हैं। तुम्हें याद है न, हमारे म्यूज़िक रूम में अगर बीथोवेन, मोज़ार्ट और बाख के कैसेट्स हैं तो हमने औंकार नाथ, अलाउद्दीन खान और रवि शंकर की शास्त्रीय रचनाएँ और हेमन्त मुखर्जी का रवीन्द्र संगीत भी इकट्ठा किया है। आज येहुदी मेनुहिन, जुबीन मेहता और रवि शंकर विश्व संगीत के लिए नयी भाषा खोज रहे हैं।

जेफ्री : ममी, ये सब बड़ी-बड़ी बातें हैं। हमें सबसे पहले अपनी सुख-सुविधाओं के बारे में सोचना चाहिए।

ममी : हमारा सुख क्या है? सूशन इंग्लैंड लौट कर गयी। क्या उसे सुख मिला? टूली भी इंग्लैंड गयी है। वह कितनी सुखी है, मैं नहीं जानती।

जेफ्री : ममी, टूली अब कभी नहीं आएगी। उसने डाइवोर्स पेपर्स भेजे हैं।

ममी : माई गौड! जेफ्री, आई एम सॉरी फार यू। हाऊ लोनली यू आर!

जेफ्री : ममी, मैं सोचता था कि तुम सभी लोग आ जाओगी। फिर सब ठीक हो जायेगा।

ममी : जेफ्री, महोबा हाउस छोड़ना बहुत मुश्किल है। उसे छोड़ने पर भी वह हमसे अलग नहीं होगा। वह हमें तीन पीढ़ियों तक हौंट (haunt) करेगा।

जेफ्री : ममी, महोबा हाउस मुझे भी हौंट करता है। कुछ वर्ष पहले मैंने अपने बगीचे में लंगड़े आम की सौ कलमें लगायी थीं।

ममी : जेफ्री, तुम्हारे आम के पेड़ों में पिछले साल फूल आये थे। इस साल

उन पर लाखों फल लगे हैं।

जेफ्री : माई गौड! ममी, जब पेड़ के फल टूटें तो मुझे याद करना।

ममी : ऐसा क्यों कहते हो। मैं तुम्हें आमों का पूरा क्रेट भेजूँगी।

जेफ्री : ममी, तुम इंडियन स्वीट्स कितना अच्छा बनाती थीं। मैं यहाँ तुम्हारे बनाये गुलाबजामुन बहुत मिस करता हूँ।

ममी : जेफ्री, मैं तुम्हारे लिए गुलाबजामुन का टिन भेजूँगी।

जेफ्री : ममी, एक बात और। कुछ इंडियन म्यूजिक के कैसेट्स भी भेजना। मैं सोते समय बिसमिल्ला और रविशंकर को सुनता था।

ममी : जेफ्री, देखती हूँ कि तुम्हें यहाँ भी एक महोबा हाउस बनाना होगा। पर यह क्या संभव है।

(पट परिवर्तन)

पाँचवाँ दृश्य

[**स्थान**–दिल्ली विश्वविद्यालय का होस्टल। **समय**–कुछ दिनों के बाद।]

(टेपरेकार्डर पर रवीन्द्र संगीत बज रहा है।)

चंदन : जौली, बंद करो इन प्रेम गीतों को। ये हमारे बीच एक झूठा संसार खड़ा करते हैं।

जौली : चंदन, ये प्रेम गीत जीवन में रस पैदा करते हैं। इनकी कोई उम्र नहीं होती।

चंदन : अब तो ममी को आस्ट्रेलिया से आना चाहिए। पता नहीं, हम लोगों के बारे में क्या तय हुआ?

जौली : चंदन, विवाह के मामले आस्ट्रेलिया नहीं, स्वर्ग में तय होते हैं।

चंदन : पता नहीं स्वर्ग में निर्णय कब होगा। इधर हम नरक में उलटे झूल रहे हैं।

[हाँफते हुए ममी का प्रवेश]

जौली : माई गौड! यह तो ममी है। वेलकम ममी!

ममी : गुड इवनिंग ब्वायज़!

दोनों : गुड इवनिंग ममी।

ममी : प्लेन में, दिल्ली के लिए सीट खाली थी। मैंने ले लिया।

जौली : हाऊ इज़ आस्ट्रेलिया?

ममी : वेरी फाइन! बेरी ब्यूटीफुल!

जौली : मैं आस्ट्रेलिया के बारे में नहीं पूछ रही हूँ। जेफ्री कैसा है? टूली का क्या हाल है?

ममी : जेफ्री अच्छा है। हम लोगों के लिए बेचैनी से इंतजार कर रहा है।

जौली : ममी, टूली लौट कर आ गयी।

ममी : वह अब नहीं आयेगी। उसने डाइवोर्स का नोटिस भेजा है।

जौली : माई गौड! जेफ्री को बड़ा शॉक लगा होगा।

ममी : जेफ्री ने डाइवोर्स मंजूर कर लिया है। वह अब एक दूसरी लड़की से शादी करना चाहता है।

जौली : कौन है वह लड़की? तुम उससे मिली थीं?

ममी : हाँ, मैं मिली थी। फ़िजी की लड़की है। इंडियन टैमिल है।

जौली : तुमने क्या कहा?

ममी : जेफ्री खुश हो मैं भी खुश। मैंने उसे ब्लेस किया।

जौली : ममी, यू आर वेरी ग्रेट। वी आर प्राउड ऑफ यू।

चंदन : ममी, आस्ट्रेलिया जाने के बारे में क्या हुआ?

ममी : तय नहीं हुआ है। अभी तय करना है।

जौली : ममी, आस्ट्रेलिया का प्रोजेक्ट ठीक नहीं है। छोटे-छोटे पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाया जाता है। पर बड़े पेड़ ट्रांसप्लांट करने पर सूख जाएँगे।

ममी : मैंने भी जेफ्री से यही कहा। मैंने उससे कहा कि हम महोबा हाउस छोड़ना भी चाहें तो महोबा हाउस हमें नहीं छोड़ेगा। वह हमें तीन पीढ़ी तक हौंट करेगा।

जौली : ममी, प्रिंसेस रत्ना कुंवर जीवन-भर इंग्लैंड नहीं गयीं। वे आज भी यही करतीं।

चंदन : ममी, हमारे बारे में भी कुछ तय कर दो।

ममी : मुझे क्या करना है। शादी का फैसला तो जौली को करना है।

जौली : नहीं ममी, यह नहीं होगा। मैं तुम्हारे कंसेंट के बिना कुछ नहीं कर सकूँगी।

चंदन : ममी, सिर्फ एप्रूव करना काफ़ी नहीं है। तुम्हारे आशीर्वाद के बिना हम कुछ नहीं कर पाएँगे।

ममी : ठीक है, मैं तुम दोनों को ब्लेस करती हूँ। बट चंदन, जौली इज़ ए

वेरी सेंसिटिव गर्ल। तुम्हें इस पर विशेष ध्यान देना होगा।

जौली : ममी, तुम चंदन को शायद पूरी तरह नहीं जानती। चंदन इज़ ए ग्रेट सोल। वह बंगाल विशेषकर टैगोर की संस्कृति में पूरी तरह सराबोर है।

चंदन : ममी, बंगाल या टैगोर की कोई अलग संस्कृति नहीं है। वह वही संस्कृति है जो गंगा की तरह हज़ारों साल से प्रवाहित है। महोबा हाउस में भी उसी संस्कृति की धारा बह रही है।

ममी : शायद तुम ठीक हो। बट आई लव टैगोर वेरी मच। क्या तुम उनकी वह कविता रिसाइट करोगे जिसे मैं बहुत पसंद करती हूँ।

चंदन : ठीक है, ममी। मैं सुनाता हूँ।

(कविता पढ़ता है)

हे मेरे चित्त, पुण्य तीर्थ में,
इस भारत के महामानव के
सागर तट पर
धीरे जगो।
कोई नहीं जानता, किसके आह्वान पर कितने लोगों की दुर्वार धारा,
कहाँ से आई।
और इस सागर में खो गयी।
आर्य-अनार्य, द्रविड़, चीनी, शक, हूण, पठान
सब यहाँ एक देह में लीन हो गये।

हे आर्य, हे अनार्य आओ।
आओ हिन्दू-मुसलमान,

आज आओ तुम अंग्रेज ख्रीस्टान, मन को पवित्र कर आओ।
ब्राह्मण सबके हाथ पकड़ो।
हे पतित आओ।
अपमान का सब भार उतारो।
माँ के अभिषेक के लिए शीघ्र आओ।
सबके स्पर्श से पवित्र हुए तीर्थ जल से।
मंगल घट तो अभी भरा ही नहीं गया है।
इस भारत के महामानव के सागर तट पर।

(पटाक्षेप) □□